तकब्बुर और खुद पसंदी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

तकब्बुर
और
खुद पसन्दी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

9897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब- तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी

मुअल्लिफ़- डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

इशाअ़त- अगस्त-**2026** (**1448**) हिजरी

कम्पोज़िंग- अमन & ज़ैनुल आ़बदीन
9897626182
9045442223

ISBN-NO- 978-93-5914-275-3

क़ीमत-**150** रुपये

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
01	हम्द....................................	08
02	तम्हीद..................................	10
03	तकब्बुर करने वाला दोज़ख़ी.............	13
04	तकब्बुर करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब की वई़द.....................................	21
05	किब्रयाई अल्लाह तआ़ला की चादर है...	23
06	तकब्बुर के बाइस इज़ार टख़नों से नीचे लटकाना..................................	24
07	मुताकब्बिर जन्नत में नहीं जायेगा........	27
08	अल्लाह तआ़ला ने तकब्बुर व सरकशी करने वालों को तबाह कर दिया.........	31
09	मुताकब्बिरीन को दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप पिलाया जायेगा.....................	36
10	फ़ख़्र व तकब्बुर के बाइस ज़मीन में धंसा दिया गया...........................	37
11	शोहरत वाला लिबास........................	39
12	तकब्बुर से कुफ़्र पैदा होता है............	39
13	तकब्बुर की ताअ़रीफ़.......................	43
14	तकब्बुर करने वालों को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करता.........................	44
15	अल्लाह तआ़ला हर मुताकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है...................	49

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
16	इन्सान की तख़लीक़ कमज़ोर चीज़ मिट्टी और हक़ीर पानी से हुई................	59
17	तमाम ताअ़रीफ़ें और सारी किब्रयाई सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये सज़ावार हैं.....	71
18	आख़िरत पर ईमान न रखने वाले मुताकब्बिर....................................	77
19	कुरान में ग़ौरो फ़िक्र व उससे नसीहत हासिल करने वाले तकब्बुर नहीं करते....	81
20	कज़्ज़ाब व सियाह कार मुताकब्बिर के लिये सख़्त अ़ज़ाब की बिशारत...........	86
21	मुताकब्बिर आग के सन्दूक में...........	86
22	तकब्बुर न करने का ताकीदी हुक्म.......	87
23	किसी का मज़ाक उड़ाना या उसे हक़ीर जानना गुनाह है........................	89
24	अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इ़ज़्ज़त वाले वो हैं जो परहेज़गार हैं.................	90
25	इस्लाम के अ़लावा जो इ़ज़्ज़त तलाश करे उसे ज़िल्लत मिलेगी......................	91
26	बुरा है वो बन्दा जो तकब्बुर करे........	91
27	अल्लाह तआ़ला ही हक़ीक़ी बादशाह है...	92
28	तकब्बुर करने वाला कुत्ते और खिंजीर से ज़्यादा ज़लील है........................	93
29	तकब्बुर करने वालों का अन्जाम.........	94
30	अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वालों से नफ़रत करता है........................	94

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
31	तकब्बुर रसूलुल्लाह से दूरी का बाइस....	95
32	अल्लाह तआ़ला सर उठाने वालों को नीचा दिखाता है..............................	95
33	इज़हारे नेअ़मत में तकब्बुर न हो........	96
34	आअ़माल पर तकब्बुर न करो कोई भी आअ़माल के सबब जन्नत में न जायेगा..	97
35	तकब्बुर ख़्यानत और क़र्ज़ से बरी होकर मरने वाला जन्नती है...................	99
36	ये चन्द बातें जिसमें हो वो तकब्बुर से बरी है................................	99
37	सद्क़ा तकब्बुर से दूरी का बाइस........	100
38	सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी....................................	100
39	मुसलमानों में बाअ़ज़ की बद आअ़माल करने की पेशीन गोई.......................	101
40	ताअ़मीरात वबाल है.........................	102
41	फ़ख़्र के तौर पर मस्जिदों को आरास्ता करने की मुमानियत.......................	102
42	मस्जिदों में कोई मोमिन न होगा..........	105
43	तकब्बुर हर इन्सान के लिये बुरा और नुक़सान देह है............................	106
44	खुद पसन्दी की मज़म्मत.....................	107
45	खुद को नेक सालेह कहने की मुमानियत.	109
46	उ़ज्ब (खुद पसन्दी) अल्लाह तआ़ला को ना पसन्द है...............................	114

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
47	खुद पसन्दी बन्दे के आअ़माल को बर्बाद कर देती है......................	117
48	खुद पसन्दी बाइसे हलाकत है............	117
49	गुनाह खुद पसन्दी से बेहतर है..........	118
50	खुद पसन्दी मज़मूम और गुनाह है.......	119
51	तवाज़ोअ़, अ़जिज़ी व इन्किसारी अल्लाह तआ़ला को पसन्द है...................	120
52	तवाज़ोअ़ इन्सान को बुलन्द और तकब्बुर पस्त करता है..........................	123
53	तवाज़ोअ़ करने वालों का रोज़े क़यामत मक़ामो मर्तबा.........................	127
54	तवाज़ोअ़ का ताकीदी हुक्म...............	129
55	मेहमानों के साथ तवाज़ोअ़..............	130
56	मुसलमान का झूटा पीने की फ़ज़ीलत....	131
57	रसूलुल्लाह का तवाज़ोअ़.................	132
58	तकब्बुर व खुद पसन्दी का इलाज.......	139

-: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़्मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजूबिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़्मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है कि जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ो तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्द व सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना और वो लाज़वाल है वो हर ऐब से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है शक्लो सूरत में हर शैः से बईद तर है उसके बन्दों का कोई लम्हा उससे मख़्फ़ी नहीं इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं, बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे-

परेशान व हैरान नहीं कर सकता मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता और जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है और वो कायनात की हर शैः का अ़ालिम है और वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक ऊ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे और अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को औसाफ़ो अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

अल्लाह तअ़ाला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अह्ले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अह्ले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़तो मुसीबत के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुताह्रात और आपकी आल व असहाब और जुमला औलिया किराम व सूफ़िया इ़ज़ाम और उन पर जो अल्लाह के मुक़र्रब मख़सूस बन्दे हैं।

–: तम्हीद :–

तकब्बुर एक ख़तरनाक बातिनी बीमारी और उम्मुल अमराज़ और गुनाहे अ़ज़ीम है और ये बातिनी गुनाहों और बुराइयों की जड़ है तकब्बुर हक़ की मुख़ालिफ़त और लोगों को हक़ीर जानने का नाम है कि खुद को दूसरों से बेहतर और मुअ़ज़्ज़ज़ समझना व दूसरों को हक़ीर जानकर उन पर बढ़ाई चाहना तकब्बुर कहलाता है हक़ का इन्कार करने वाला और लोगों को हक़ीर समझने वाला मुताकब्बिर है हालांकि तकब्बुर से किसी को कुछ भी हासिल नहीं होता न माल न इ़ज़्ज़त बल्कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की नाराज़गी और नामा–ए–आअ़माल में गुनाहों का इज़ाफ़ा ज़रुर हासिल होता है जिसके नतीजे में क़यामत के दिन ज़िल्लत व रुसवाई और अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरुमी व दोज़ख़ का सख़्त तरीन अ़ज़ाब उसे दिया जायेगा हर मुताकब्बिर शख़्स दुनिया में भी ज़लील होता है और आख़िरत में भी ज़लील होगा और मुताकब्बिर शख़्स लोगों की नज़रों से भी गिर जाता है और लोग उससे इन्तिहाई नफ़रत करते हैं

तकब्बुर की वजह से इन्सान में मुख़्तलिफ़ बातिनी व ज़ाहिरी बुराइयाँ पैदा होती हैं और वो बेशुमार गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है हत्ता कि कुफ़्र भी तकब्बुर से पैदा होता है और वो दायमी दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है जैसा कि हम देखते हैं कि आज हालात ये हैं कि दीनदार व दुनियादार दोंनों क़िस्म के अक्सर लोग तकब्बुर और खुद पसन्दी में मुब्तिला हैं दीनदार लोग जो नमाज़ पढ़ते हैं वो समझते हैं कि वो

दुनिया दारों से बेहतर हैं रोज़ेदार खुद को ग़ैर रोज़ेदार अच्छा और बेहतर समझता है और नेक अ़मल करने वालों और ज़कात सद्क़ात देने वालों का भी यही हाल है और हाजी लोग समझते हैं कि हमने हज कर लिया तो हमने जन्नत की रजिस्ट्री अपने नाम कर ली और मालदार और दुनियावी उ़हदा व मन्सब पर फ़ाइज़ ये समझता है मैं लोगों से बहुत अच्छा हूँ इस तरह लोग फ़ख़्र व तकब्बुर करते और खुद पसन्दी में गिरफ़्तार रहते हैं और खुद को मुअ़ज़्ज़ज़ और दूसरों को हक़ीर समझते हैं और इस तरह वो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसकी नाराज़गी और कसीर गुनाहों और बुराइयों के मुरतकिब हो जाते हैं

इमामुल अम्बिया महबूबे किबरिया रहमते दो आ़लम सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शानो अ़ज़मत और मक़ामो मर्तबा और आपके ख़साइस व ख़साइल सबसे अफ़ज़ल व आअ़ला और बुलन्द व बाला हैं और आपकी तवाज़ोअ़ का ये हाल कि आप घर के काम खुद किया करते व अपना सामान खुद उठाया करते थे और लोगों से मुहब्बत व शफ़क़त के साथ मिलते थे कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते थे और अपने सहाबा के दरमियान जब तशरीफ़ फ़रमां होते तो उनके बराबर में बैठा करते थे सहाबा किराम की मजलिस में जब आप बैठते तो आने वाले अजनबी शख़्स को ये पूछना पड़ता था कि तुममें से मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) कौन हैं और जब आप अपने सहाबा के साथ चलते तो कभी आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करते बल्कि उन्हीं में मिले जुले चलते थे और कोई बड़ा हो या छोटा आप हमेशा सलाम करने में पहल करते थे।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं तमाम औलादे आदम का सरदार होऊँगा और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और हम्द का झण्डा मेरे हाथ में होगा और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और सब अम्बिया किराम उस दिन मेरे ही झण्डे के नीचे होंगे और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और मैं वो शख़्स होऊँगा कि जिस के लिये सबसे पहले ज़मीन शक़ होगी और मुझे इस पर कोई फ़ख़्र नहीं फिर आपने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोग तीन बार ख़ौफ ज़दा होंगे फिर वो दीगर अम्बिया किराम के पास जाकर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे फिर बिल आख़िर लोग मेरे पास आयेंगे और मैं उनके साथ उनकी शफ़ाअ़त के लिये चलूँगा फिर मैं जन्नत के दर'वाज़े की ज़ंजीर खट खटाऊँगा फिर पूछा जायेगा कौन तो जवाब दिया जायेगा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) चुनाँचा वो मुझे खुश आमदीद कहते हुये मेरे लिये दर'वाज़ा खोलेंगे फिर मैं बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ हो जाऊँगा रब तआ़ला मुझ पर अपनी हम्दो सना का कुछ हिस्सा इत्तलाअ़ फ़रमायेगा फिर मुझसे कहा जायेगा सर उठायें माँगे अ़ता किया जायेगा शफ़ाअ़त कीजिये शफ़ाअ़त कुबूल की जायेगी और कहिये आपकी बात सुनी जायेगी फिर फ़रमाया यही वो मक़ामे महमूद है जिसके बारे में रब तआ़ला ने फ़रमाया कि ''यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा''। (सूरह–इसरा–17/79)

(तिर्मिज़ी–2/713-ह०–3148)(इब्ने माजा–3/406-ह०–4308)

(इब्ने हिब्बान–सहीह–14/398-ह०–4678)

(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–5/4-ह०–11000)

–: तकब्बुर करने वाला दोज़ख़ी :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये (सज़ा) उसका बदला है कि तुम ज़मीन में नाहक़ खुशियाँ मनाया करते थे और उसका बदला है कि तुम इतराया करते थे दोज़ख़ के दर'वाज़ों में दाख़िल हो जाओ तुम उसमें हमेशा रहने वाले हो सो तकब्बुर कर ने वालों का ठिकाना कितना बुरा है।
(सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/75,76)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और इस बेहतरीन (किताब कुरान) की पैर'वी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी जानिब उतारी गई है क़ब्ल इसके कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाये और तुम्हें ख़बर भी न हो ऐसा न हो कि कोई शख़्स कहने लगे कि हाय अफ़सोस उस कोताही पर जो मैंने अल्लाह तआ़ला के हक़े (इताअ़त) में की है और मैं यक़ीनन मज़ाक उड़ाने वालों में से था या कहने लगे अगर अल्लाह तआ़ला मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रुर परहेज़ गारों में से होता या अ़ज़ाब देखते वक़्त कहने लगे कि अगर एक बार मेरा दुनिया में लौटना हो जाये तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँगा (अल्लाह फ़रमायेगा) बेशक मेरी आयतें तेरे पास आयीं थीं सो तूने उन्हें झुटला दिया और तूने तकब्बुर किया और तू काफ़िरों में से हो गया और आप क़यामत के दिन उन लोगों को देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट बाँधा है कि उनके चेहरे सियाह होंगे क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है। (सूरह–ज़ुमर–39/55 ता 60)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं वो अ़नक़रीब दोज़ख़ में ज़लील होकर दाख़िल होंगे। (सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/60)

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुआ़ भी इ़बादत है फिर आपने ये आयत पढ़ी 'बेशक जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं वो अ़नक़रीब दोज़ख़ में ज़लील होकर दाख़िल होंगे'। (सूरह–मु'मिन–40/60) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/889–ह०-3372)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जिस दिन काफ़िर लोग आतिशे दोज़ख़ के सामने पेश किये जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) तुम अपनी लज़ीज़ और मरग़ूब चीज़ें अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके और उनसे (खूब) नफ़ाअ़ अन्दोज़ भी हो चुके पस आज के दिन तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जायेगी इस वजह से कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर किया करते थे और इस वजह से भी कि तुम ना फ़रमानी किया करते थे। (सूरह–अहक़ाफ़–46/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
पस तुम दोज़ख़ के दर'वाज़ों से दाख़िल हो जाओ तुम इसमें हमेशा रहने वाले हो सो तकब्बुर करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है। (सूरह–नह्ल–16/29)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग मेरी आयात को झुटलायेंगे और तकब्बुर

करके उनसे ऐअ़राज़ करेंगे तो वही दोज़ख़ वाले हैं वो उस (दोज़ख़) में हमेशा रहेंगे। (सूरह–आअ़राफ़–07/36)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और तकब्बुर करके उनसे मुँह मोड़ा उनके लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जायेंगे और वो जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे जब तक कि ऊँट सुई के सूराख़ में दाख़िल हो न जाये और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं (सूरह–आअ़राफ़–07/40)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
अगर आप (वो हौलनाक मन्ज़र) देखें जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में गिरफ़्तार होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाये हुये (कह रहे होंगे) तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो आज तुम्हें सज़ा में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जायेगा इस वजह से कि तुम अल्लाह पर नाहक़ बातें किया करते थे और इस वजह से कि तुम अल्लाह की आयात से तकब्बुर करते थे। (सूरह–अनअ़ाम–6/93)

जब वो लोग दोज़ख़ में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग उनसे कहेंगे जो (दुनिया में) बड़ाई ज़ाहिर करते थे कि हम तो तुम्हारे पैरोकार थे सो क्या तुम आतिशे दोज़ख़ का कुछ हिस्सा हमसे दूर कर सकते हो तकब्बुर करने वाले कहेंगे हम सब ही दोज़ख़ में पड़े हैं बेशक अल्लाह तअ़ाला ने बन्दों के दरमियान हतमी फ़ैसला फ़रमां दिया है। (सूरह–मु‘मिन/ग़ाफ़िर–40/47)

➡ हज़रत हारिसा बिन वह्ब रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत की ख़बर न दूँ अ़र्ज़ किया गया ज़रुर फ़रमाइये आपने फ़रमाया वो ज़ईफ़ नातवाँ जिसको लोग कमज़ोर जानें और क्या मैं तुम्हें वो लोग न बताऊँ जो दोज़ख़ी हैं अ़र्ज़ किया गया ज़रुर फ़रमांयें आपने फ़रमाया कि सख़्त मिज़ाज और सख़्त गो, बद ख़ू, सरकश, अकड़ कर चलने वाला व अपने आप को बड़ा समझने वाला मुताकब्बिर व माल जमाअ़ करने वाला बड़े पेट वाला।
(बुख़ारी–सहीह–4/842–ह०-4918)
(मुस्लिम–सहीह–5/353–ह०-7187)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351–ह०-4116)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/295–ह०-10484, 8170, 71, 72)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/247–ह०-7723)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में एक वादी है और उस वादी में एक कुआँ है कि जिसका नाम हब हब है अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि वो उसमें हर जाबिर मग़रुर को डालेगा पस तुम अल्लाह तआ़ला से डरते रहना और उस कुऐं के बासी न बनना।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/346–ह०-7946)

जब किसी शख़्स के दिल में तकब्बुर पैदा होता है तो वो खुद को दूसरों से बेहतर और मुअ़ज़्ज़ज़ और दूसरों को खुद के मुक़ाबिल कमतर व हक़ीर समझता है और ये ऐसी बुराई और गुनाह है जो दूसरे गुनाहों की तरफ़ इन्सान को माइल करता है और मुताकब्बिर शख़्स इस गुनाह के अ़लावा भी उससे दूसरे गुनाह भी सरज़द होते हैं मसलन झूट फ़रेब, हसद, बेईमानी, बद अख़लाक़ी और लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती वग़ैराह में–

मुब्तिला हो जाता है और वो मज़कूरा गुनाहों के सबब वो जन्नत से दूर और दोज़ख़ के क़रीब पहुँच जाता है और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा हक़ीर और गुनाहगार हम खुद को तसव्वुर करें कि हो सकता है कि हमसे कोई ऐसा गुनाह सरज़द हो जाये कि जिसके बाइस अल्लाह तआ़ला हमें सख़्त अ़ज़ाब दे और जहन्नम में डाल दे और फिर हमारे तमाम नेक आअ़माल अकारत हो जायें और हमारे किसी काम न आयें जिन पर हम फ़ख़्रो नाज़ करते हैं और कसीर नेक आअ़माल के बावुजूद हम दोज़ख़ का ईंधन बनें।

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला तमाम लोगों को जमाअ़ फ़रमायेगा तो जहन्नम की आग दौड़ते हुये आयेगी और उसके दरोग़ा उसे रोक रहे होंगे और वो कह रही होगी मेरे रब की क़सम तुम्हें मेरे और मेरे ख़ाविन्द के दरमियान से हटना पड़ेगा और मैं एक गर्दन की तरह लोगों पर छा जाऊँगी वो कहेंगे तेरे ख़ाविन्द कौन हैं वो कहेगी हर मुताकब्बिर और ज़ालिम इतने में वो अपनी ज़बान निकालेगी और लोगों के दरमियान में से उन्हें चुन लेगी और उन्हें अपने पेट में फेंक देगी फिर वो पीछे हटेगी और फिर वो दोबारा आयेगी और आग की लपटें एक दूसरे पर चढ़ रही होंगी और उसके दरोग़ा उसे रोक रहे होंगे और वो कह रही होगी कि मेरे रब की क़सम तुम्हें मेरे व मेरे ख़ाविन्द के दरमियान से हटना पड़ेगा–

तो वो कहेंगे तेरे ख़ाविन्द कौन हैं वो कहेगी हर बेवफ़ा और ना शुक्रा चुनांचा वो उन्हें लोगों के दरमियान से अपनी ज़बान से चुन लेगी और वो उन्हें अपने पेट में फेंक देगी फिर वो पीछे हटेगी और फिर वो दोबारा से आयेगी और आग की लपटें एक दूसरे पर चढ़ रही होंगी और उसके दरोग़ा उसे रोक रहे होंगे और वो कह रही होगी कि मेरे रब की क़सम तुम्हें मेरे व मेरे ख़ाविन्द के बीच में से हटना पड़ेगा और मैं एक गर्दन की तरह लोगों पर छा जाऊँगी वो कहेंगे तेरे ख़ाविन्द कौन हैं वो कहेगी कि हर मुताकब्बिर फ़ख़्र करने वाला चुनांचा वो उन्हें लोगों के दरमियान से अपनी ज़बान से चुन लेगी और उन्हें अपने पेट में फेंक देगी फिर वो पीछे हटेगी फिर अल्लाह तआला बन्दों के दरमियान फ़ैसला फ़रमायेगा। (कंजुल उ़म्माल–2/250–ह०-7782)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जन्नत व दोज़ख़ ने अपने अपने बारे में एक दूसरे को दलाइल दिये दोज़ख़ ने कहा मुझे तकब्बुर और जब्र व सरकशी करने वालों का ठिकाना होने की बिना पर तरजीह हासिल है फिर जन्नत ने कहा कि मेरी तो हालत ये है कि मेरे अन्दर लोगों में से कमज़ोर व कम रुतबे वाले और सीधे सादे दुनिया से बेज़ार लोग दाख़िल होंगे तो अल्लाह तआला ने जन्नत से फ़रमाया कि तू मेरी रहमत है और तेरे ज़रिये से मैं अपने बन्दों में से जिसे चाहूँगा उसे अपनी रहमत से नवाजूँगा और दोज़ख़ से कहा कि तू सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरा अ़ज़ाब है और तेरे ज़रिये से मैं अपने बन्दों में से जिसे चाहूँगा उसको अ़ज़ाब में डालूँगा और तुम दोनों में हर एक के लिये इतने बन्दे हैं कि जिनसे

तुम दोनों भर जाओ जहाँ तक आग का तअ़ाल्लुक़ है तो वो नहीं भरेगी यहाँ तक कि अल्लाह तअ़ाला अपना क़दम (उस पर) रख देगा तो वो कहेगी बस बस बस उस वक़्त वो भी भर जायेगी फिर उसके बाअ़ज़ हिस्से बाअ़ज़ के साथ सिमट जायेंगे तब वो भर जायेगी और अल्लाह तअ़ाला अपनी मख़लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (बुख़ारी–सहीह–4/787–ह०-4850)
(मुस्लिम–सहीह–5/348–ह०-7175)
(मिश्कात–3/361–ह०-5694)

➡ हज़रत हुबैब बिन मुग़फ़िल रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक आदमी को देखा कि वो अपना तहबन्द घसीटता हुआ चला जा रहा है तो आप ने उसे देखकर फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि जो शख़्स तकब्बुर से अपना तहबन्द ज़मीन पर घसीटेगा तो आख़िरत में भी दोज़ख़ में उसे घसीटेगा। (मुस्नद अहमद–7/452–ह०-18247)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे सामने जन्नत व दोज़ख़ में सबसे पहले दाख़िल होने वाले तीन तीन गिरोह पेश किये गये चुनांचा जन्नत में दाख़िल होने वाले तीन गिरोहों में शहीद और वो अ़ब्दे मम्लूक जो अपने रब की इ़बादत खूब करे और अपने आक़ा का ख़ैर ख़्वाह रहे और वो अ़फ़ीफ़ (बा इ़स्मत) आदमी जो अ़यालदार होने के बावुजूद जो अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स की हिफ़ाज़त करे और तीन गिरोह जो सबसे पहले दोज़ख़ में होंगे उनमें से वो हुक्मरान जो ज़बर दस्ती क़ौम पर

मुसल्लत हो जाये और वो मालदार आदमी जो अपने माल का हक़ अदा न करे और वो फ़क़ीर जो फ़ख़्र व तकब्बुर करता फिरे। (मुस्नद अहमद–4/609–ह०-9488)

तकब्बुर और खुद पसन्दी एक मज़मूम शदीद बातिनी बीमारी व गुनाह और सख़्त नापसंदीदा सिफ़त है इस बीमारी में मुब्तिला शख़्स हमेशा दुनिया व आख़िरत में ख़सारा उठाने वालों में से होता है अल्लाह तआ़ला हर मुताकब्बिर और खुद पसन्दी में मुब्तिला शख़्स को ना-पसन्द करता है मुताकब्बिर शख़्स लोगों में ज़लील और ख़्वार होता और वो लोगों की नज़रों से गिर जाता है और हर मुताकब्बिर शख़्स का ठिकाना दोज़ख़ है जिस में वो सख़्त आग के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया जायेगा और दीगर मुख़्तलिफ़ अक़साम व नौअ़य्यत के अ़ज़ाब उस पर मुसल्लत किये जायेंगे

हर इन्सान अपनी वुजूदी अस्ल हक़ीक़त को जानते हुये भी अन्जान बना रहता है कि नापाक और हक़ीर पानी और दो शर्मगाहों से उसके वुजूद की इब्तिदा हुई और नापाक खून से माँ के पेट में जिस्मी आज़ा वुजूद में आये और कमो वेश नौ महीने तक एक तंग जगह में पर'वरिश पाई फिर वो औ़रत की शर्मगाह से नापाक व गन्दे पानी के साथ दुनिया में आया और इन्सान के जिस्म में कोई ऐसा सूराख़ और रास्ता नहीं कि जिससे गन्दगी बाहर न निकलती हो और वो खुद अपने हाथों से दो नजासतों को रोज़ उठाता है याअ़नी पेशाब और पाखाना और जिसके पेट में ग़लाज़त व नजासत भरी पड़ी है और पेशाब और पाखाने का बोझ अपने पेट में उठाये फिरता है और जब वो फ़ौत हो जाता है तो वो मुर्दार और निहायत बदबूदार हो जाता है और उसका–

जिस्म कीड़े व मकोड़ों की ग़िज़ा बनता है हत्ता कि वो ख़ाक् हो जाता है व जिस मिट्टी से उसकी तख़लीक़ हुई थी उसी मिट्टी में मिल जाता है पस इस हक़ीक़त व अपने अन्जाम को जान लेने के बाअ़द अगर कोई तकब्बुर करे तो वो किस चीज़ पर तकब्बुर करता है जबकि उसकी हक़ीक़त और उसका अन्जाम उस पर वाज़ेह और आशकार हो चुका है और अगर फिर भी वो किसी भी चीज़ पर तकब्बुर करे तो वो सबसे बड़ा बेवकूफ़ और अव्वल दर्जे का जाहिल और कम अ़क़्ल है जो तकब्बुर करके खुद को हड्डियों को चूरा चूरा कर देने वाली दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में झोंकना चाहता है और खुद ही अपने हाथों से खुद को हलाक करने पर तुला हुआ है।

तकब्बुर करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब की वईद

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

फिर हमने उन पर तूफ़ान, टिड्डयाँ, घुन, मेंढक, और खून (कितनी ही) जुदागाना निशानियाँ (बतौरे अ़ज़ाब) भेजीं फिर भी उन्होंने तकब्बुर और सरकशी इख़्तियार किये रखी और वो निहायत मुजरिम क़ौम थी।
(सूरह-आअ़राफ़-7/133)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अपनी गर्दन को (गुरुर से) मरोड़ते हुये ताकि (दूसरों को) अल्लाह की राह से बहका दे उसके लिये दुनिया में भी रुसवाई है और रोज़े क़यामत हम उसे जला देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे ये तेरे उन आअ़माल के बाइस हैं जो तेरे हाथ आगे भेज चुके थे और बेशक-

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है। (सूरह–हज–22/9, 10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

वो लोग जिन्होंने (अल्लाह तआ़ला की इ़बादत से) आ़र महसूस की और तकब्बुर किया तो वो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा और वो अपने लिये अल्लाह तआ़ला के सिवा न कोई दोस्त पायेंगे और न कोई मददगार। (सूरह–निसा–4/173)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और तुम ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह छोड़ दो बेशक जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें अ़नक़रीब सज़ा दी जायेगी उन (आअ़माले बद) के बाइस कि जिनका वो इरतिकाब करते थे। (सूरह–अनआ़म–6/120)

➡ हज़रत सलमा बिन अकवाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी तकब्बुर करता रहता है और आगे बढ़ता रहता है यहाँ तक कि वो तकब्बुर करने वालों में शुमार हो जाता है फिर उसे वही अ़ज़ाब पहुँचेगा जो तकब्बुर करने वालों को पहुँचा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1066–ह०-2000)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7749)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोग हैं कि जिनसे अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन बात नहीं करेगा और न उनको गुनाहों से पाक करेगा और न ही

उनकी तरफ़ देखेगा और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है 1-बूढ़ा ज़ानी 2-झूटा हुक्मरान और तकब्बुर करने वाला अ़याल दार मोहताज। (मुस्लिम–सहीह–1/208–ह०-296) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/354–ह०-2568)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/250–ह०-8155)

➡ हज़रत हारिसा बिन वह्ब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें अह्ले जन्नत की ख़बर न दूँ अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें आपने फ़रमाया कि वो देखने में कमज़ोर और नातवाँ हैं लेकिन अगर वो अल्लाह के भरोसे किसी बात पर क़सम खालें तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रुर पूरा फ़रमां देता है और क्या मैं तुम्हें अह्ले जहन्नम की ख़बर न दूँ अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें आपने फ़रमाया कि वो सख़्त मिज़ाज झगड़ालू बुरी ख़सलत वाला और तकब्बुर करने वाला और माल जमाअ़ करने वाला मग़रुर है।
(बुख़ारी–सहीह–4/842–ह०-4918)
(मुस्लिम–सहीह–5/353–ह०-7187)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351–ह०-4116)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/295–ह०-10484)

किब्रयाई अल्लाह तआ़ला की चादर है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इ़ज़्ज़त अल्लाह तआ़ला की इज़ार (की मानिन्द) है और बड़ाई (बुजुर्गी, किब्रयाई) उसकी चादर (की मानिन्द) है यानी ये दोंनों अल्लाह तआ़ला की ही सिफ़तें हैं और अल्लाह तआ़ला

फ़रमाता है जो कोई ये दोंनों सिफ़तें इख़्तियार करे मैं उसे दोज़ख़ में दाख़िल करूँगा और उसे अ़ज़ाब दूँगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/367–ह०-4174)
(मुस्लिम–सहीह–5/90–ह०-6680)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/250–ह०-8157, 8158)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/247–ह०-7740)

तकब्बुर के बाइस इज़ार टख़नो से नीचे लटकाना

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन आदमियों से क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ाला बात नहीं करेगा न उनकी तरफ़ निगाहे रहमत से देखेगा और न उनको गुनाहों से पाक करेगा और उनको सख़्त अ़ज़ाब दिया जायेगा अ़र्ज़ किया गया वो कौन हैं तो आपने फ़रमाया तकब्बुर की वजह से टख़नों से नीचे कपड़ा लटकाने वाला, देकर एहसान जताने वाला व झूटी क़सम खाकर सौदा बेचने वाला। (मुस्लिम–सहीह–1/207–ह०-293)
(अबू दाऊद–सुनन–5/168–ह०-4087)
(नसाई–सुनन–4/324–ह०-2564, 5335)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स इज़ार (तहबन्द, पाजामा वग़ैराह) और कमीस व पगड़ी (इमामा) इन तीनों में से किसी को लटकाये तो अल्लाह तआ़ाला रोज़े क़यामत उसकी तरफ़ नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा। (नसाई–सुनन–7/291–ह०-5336)

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान का तहबन्द जो टख़नों से नीचे है वो आग में है और जिसने तकब्बुर से अपना तहबन्द घसीटा तो अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ नज़रे रहमत से नहीं देखेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–5/174–ह०-4093, 4094)
(नसाई–सुनन–7/289–ह०-5332, 5333)
(मिश्कात–2/659–ह०-4331,4332)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/252–ह०-8162)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो फ़ख़्र व तकब्बुर की वजह से अपनी इज़ार लटकाये अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी तरफ़ नज़रे रहमत नहीं फ़रमायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/494–ह०-5784, 6062)
(मुस्लिम–सहीह–4/220–ह०-5453, 5454, 5455)
(इब्ने माजा–सुनन–3/158–ह०-3569, 3570)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/944–ह०-1730, 1731)
(अबू दाऊद–सुनन–5/167–ह०-4085, 4093, 4094)
(नसाई–सुनन–7/290–ह०-5334, 5337)
(मुस्नद अहमद–3/111–ह०-4884, 5327, 5173, 6340,)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7752)

➡हज़रत हुबैब बिन मुग़फ़िल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक आदमी को देखा कि वो अपना तहबन्द घसीटता हुआ चला जा रहा है तो आप ने उसे देखकर फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि जो शख़्स तकब्बुर से अपना तहबन्द ज़मीन पर घसीटेगा तो आख़िरत में भी वो दोज़ख़ में उसे घसीटेगा।
(मुस्नद अहमद–7/452–ह०-18247)

➡ हज़रत अबू जुरई जाबिर बिन सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी को गाली न दो और किसी नेकी को हक़ीर मत जानो और अपने भाई से बात करो तो नरमी व खुश लहजा और खुश दिली व दिल को साफ़ रखते हुये बात किया करो बिला शुबा ये नेकी है और अपनी इज़ार टख़नों तक रखा करो व टख़नों से नीचे रखने से बचा करो बेशक ये तकब्बुर है और अल्लाह तआ़ला तकब्बुर को पसन्द नहीं करता और अगर कोई तुम्हें बुरा भला कहे या तुम्हें तुम्हारी किसी बात पर जो वो जानता हो आ़र दिलाये तो तुम उसके ऐ़ब पर जो उसमें हों आ़र मत दिलाना बिला शुबा इसका वबाल उसी पर होगा।
(अबू दाऊद–सुनन–5/165–ह०-4084)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तहबन्द के बारे में जो कुछ फ़रमाया है तो कमीस के बारे में भी यही हुक्म है
(अबू दाऊद–सुनन–5/175–ह०-4095)

➡ हज़रत अबू तमीमा हुजैमी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है एक मर्तबा मेरी मुलाक़ात मदीना मुनव्वरा के एक रास्ते में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) से हुई आप उस वक़्त ऊन का बना हुआ तहबन्द कि जिसके किनारे फैले हुये थे बांध रखा था मैंने आपको सलाम किया आपने सलाम का जवाब दिया फिर मैंने तहबन्द के हवाले से आपसे अ़र्ज़ किया कि मैं तहबन्द को कहाँ तक बाँधा करूँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी पिन्डली से कपड़ा हटाया फिर फ़रमाया कि यहाँ तक बांधा करो अगर ऐसा नहीं कर सकते तो इससे ज़रा नीचे बांध लिया करो अगर ये भी नहीं कर सकते तो टख़नों तक बांध लिया करो और अगर ऐसा भी नहीं कर सकते तो फिर अल्लाह तआ़ला किसी भी शेख़ी बघारने वाले और तकब्बुर करने वाले को पसन्द नहीं करता।
(मुस्नद अहमद–6/598–ह०-16051)

➡ हज़रत ज़ैद बिन औफ़ी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सद्क़ा करने वाले का फ़ख़्र अल्लाह तआ़ला को पसन्द है और तकब्बुर का फ़ख़्र अल्लाह तआ़ला को ना पसन्द है।
(मुस्नद अहमद–7/206–ह०-17533)

तकब्बुर करने वाला जन्नत में नहीं जायेगा

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ये वो आख़िरत का घर है जिसे हमने ऐसे लोगों के लिये बनाया है जो न तो ज़मीन में सरकशी व तकब्बुर चाहते हैं और न ही फ़साद अंगेज़ी और नेक अंजाम परहेज़ गारों के लिये है।
(सूरह–क़सस–28/83)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर मौजूद हो वो जन्नत में नहीं जायेगा और जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर ईमान हो वो दोज़ख़ में नहीं जायेगा। (मुस्लिम–सहीह–1/194–ह०-266, 267)
(इब्ने माजा–सुनन–1/49–ह०-59, 4173)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1065–ह०-1998)
(अबू दाऊद–सुनन–5/172–ह०-4091)
(मुस्नद अहमद–3/514–ह०-6526)
(मिश्कात–3/143–ह०-5107)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/249–ह०-8152)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7748)

➡ हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरते वक़्त जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर हो तो उसके लिये न जन्नत की खुश्बू हलाल है और न ही वो उसे देख सकेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं खूबसूरती को पसन्द करता हूँ और मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि मेरी सवारी का कोड़ा और जूते का तस्मा उ़म्दाह हो और कपड़े अच्छे हों तो क्या ये भी तकब्बुर है तो आपने फ़रमाया कि ये तकब्बुर नहीं है अल्लाह तआ़ला खूबसूरत है और खूब सूरती को पसन्द फ़रमाता है तकब्बुर ये है कि इन्सान हक़ बात को कुबूल न करे और अपनी नज़रों में लोगों को हक़ीर जाने। (मुस्लिम–सहीह–1/193–ह०-265)
(मुस्नद अहमद–7/198–ह०-17504, 3788)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर तकब्बुर होगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे मुँह के बल दोज़ख़ में औंधा करके डाल देगा।
(मुस्नद अहमद–3/665–ह०-7015)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/250–ह०-8154)
(कंजुल उ़म्माल–2/250–ह०-7773)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बद मिज़ाज और तकब्बुर से चलने वाला जन्नत में नहीं जायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–4/645–ह०-4801)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तकब्बुर का माअ़मूली सा हिस्सा भी जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।
(मुस्नद अहमद–7/146–ह०-17339)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/250–ह०-8153)

तकब्बुर करने के सबब बन्दा जन्नत जैसी अ़ज़ीम दायमी नेअ़मत से महरुम रहेगा और उसे जहन्नम के सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब से भी दो चार होना होगा और उसका तकब्बुर उसकी हलाकत का बाइस होगा इसलिये हमें चाहिये किसी भी मुआ़मलात में और किसी नेअ़मत पर तकब्बुर न करें बल्कि तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे और कसरत से अल्लाह तआ़ाला शुक्र अदा करें और खुद को लोगों के मुक़ाबले में कमतर हक़ीर और गुनाहगार तसव्वुर करें क्योंकि हमें किसी भी मुआ़मलात में फ़ख़्र व तकब्बुर करने और किसी को खुद से कमतर जानने का हक़ ही नहीं क्योंकि हम अपने जिस्म व जान तक

के मालिक नहीं हैं वो भी अल्लाह तअ़ाला की अमानत है जब चाहेगा तब हमारी रुह जिस्म खींच लेगा और हम बेजान और मुर्दार हो जायेंगे और हमें मिट्टी में मिलाकर फ़ना कर देगा तो जब हम अपने जिस्म और जान के मालिक नहीं तो दुनियावी तमाम अशिया अगर हमें मयस्सर आ जाये तो उसके मालिक कैसे हो सकते हैं बल्कि हम सिर्फ़ दुनियावी चीज़ों को इस्तेअ़माल करते और छोड़कर चले जाते हैं हत्ता कि मेरी जान भी मेरे जिस्म का साथ छोड़ देती व जिस्म को क़ब्र की मिट्टी व कीड़े मकोड़े खा जाते हैं ज़रा सोचो तुम्हारा अपना क्या है जिस पर तुम फ़ख़्र और तकब्बुर करो या फिर खुद पसन्दी में इतराते फिरो हालांकि हक़ीक़त ये है कि कायनात की हर शैः का हक़ीक़ी मालिक और ख़ालिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ पर'वर दिगार है और वो बेनियाज़ है और सब उसके मोहताज हैं और तमाम मख़लूक़ को अल्लाह तअ़ाला ने पैदा फ़रमाया और अल्लाह तअ़ाला के सिवा कोई नहीं जानता कि वो किस बन्दे राज़ी है और किस बन्दे से नाराज़ है और न कोई ये जानता है कि किसकी इ़बादत बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल हुई और किसकी मरदूद हुई तो जब हम किसी मुअ़ामले में कुछ भी नहीं जानते तो हम किस बिना पर दूसरों को खुद से कमतर जाने और फ़ख़्र व तकब्बुर करें जबकि हम अपनी तमाम इ़बादात और आअ़माल के अन्जाम से अन्जान और बेख़बर हैं।

इसलिये हमें चाहिये कि खुद का मुहासिबा करें और दूसरों के मुताअ़ल्लिक़ न सोचें बल्कि अपने गुनाहों व ऐबों पर ग़ौर व फ़िक्र करें और अपने अन्जाम के बारे में सोचें और अपनी नेअ़मतों और नेकियों को अल्लाह तअ़ाला के फ़ज़्ल व करम और उसकी इनायत तसव्वुर

करें क्योंकि जो नेअ़मते हमें मयस्सर हुईं और जो भी नेक अ़मल हमने किये वो सब पर'वर दिगार के फ़ज़्ल व उसकी तौफ़ीक़ से हैं तो जब सब कुछ अ़ता करने वाला सिर्फ़ पर'वर दिगार है तो हम किसी बात पर भी तकब्बुर करने का हक़ नहीं रखते।

अल्लाह ने तकब्बुर व सरकशी करने वालों को तबाह कर दिया

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और हमने कितनी ही (ऐसी) बस्तियों को बर्बाद कर डाला जो अपनी खुशहाल मईशत पर गुरुर व नाशुक्री कर रही थीं तो ये उनके (तबाह शुदा) मकानात हैं जो उनके बाअ़द कभी आबाद ही नहीं हुये मगर बहुत कम और (आख़िर कार) हम ही वारिस व मालिक हैं।
(सूरह–क़सस–28/58)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और (बेशक हमने) क़ारुन और फ़िरऔ़न और हामान को (भी हलाक किया) और बेशक मूसा (अ़लैहिस्सलाम) उनके पास वाज़ेह निशानियाँ लेकर आये थे तो उन्होंने मुल्क में गुरुर व सरकशी की और वो (हमारी गिरफ़्त से) आगे बढ़ जाने वाले न थे सो हमने (उनमें से) हर एक को उसके गुनाह के बाइस पकड़ लिया और उनमें से वो (तबक़ा भी) था जिस पर हमने पत्थर बरसाने वाली आँधी भेजी और उनमें से वो (तबक़ा भी) था जिसे दहशत नाक आवाज़ ने आ पकड़ा और उनमें से वो तबक़ा भी था कि जिसे हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से (एक) वो (तबक़ा भी) था कि जिसे हम ने ग़र्क़ कर दिया और हरगिज़ ऐसा न था कि अल्लाह

तआ़ला उन जुल्म करे बल्कि वो खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (सूरह–अ़नकबूत–29/39, 40)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

कहने लगा मुझे तो ये माल उस (कस्बी) इ़ल्म व हुनर की बिना पर दिया गया है जो मेरे पास है क्या उसे ये माअ़लूम न था कि बिला शुबाह अल्लाह तआ़ला ने उस से पहले बहुत सी ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया था जो उससे ज़्यादा ताक़त रखती थीं और (माल व दौलत और अफ़रादी कुव्वत के लिहाज़ से) ज़्यादा जमीअ़त रखती थीं और (बा वक़्ते हलाकत) मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में (मज़ीद तहक़ीक़ या कोई उज्र और सबब) नहीं पूछा जायेगा। (सूरह–क़सस–28/78)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और (ऐ हबीब) कितनी ही बस्तियाँ थीं जिनके बाशिन्दे (वसाइल व इक़्तिदार में) आपके इस शहरे (मक्का के बाशिन्दों) से ज़्यादा ताक़त वर थे जिसने आपको (बा-सूरते हिजरत) आपको निकाल दिया तो हमने उन्हें भी हलाक कर डाला फिर उनका कोई मददगार न हुआ (जो उन्हें बचा सकता)। (सूरह–मुहम्मद–47/13)

➡ हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने तवाज़ोअ़ की तो अल्लाह तआ़ला उसको सर बुलन्द कर देगा और जिस ने तकब्बुर किया तो अल्लाह तआ़ला उसको हलाक कर देगा। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–10/319–ह०-17851)

अल्लाह तआ़ला ने क़ारुन व फ़िरऔन और हामान को

तकब्बुर और सरकशी और हक़ को कुबूल न करने के सबब हलाक कर दिया अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब ने उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले लिया इनके अ़लावा तकब्बुर व सरकशी करने वाली कई क़ौमों पर अल्लाह तआला का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ जिसने उन्हें हलाक कर दिया और उनकी बस्तियों को तबाह कर दिया हज़रत लूत (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम पर अल्लाह तआला ने पत्थरों की बारिस की जिससे वो सब हलाक हो गये हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौमे समूद को निहायत ही ख़ौफ़नाक व दहशत नाक चीख़ व चिंघाड़ के अ़ज़ाब ने पकड़ लिया और उस हौलनाक अ़ज़ाब से सब हलाक हो गये और क़ारुन और उसके साथियों को अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में धंसा दिया और वो क़यामत तक ज़मीन में धंसने वाले अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेंगे और वो क़यामत तक ज़मीन में धंसते जायेंगे और हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को अल्लाह तआ़ला ने पानी में डुबो दिया और वो सब हलाक हो गये मज़कूरा क़ौमों के हलाक होने और तकब्बुर व सरकशी करने वालों की बस्तियों को तबाह और बर्बाद करने का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला ने कुरान में इसलिये फ़रमाया ताकि तकब्बुर और सरकशी करने वाले इससे इबरत हासिल करें कि तकब्बुर और सरकशी करने वालों का अन्जाम कितना ख़ौफ़नाक व दर्दनाक हुआ और उनका कोई मददगार न था जो उन्हें हलाकत और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचा सके

क़ारुन हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम से था अल्लाह तआ़ला ने क़ारुन को कसीर मालो दौलत अ़ता की थी और उसके ख़ज़ानों की चाबियाँ सत्तर खच्चरों पर लादी जाती थीं मगर वो इस कसीर माल पर शुक्रे

इलाही बजा लाने के बजाए मुताकब्बिर और मग़रुर हो गया था और वो अपने माल को अल्लाह तआ़ला का अ़तिया क़रार देने के बजाए अपनी अ़क़्ल व तदाबीर और अपनी क़ाबलियत का नतीजा क़रार देता था तो अल्लाह तआ़ला ने उसको उसके माल व दौलत समेत ज़मीन में धंसा दिया और क़यामत तक वो धंसता रहेगा

फ़िरऔन मिस्र का बादशाह था और वो अपनी हुकूमत व इक़्तिदार पर मुताकब्बिर और सरकश हो गया था हत्ता कि उसने खुदाई का दाअ़वा कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने उसे उसके लश्कर समेत समन्दुर में ग़र्क़ कर दिया और फ़िरऔन को क़यामत तक तमाम लोगों के लिये तकबबुर व सरकशी के अन्जाम की निशानी बना दिया ताकि लोग इससे इबरत हासिल करें।

हामान फ़िरऔन का वज़ीर और उसका मददगार था जो फ़िरऔन के ज़ुल्म व सरकशी में उसकी मदद किया करता था उसका अन्जाम भी इसी तरह इ़बरत नाक हुआ और वो अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से हलाक हो गया और इसी तरह से दीगर लोगों को उनके तकब्बुर और सरकशी के बाइस अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब के ज़रिये हलाक कर दिया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जब हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते लूत (अ़लैहिस्सलाम) के पास आये तो वो उनके आने से रंजीदा हुये और उनके (इरादा-ए-अ़ज़ाब) के बाइस निढाल हो गये और (फ़रिश्तों ने) कहा कि आप ख़ौफ़ ज़दा न हो और न ग़मज़दा हों बेशक हम आपको और आपके घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए आपकी बीवी के वो (अ़ज़ाब

के लिये) पीछे रह जाने वालों में से है बेशक हम इस बस्ती के बाशिन्दों पर आसमान से अ़ज़ाब नाज़िल करने वाले हैं इस वजह से कि वो नाफ़रमानी किया करते थे बेशक हमने उस बस्ती के (वीरान मकानों को) एक वाज़ेह निशानी के तौर पर अ़क्ल मन्द लोगों के लिये बरक़रार रखा और हमने मदयन की तरफ़ से उनके क़ौमी भाई शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को (भेजा) सो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इ़बादत करो और योमे आख़िरत की उम्मीद रखो व ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी न करते फिरो तो उन्होंने शुऐब (अ़लैहिस्सलाम) को झुटला डाला पस उन्हें ज़लज़ले (के अ़ज़ाब) ने पकड़ लिया सो उन्होंने सुबह इस हाल में की कि वो अपने घरों में औंधे मुँह (मुर्दा) पड़े थे और आ़द व समूद को (भी हमने हलाक किया) और बेशक उनके तबाह शुदा मकानात तुम्हारे लिये (बतौरे इ़बरत) ज़ाहिर हो चुके हैं (सूरह–अ़नकबूत–29/33 ता 38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं मिली कि जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं (जैसे) नूह की क़ौम और आ़द व समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदयन वाले और वो जिनकी बस्तियाँ उलट दी गईं थीं (क़ौमे लूत) उनके पास (भी) उनके रसूल वाज़ेह निशानियाँ (मुअ़जिज़ात) लेकर आये थे (लेकिन उन्होंने ना फ़रमानी की) पस अल्लाह तो ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता मगर वो (इन्कारे हक़ के बाइस) अपने ऊपर खुद ही जुल्म करते थे। (सूरह–तौबा–9/70)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(ऐ महबूब) क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने–

हाथी वालों के साथ क्या सुलूक किया क्या उसने उनके मक्रो फ़रेब को बातिल व नाकाम नहीं कर दिया और उसने उन पर (हर सिम्त से) परिन्दों के झुन्ड के झुन्ड भेज दिये जो उन पर कंकरीले पत्थर मारते थे फिर (अल्लाह तआ़ला ने) उनको खाये हुये भूसे की तरह (पामाल) कर दिया। (सूरह–फ़ील–105/01 ता 05)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हमने कितनी ही बस्तियों को तबाह और बर्बाद कर डाला जो ज़ालिम थीं फिर उनके बाअ़द हमने और क़ौमों को पैदा फ़रमां दिया।
(सूरह–अम्बिया–21/11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
मुताकब्बिर लोग कहने लगे बेशक जिस (चीज़) पर तुम ईमान लाये हो हम उसके सख़्त मुन्किर हैं पस उन्होंने ऊँटनी को (काटकर) मार डाला और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे ऐ सालेह तुम वो (अ़ज़ाब) हमारे पास ले आओ जिसकी तुम हमें वई़द सुनाते थे अगर तुम (वाक़ई) रसूलों में से हो सो उन्हें सख़्त ज़लज़ले के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा पस वो (हलाक होकर) सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।
(सूरह–आअ़राफ़–7/76)

मुताकब्बिरीन को दोज़ख़ियों का खून और पीप पिलाया जायेगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत

मुताकब्बिरों को चीटियों की मिस्ल जमाअ़ किया जायेगा और उनकी शक्लें इन्सानों जैसी होंगी और हर हक़ीर चीज़ उनसे बुलन्द होगी और हर तरफ़ से ज़िल्लत उन्हें ढाँप लेगी और उन्हें दोज़ख़ के एक क़ैदखाने में दाख़िल किया जायेगा जिसका नाम बूलस है और उनके चारों तरफ़ आग छा जायेगी और उन्हें दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप पिलाया जायेगा। (मिश्कात–3/144–ह०-5112)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/298–ह०-2492)
(मुस्नद अहमद–3/559–ह०-6677)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/256–ह०-8183, 8184)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7750)

फ़ख़्र व तकब्बुर के बाइस ज़मीन में धंसा दिया गया

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से पहले लोगों में एक आदमी अपनी चादर को तकब्बुर से लटकाता हुआ जा रहा था तो अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को हुक्म दिया तो ज़मीन ने उसे पकड़ लिया और वो ज़मीन में धंसा दिया गया पस वो अब ज़मीन में है और वो क़यामत तक ज़मीन में धंसता ही चला जायेगा। (बुख़ारी–सहीह–3/620–ह०-3485)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/298–ह०-2491)
(नसाई–सुनन–7/287–ह०-5328)
(मुस्नद अहमद–3/215–ह०-5340)
(मिश्कात–2/655–ह०-4313)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया एक शख़्स अकड़ता हुआ अपनी दो चादरों में चला जा रहा था और वो अपने आप पर इतरा रहा था तो अल्लाह तआ़ाला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया और क़यामत तक वो ज़मीन में धंसता चला जायेगा (मुस्लिम–सहीह–4/225–ह०-5467)
(मुस्नद अहमद–5/122–ह०-11373)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/252–ह०-8163)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7751)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक दफ़अ़ा एक शख़्स तकब्बुर से एक ऐसा जोड़ा पहने चल रहा था जो उसे बहुत पसन्द था और उसने अपने बालों में जो कंधे तक थे उसमें कंघी कर रखी थी और वो इतराकर फ़ख़्र व गुरुर से चल रहा था कि अल्लाह तआ़ाला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया और क़यामत तक ज़मीन में वो धंसता चला जायेगा (बुख़ारी–सहीह–5/496–ह०-5789)
(मुस्लिम–सहीह–4/224–ह०-5465)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/252–ह०-8164)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7753, 7754, 7755)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने तकब्बुर के बाइस अपना कपड़ा रौंदा तो दोज़ख़ में वो उसे रौंदेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/248–ह०-7759)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुमसे पहले एक शख़्स ने एक–

चादर ओढ़ी जिसमें उसने तकब्बुर किया तो अल्लाह तआ़ला ने अ़र्श पर से उसे देखा और अल्लाह तआ़ला उस पर नाराज़ हुआ और ज़मीन को हुक्म दिया तो ज़मीन ने उसको पकड़ लिया और वो ज़मीन में धंसता चला गया सो अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी से बचो। (कंजुल उ़म्माल–2/252–ह०-7788)

–: शोहरत वाला लिबास :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने शोहरत वाला लिबास पहना तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसे ज़िल्लत का लिबास पहनायेगा और उस लिबास में आग भड़केगी। (अबू दाऊद–5/137–ह०-4029, 4037)

–: तकब्बुर से कुफ़्र पैदा होता है :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और (वो वक़्त भी याद करें कि) जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम (अ़लैहिस्सलाम) को सज्दा करो तो सबने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के उसने इन्कार और तकब्बुर किया और (नतीजातन) वो काफ़िरों में से हो गया। (सूरह–बक़राह–2/34)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
इरशाद हुआ पस तू यहाँ से उतर जा तुझे कोई हक़ नहीं पहुँचता है कि तू यहाँ तकब्बुर करे पस तू (मेरी बारगाह से) निकल जा बेशक तू ज़लील व ख़्वार लोगों में से है। (सूरह–आअ़राफ़–7/13)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
मैं अपनी आयतों (के समझने और कुबूल करने) से उन लोगों को बाज़ रखूंगा जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं और अगर वो तमाम निशानियाँ देख लें (तब भी) उस पर ईमान नहीं लायेंगे और अगर वो हिदायत की राह देख लें फिर भी वो उसे अपना रास्ता नहीं बनायेंगे और अगर वो गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे अपनी राह के तौर पर अपना लेंगे।
(सूरह–आअ़राफ़–7/146)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
रब फ़रमायेगा हाँ बेशक मेरी आयतें तेरे पास आईं थीं सो तूने उन्हें झुटला दिया और तूने तकब्बुर किया और तू काफ़िरों में से हो गया और आप क़यामत के दिन उन लोगों को देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट बोला है उनके चेहरे सियाह होंगे क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है। (सूरह–जुमर–39/59, 60)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें हर गुनाह की जड़ हैं इसलिये उनसे बचो और उनसे होशियार रहो 1- तकब्बुर से बचो क्योंकि तकब्बुर ने ही इब्लीस को आदम (अ़लैहिस्सलाम) को सज्दा करने से रोका था 2-लालच से बचो क्योंकि ये लालच ही था जिसने आदम को दरख़्त से खाने पर मजबूर किया 3- हसद से बचो क्योंकि ये हसद ही था जिसने आदम के एक बेटे ने दूसरे को मार डाला पस ये हर गुनाह की इब्तिदा है लिहाज़ा इनसे बचो और इनसे होशियार रहो (इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–49/40–ह०-10485)

इब्लीस याअ़नी शैतान शुरु से मुताकब्बिर और सरकश और नाफ़रमान नहीं था बल्कि पहले वो फ़रमां बरदार और इ़बादत गुज़ार था जिसने हज़ारों साल इ़बादत की थी और मगर तकब्बुर के बाइस वो काफ़िर, मरदूद व मलऊ़न और दोज़ख़ का मुस्तहिक़ हो गया और उसकी हज़ारों साल की इ़बादत अकारत हो गई

जब अल्लाह तआ़ाला ने हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की तख़लीक़ फ़रमाई तो तमाम फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि वो आदम (अ़लैहिस्सलाम) को सज्दा करें तो तमाम फ़रिश्तों ने हुक्मे इलाही की ताअ़मील में सज्दा किया लेकिन इब्लीस ने तकब्बुर के बाइस इन्कार कर दिया और कहा कि मैं आग से बना हूँ और ये मिट्टी से और मैं इससे बेहतर हूँ इसलिये मैं आदम को सज्दा नहीं करुँगा और वो काफ़िर व मरदूद, लाअ़नती और दोज़ख़ी हो गया।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से एक बशर (इन्सान) को पैदा फ़रमाने वाला हूँ फिर जब मैं उस (के ज़ाहिर) को दुरस्त कर लूँ व उस (के बातिन) में अपनी (नूरानी) रुह फूँक दूँ तो तुम (सब) उस (की ताज़ीम) के लिये सज्दा करते हुये गिर पड़ना पस सबके सब फ़रिश्तों ने बिल इज्माअ़ सज्दा किया सिवाए इब्लीस के उसने तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया (अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया) कि ऐ इब्लीस तुझे किस चीज़ ने इस (हस्ती) को सज्दा करने से रोका है जिसे मैंने खुद अपने हाथों से बनाया है क्या तूने (इससे) तकब्बुर किया या तू बुलन्द रुतबे वाला है उस ने कहा मैं इससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया है

और तूने इसे मिट्टी से बनाया है इरशाद हुआ सो तू यहाँ से निकल जा बेशक तू मरदूद है और बेशक तुझ पर क़यामत के दिन तक मेरी लाअ़नत रहेगी। (सूरह–सॉद–38/71 ता 78)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि तुम आदम (अ़लै०) को सज्दा करो तो उन (सब) ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के वो जिन्नात में से था तो वो अपने रब की इताअ़त से बाहर निकल गया तो क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मुझे छोड़कर अपना दोस्त बना रहे हो हालांकि वो तुम सब के दुश्मन हैं ऐसे ज़ालिमों के लिये बहुत बुरा बदल है जिसे ज़ालिम लोग इख़्तियार कर रहे हैं। (सूरह–कह्फ़–18/50)

इब्लीस (शैतान) ने तकब्बुर किया और खुद को हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से बड़ा और अफ़ज़ल समझा तो अल्लाह तआ़ला ने उसको मलऊ़न व मरदूद क़रार देते हुये जन्नत से निकाल दिया और फ़रमाया तू ज़लील होने वालों में से है और हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) ने भूले से शजरे ममनूअ़ से खाने के फ़ेअ़ल पर तौबा व इस्तिग़फ़ार और तवाजोअ़ से काम लिया तो अल्लाह तआ़ला ने उनको ज़मीन की ख़िलाफ़त सौंप दी और उनको अपना नायब बनाया पस माअ़लूम हुआ कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के हुजूर तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे तो अल्लाह तआ़ला उसको बुलन्द फ़रमाता है और जो तकब्बुर करे और बड़ा बने तो अल्लाह तआ़ला उसको ज़लील व ख़्वार करता है तकब्बुर एक निहायत मज़मूम वस्फ़ है कि हज़ारों साल का इबादत गुज़ार व फ़रिश्तों का उस्ताद कहलाने वाला इब्लीस तकब्बुर की वजह से

जन्नत से मरदूद, लाअ़नती, काफ़िर व जहन्नमी होकर निकाला गया और उसके लिये क़यामत तक लाअ़नत व ज़िल्लत और रुसवाई है।

-: तकब्बुर की ताअ़रीफ़ :-

➡हज़रत उ़क़बा बिन अ़ामिर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरते वक़्त जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर हो तो उसके लिये न जन्नत की खुश्बू हलाल है और न ही वो उसे देख सकेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं खूबसूरती को पसन्द करता हूँ और मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि मेरी सवारी का कोड़ा और जूते का तस्मा उ़म्दाह हो व कपड़े अच्छे हों और जूते भी अच्छे हों तो क्या ये भी तकब्बुर है तो आपने फ़रमाया ये तकब्बुर नहीं है अल्लाह तअ़ाला खूबसूरत है और खूबसूरती को पसन्द फ़रमाता है तकब्बुर ये है कि इन्सान हक़ बात कुबूल न करे और अपनी नज़रों में लोगों को हक़ीर जाने (मुस्लिम-सहीह-1/193-ह०-265)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/1065-ह०-1999)
(मुस्नद अहमद-7/198-ह०-17504, 3788)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-6/249-ह०-8152, 8153)

दिल में अपने आपको दूसरों से अच्छा और बड़ा समझने की वजह से बन्दे को जो हालत हासिल होती है उसे तकब्बुर कहते हैं मग़रुर शख़्स हक़ बात को नहीं मानता और हक़ बात को कुबूल करने से इन्कार कर देता है और अपनी बड़ाई लोगों के सामने ज़ाहिर करता है और वो लोगों को अपने कमतर और हक़ीर

समझता है और दूसरे लोगों अपने मुक़ाबले में हक़ारत की नज़र से देखता है जबकि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी इस बात का मुस्तहिक़ ही नहीं कि वो दूसरों पर अपनी बड़ाई ज़ाहिर करे और ये अल्लाह तआ़ला के लिये हक़ है कि वो दूसरों पर अपनी बड़ाई ज़ाहिर करे और दूसरों के लिये ये बातिल और गुनाह है और तकब्बुर व तमाम ताअ़रीफ़ों का मालिक और सज़ावार सिर्फ़ और सिर्फ़ पर'वर दिगार है क्योंकि अल्लाह ही ऐसी कुदरत व ऐसी शानो अ़ज़्मत और फ़ज़ीलत का मालिक है जो किसी और के लिये मुम्किन ही नहीं पस अल्लाह तआ़ला ही सारी किब्र और बड़ाई की सिफ़त का मुस्तहिक़ और सज़ावार है

पस अब अगर कोई तकब्बुर करता है तो गोया वो अल्लाह तआ़ला से उसकी सिफ़त के मुताअ़ल्लिक़ झगड़ा करता है और उससे बग़ावत करता है जबकि इन्सान की हक़ीक़त ये है कि उसका आगाज़ मनी और अंजाम मुर्दार है और उसकी मौत के बाअ़द न उसकी ताक़त बाक़ी रहती न उसका हुस्नो जमाल न उसकी समाअ़त न गोयाई न ही उसका माल बाक़ी रहता फिर भी कोई तकब्बुर करे तो वो किस चीज़ पर तकब्बुर करता है।

तकब्बुर करने वालों को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करता

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और लोगों से (गुरुर के साथ) अपना रुख़ न फेर और ज़मीन पर अकड़ कर मत चल बेशक अल्लाह तआ़ला हर मुताकब्बिर और इतराकर चलने वाले को ना पसन्द फ़रमाता है और अपने चलने में मेयाना र'वी इख़्तियार

कर और अपनी आवाज़ को कुछ पस्त रखा कर बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।
(सूरह–लुक़मान–31/18, 19)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बिला शुबाह अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को पसन्द नहीं करता जो तकब्बुर करने वाला (मग़रुर) हो और फ़ख़्र (अपनी बड़ाई) करने वाला हो। (सूरह–निसा–4/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अल्लाह तआ़ला किसी तकब्बुर करने वाले और फ़ख़्र करने वाले को पसन्द नहीं करता।
(सूरह–हदीद–57/23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जबकि उसकी क़ौम ने कहा कि तू (खुशी की वजह से) गुरुर न कर बेशक अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (सूरह–क़सस–28/76)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तुम्हारा माअ़बूद यकता है पस जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वो सरकश व मुताकब्बिर हैं ये बात हक़ व साबित है कि अल्लाह तआ़ला जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ वो ज़ाहिर करते हैं बेशक वो सरकशों, मुताकब्बिरों को पसन्द नहीं करता। (सूरह–नहल–16/22, 23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फिर जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई–

नेअ़मत बख़्श देते हैं तो कहने लगता है कि ये नेअ़मत तो मुझे (मेरे) इल्म व तदबीर (की बिना) पर मिली है बल्कि ये आज़माइश है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (सूरह–जुमर–39/49)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अगर हम उसे (कोई) नेअ़मत का मज़ा चखाते हैं उस तकलीफ़ के बाअ़द जो उसे पहुँच चुकी थी तो वो ज़रुर कह उठता है कि मुझसे सारी तकलीफ़ें जाती रहीं बेशक वो बड़ा खुश होने वाला और फ़ख़्र करने वाला (बन जाता) है। (सूरह–हूद–11/10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और ज़मीन में अकड़ कर मत चल बेशक तू ज़मीन को (रऊ़नत के ज़ोर से) हरगिज़ चीर नहीं सकता और न ही तू हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को पहुँच सकता है (तू जो कुछ है वही रहेगा) इन सब (मज़कूरा) बातों की बुराई तेरे रब को बड़ी ना पसन्द है।
(सूरह–बनी इसराईल–17/37, 38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और रहमान के (मक़्बूल) बन्दे वो हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब उनसे जाहिल (सख़्त मिज़ाज, बद तमीज़, अख्खड़) लोग (ना पसन्दीदा) बात करते हैं तो वो सलाम कहते (हुये अलग हो जाते) हैं। (सूरह–फुरक़ान–25/63)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स

खुद को बड़ा समझे या अकड़ कर मुताकब्बिराना चाल चले तो वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़ब नाक होगा।
(मुस्नद अहमद–3/375–ह०-5995)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/252–ह०-8167)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वाले व इतराने वाले और नाज़ से चलने वालों को पसन्द नहीं करता।
(कंजुल उ़म्माल–2/246–ह०-7730)

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इ़ज़्ज़त वाले और बुलन्द मक़ाम वाले वो हैं जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है इसलिये कोई शख़्स अमीर हो या ग़रीब हो, काला हो या गोरा, खूब सूरत हो या बद सूरत और नसब के ऐतबार से आअ़ला हो या अदना और क़ौम व क़बीले के ऐतबार से ऊँचा हो या नीचा हो हमें सबके साथ हुस्ने खुल्क़ और आजिज़ी व इन्किसारी के साथ पेश आना चाहिये और जब बात करें तो तकब्बुर आमेज़ कलाम न करें और न ही किसी को हक़ीर जानकर उसकी तरफ़ से मुँह फेर लें और न ही ज़मीन पर अकड़ते हुये और इतराकर तकब्बुराना चाल चलें क्योंकि बेशक अकड़कर इतराकर चलने वाले और तकब्बुर करने वाले अल्लाह तआ़ला को पसन्द नहीं हैं ग़रीबों मिसकीनों को हक़ीर जानकार उनसे मुँह मोड़ना और उनसे दौराने बातचीत ऐसा र‘वैया इख़्तियार करना जिसमें हक़ारत का पहलू नुमायाँ हो तो ये तकब्बुर की अ़लामत है इससे हमें हर हाल में बचना चाहिये हज़रत इमाम जाअ़फ़र सादिक़

फ़रमाते हैं ऐ फ़रज़न्दे आदम (अ़लैहिस्सलाम) तू अपने पास मौजूद किसी चीज़ पर क्यों इतराता और तकब्बुर करता है जबकि मौत तेरे पास मौजूद हर चीज़ को तुझ से जुदा कर देगी और किसी चीज़ को तेरे हाथ में न छोड़ेगी और अल्लाह तआ़ला के अ़तिया पर नाशुक्री व तकब्बुर का इज़हार करना बाइसे हलाकत और वबाले जान है दीनी व दुनियावी इल्म का मिलना या हुस्न व जमाल या खुश आवाज़ी या माल व ज़मीन व जायदाद का मिलना या आअ़ला नसब और जाह व मन्सब का मिलना या किसी अम्र में कामयाबी मिलना या किसी नेअ़मत पर फ़ख़्र व तकब्बुर करना निहायत मज़मूम व गुनाह और ना पन्दीदा बातिनी अ़मल है और मज़कूरा तमाम चीज़ों का हक़ीक़ी मालिक सिर्फ़ रब्बुल आ़लमीन है और वो उन्हें जब चाहे वापस लेने पर भी क़ादिर है

मालदार माल की कसरत की वजह से खुद को बड़ा समझता है और फ़क़ीर को फ़क़्र की वजह से हक़ीर समझता है हालांकि कुरानो सुन्नत में गुरबा मसाकीन के बेशुमार फ़ज़ाइल और माल व दौलत की मज़म्मत और माल से पैदा होने वाले बेशुमार फ़ित्नों का ज़िक्र मिलता है जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा माल और किसी नेअ़मत पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करता बल्कि तकब्बुर करता और उस माल व नेअ़मत को अपनी तरफ़ मन्सूब करके फ़ख़्र करता तो वो खुद को अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ ले जाता है काश अगर वो अपनी हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ला का अ़तिया जानकर उसका शुक्र अदा करता व अपनी हर नेअ़मत को अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्लो करम तसव्वुर करता तो वो फ़ख़्र व तकब्बुर से महफ़ूज़ रहता और मज़ीद नेअ़मतों को मुस्तहिक़ हो

जाता और हर मुसलमान पर ये वाजिब है कि उसकी ज़िन्दगी के हर पहलू में अल्लाह तआ़ला के अहकाम व रसूलुल्लाह की तरज़े ज़िन्दगी की झलक नज़र आनी चाहिये तभी ये मुम्किन है कि बन्दा तकब्बुर और खुद पसन्दी से खुद को महफ़ूज़ रख सकता है और उसके तमाम मुआ़मलात में आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा होगी।

अल्लाह तआ़ला हर मुताकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों में झगड़ा करते हैं बग़ैर किसी दलील (व सनद) के जो उनके पास आयी हो (तो) ये रविश (ये झगड़ा करना) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक और ईमान वालों के नज़दीक सख़्त मबग़ूज़ (और ना पसन्दीदा) है अल्लाह तआ़ला इसी तरह हर एक मुताकब्बिर (और) सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (सूरह–मु‘मिन/ग़ाफ़िर–40/35)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(आप उनसे) फ़रमां दीजिये कि तुम ये तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी समाअ़त और तुम्हारी आँखें ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे (तो) अल्लाह तआ़ला के सिवा कौन माअ़बूद ऐसा है जो ये (नेअ़मतें दोबारा) तुम्हें दे दे आप देखिये कि हम किस तरह मुख़्तलिफ़ पहलुओं से आयतें बयान करते हैं फिर भी वो रुगरदानी करते हैं। (सूरह–अनआ़म–6/46)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये वो लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जिनके दिलों पर

और जिनके कानों पर और जिनकी आँखों पर मुहर लगा दी है और यही लोग (आख़िरत के अन्जाम से) ग़ाफ़िल हैं। (सूरह–नह्ल–16/108)

अल्लाह तआ़ाला हर जाबिर मुताकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है याअ़नी मुताकब्बिरीन के दिलों में जो कजी (टेढ़ापन) और गुमराही है वो उनके दिलों से नहीं निकल सकती और बाहर से उनके दिलों में हिदायत व इख़्लास दाख़िल नहीं हो सकता पस साहिबे अ़क़्ल को इससे इबरत हासिल करना चाहिये कि तकब्बुर करना अल्लाह के नज़दीक निहायत मज़मूम व गुनाह और ना पसन्दीदा बातिनी अ़मल है और अल्लाह तआ़ाला जिसके दिल पर मुहर लगादे तो उसे अल्लाह तआ़ाला के सिवा कोई इतनी कुदरत व इख़्तियार वाला नहीं जो उसके दिल पर लगी मुहर हटा दे और सबसे बड़ी ग़फ़लत दिल की ग़फ़लत है और सबसे बड़ी खुश नसीबी दिल की बेदारी है

तकब्बुर एक ऐसा मर्ज़ है जिससे दीगर कई बुराइयाँ इन्सान में पैदा होती हैं और कई अच्छाइयाँ इन्सान से दूर होती हैं हर मुताकब्बिर शख़्स अपनी इ़ज़्ज़त को बरक़रार रखने के लिये वो झूट बोलता, गुस्सा करता, हसद करता, अ़दावत, कीना और नफ़रत करता, ग़ीबत करता और अपने जुमला आअ़माल लोगों को दिखाकर रियाकारी करता और खुद पसन्दी में मुब्तिला हो जाता और लोगों को तकलीफ़ व नुक़सान पहुँचाता और वो मुसलमानों व रिश्तेदारों और ग़रीबों मिस्कीनों के हुकूक़ अदा नहीं करता और जो शख़्स अपने इ़ल्म या मालो दौलत या जाह और मन्सब या हुस्नो जमाल या ताक़त व कुव्वत पर तकब्बुर करता तो मज़कूरा चीज़ें हमेशा–

बाक़ी रहने वाली नहीं हैं इन सबको ज़वाल और फ़ना होना है और ये सब चीज़ें इन्सान की ज़ाती मिल्कियत नहीं है जिस पर वो तकब्बुर करे हत्ता कि इन्सान के जिस्म में सर ता पाँव कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर तकब्बुर किया जाये और न कोई इन्सान अपने जिस्म व जान का मालिक है कि जिस पर वो तकब्बुर और फ़ख़्र का इज़हार करे जबकि कायनात की हर शैः का हक़ीक़ी मालिक सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला है और दुनियावी तमाम नौअ़य्यत व अक़साम की हर शैः से इन्सान का तअ़ाल्लुक़ मौत के बाअ़द मुनक़ताअ़ हो जाता है और फ़ख़्र व तकब्बुर के सबब इन्सान अल्लाह तअ़ाला के ग़ज़ब और उसके अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है

बाअ़ज़ अहले इ़ल्म भी अपने इ़ल्म के सबब तकब्बुर और खुद पसन्दी का शिकार हो जाते हैं और अ़ालिम खुद को बेहतर व अपने से कम इ़ल्म वालों को हक़ीर समझता हैं और वो लोगों को उनकी बे इ़ल्मी पर उन्हें ज़लील करता है और बाअ़ज़ औक़ात तो उन्हें जाहिल गंवार तक कह देता है इसी तरह नमाज़ी भी तकब्बुर और खुद पसन्दी में मुब्तिला हो जाते हैं और नमाज़ न पढ़ने वालों को हक़ारत की नज़र से देखते हैं और खुद को उनसे अच्छा व अफ़ज़ल और आअ़ला समझते हैं इसी तरह से जब कोई नेक अ़मल करता है तो वो अपने अ़मल पर खुद पसन्द और मुताकब्बिर हो जाता है और वो लोगों में अपने अ़मल का इज़हार करते हुये दिखावा करता और अपनी बड़ाई का इज़हार करता है और इस तरह से वो अपने अ़मल का दिखावा करके रियाकार हो जाता है और गुनाहे कबीरा का मुरतकिब हो जाता है पस ऐसे लोगों को इब्लीस (शैतान) के बुरे अन्जाम को याद रखना चाहिये कि गुरुर व तकब्बुर के

सबब उसका अन्जाम क्या हुआ हालांकि एक वक़्त में शैतान बड़ा इ़बादत गुज़ार और बड़ा अ़ालिम था सिर्फ़ तकब्बुर के बाइस वो मरदूद, लाअ़नती व जहन्नमी हो गया मगर आज कल लोगों का हाल ये है कि अ़ालिम ये चाहता है कि लोग मुझे हज़रत व अल्लामा के लक़ब से पुकारें व हाजी चाहता है कि लोग मुझे हाजी साहब कहें और ताअ़ज़ीमो तकरीम करें और नेक आअ़माल करने वाला चाहता है कि मेरे हर अ़मल को चर्चा व शोहरत हासिल हो लोगों में मेरी इ़ज्ज़त और ताअ़रीफ़ हो और इस वजह से लोग तकब्बुर, खुद पसन्दी और रियाकारी के गुनाह के मुरतकिब हो जाते हैं जो उन्हें जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब कर देते है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जिसने कहा मैं अ़ालिम हूँ तो वो जाहिल है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/297–ह०-6846)

अगर कोई शख़्स किसी ख़ास वजह से अपने इ़ल्म का इज़हार करना चाहता है तो वो इस तरह कहे कि मेरे पास उतना इ़ल्म है जितना मेरे रब ने मुझे अ़ता किया और मेरे पास अपना ज़ाती कुछ भी नहीं है सब कुछ मेरे पर‘वर दिगार की अमानत है तो इस तरह से वो तकब्बुर और खुद पसन्दी से महफ़ूज़ हो जायेगा इसी तरह तमाम इ़बादात को अपना कमाल न समझे बल्कि अल्लाह तअ़ाला के फ़ज़्लो करम और उसकी तौफ़ीक़ तसव्वुर करे और इ़बादत पर न इतराये न फ़ख़्र करे और न खुद पसन्दी में मुब्तिला हो क्योंकि जिस इ़बादत पर वो इतराता है तो हो सकता है इसकी सब इ़बादात बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल ही न हुई हो और तकब्बुर

की वजह से कोई अज्र व सवाब नहीं मिलता है बल्कि अ़ज़ाब मिलता है इसी तरह जब अल्लाह तआ़ला किसी को माल अ़ता करे तो वो उस माल पर न इतराये न ही तकब्बुर करे बल्कि अल्लाह तआ़ला का अ़तिया व उसकी अमानत तसव्वुर करे क्योंकि कोई इन्सान न ही माल लेकर पैदा हुआ था और न ही माल लेकर मरेगा तो फिर तकब्बुर किस बात का अक्सर मालदार लोग तकब्बुर और खुद पसन्दी में गिरफ़्तार रहते हैं और ग़रीब मिस्कीन और कम माल वालों को वो हक़ारत की नज़र से देखते हैं और उन्हें अपने से कमतर लोगों को सलाम करने में बे इ़ज़्ज़ती दिखाई देती है और बाअ़ज़ तो ऐसे हैं कि जिन्हें मजलिसों महफ़िलों में सबके साथ ज़मीन पर बैठने में शर्म महसूस होती है और उनके बात करने के लहजे व चलने फिरने और उठने बैठने के अन्दाज़ में तकब्बुर साफ़ दिखाई देता है

अल्लाह तआ़ला दुनिया में जिसको जितनी चाहता है उतनी इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाता है उससे ज़्यादा कोई भी इ़ज़्ज़त हासिल नहीं कर सकता चाहे लाख़ कोशिश कर ले मसलन जब किसी के मालो दौलत में इज़ाफ़ा होता है तो वो उस माल व दौलत को लोगों को मुताफ़र्रिक़ ज़राए से दिखाता फिरता है और चाहता है कि लोग मेरे मालो दौलत की वजह से मेरी इ़ज़्ज़त करें लेकिन ऐसा नहीं होता बल्कि उसके पास मालो दौलत बढ़ने की वजह से लोग हसद करते और उससे जलने लगते हैं और उस माल व दौलत की वजह से उसके अन्दर जो गुरुर व तकब्बुर पैदा होता है तो उस तकब्बुर की वजह से लोग उससे नफ़रत करने लगते तो इस तरह उसे इ़ज़्ज़त तो नहीं मिलती बल्कि गुरुर व तकब्बुर की वजह से वो लोगों में ज़लील ज़रुर होता है।

इसी तरह जब अल्लाह तआ़ला किसी को हुस्नो जमाल अ़ता फ़रमाये तो वो अपनी खूबसूरती पर इतराता और फ़ख़्र व तकब्बुर करने लगता और वो अपने से कमतर वाले को हक़ारत की नज़र से देखता अक्सर ये बीमारी औ़रतों में पाई जाती है जबकि हर खूबसूरत चीज़ को एक न एक दिन ज़वाल ज़रुर आना है और फिर वो ज़ाइल और फिर वो फ़ना हो जायेगी क्योंकि किसी भी खूबसूरत चीज़ और हुस्नो जमाल की उ़म्र ज़्यादा नहीं होती ऐसे लोगों को चाहिये कि वो अपने अन्दर झांकें और उस पर ग़ौर करें कि उसके खूबसूरत गोरे जिस्म के अन्दर कितनी गन्दगी भरी पड़ी है मसलन पेट में पाखाना पेशाब और बदबूदार हवा जब रियाह ख़ारिज होती है तो कितनी बदबू निकलती है कि लोग अपनी नाक बन्द कर लेते हैं और कानों में बदबूदार मैल व नाक में रींठ और आँखों में कीचड़ व मुँह से निकलने वाला बलगम और शर्मगाह व दुबर से निकलने वाला पाखाना पेशाब व जिस्म के छोटे छोटे छेदों से बदबूदार पसीना इन सब के बावुजूद कोई अपनी क़द व कामत और रंगत और खूब सूरती पर फ़ख़्र व तकब्बुर करे और इतराये तो क्या ये उसे ज़ैब देता है और क्या वो नहीं जानता कि वो शर्मगाह से नापाकी की हालत में दुनिया में आया और जिसकी तखलीक़ मिट्टी से हुई और उसी मिट्टी में उसे मिल जाना है

वक़्त हमेशा एक सा नहीं रहता हर बुलन्दी को एक न एक दिन पस्ती की तरफ़ लौटना और हर कमाल को ज़वाल है अल्लाह तआ़ला की कुदरत का ये निज़ाम है कि हर चीज़ को फ़ना है उरुज़ के बाअ़द ज़वाल है दिन के बाअ़द रात है बुलन्दी के बाअ़द पस्ती है हत्ता कि सूरज जैसी अ़ज़ीम शैः को भी ज़वाल है तो फिर–

कमज़ोर मिट्टी से बने इन्सान की क्या हैसियत और औक़ात है कि वो अपनी किसी चीज़ पर इतराये और फ़ख़्र व तकब्बुर करे अगर अल्लाह तआ़ला दुनिया में किसी को उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अ़ता करदे फिर भी दुनियावी तमाम चीज़ों की उ़म्र बहुत कम है क्योंकि दुनियावी हर शैः दुनिया से शुरु होकर दुनिया में ही ख़त्म हो जाती है पस हक़ीक़ी कामयाबी वो है जो मौत के बाअ़द की अस्ल ज़िन्दगी में कामयाब हो गया मौत के बाअ़द जो ज़िन्दगी शुरु होती उसको कभी फ़ना नहीं और उस ज़िन्दगी की उ़म्र की कोई मिक़दार नहीं बल्कि वो लामहदूद है और हक़ीक़ी कामयाबी क़ब्र की ज़िन्दगी में कामयाब होना हश्र की ज़िन्दगी में कामयाब होना है फिर जन्नत की निहायत हसीन व खूबसूरत और अमन व चैन राहतो सुकून से लबरेज़ ऐशो इशरत की दायमी ज़िन्दगी ये हक़ीक़ी कामयाबी है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जिस दिन वो तुम्हें जमाअ़ होने के दिन (मैदाने हश्र में) इकट्ठा करेगा ये हार और नुक़सान ज़ाहिर होने का दिन है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाता है और नेक अ़मल करता है तो (अल्लाह) उस (के नामा-ए-आअ़माल) से उसकी ख़ताऐं मिटा देगा और उसे जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे से नहरें बह रही हैं वो उनमें हमेशा रहने वाले हैं (और) ये बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरह-तग़ाबुन-64/09)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ हबीब) जिस दिन आप (अपनी उम्मत के) मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दायीं जानिब तेज़ी से चल रहा होगा

(और उनसे कहा जायेगा) तुम्हें खुश ख़बरी हो आज (तुम्हारे लिये) जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं तुम हमेशा उनमें रहोगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरह–हदीद–57/12)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

ये अल्लाह तआ़ला की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं और जो कोई अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की फ़रमां बरदारी करे उसे वो जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे और ये बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरह–निसा–4/13)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ये ऐसा दिन जिस में सच्चे लोगों को उनका सच फ़ायदा देगा उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं वो उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वो उससे राज़ी हो गये यही (रज़ाये इलाही) सबसे बड़ी कामयाबी है। (सूरह–मायदा–6/119)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

उस दिन जिस शख़्स से वो (अ़ज़ाब) फेर दिया गया तो बेशक (अल्लाह तआ़ला ने) उस पर रहम फ़रमाया और यही (उख़्र‘वी बख़्शिश और) सरीह कामयाबी है। (सूरह–अनआ़म–6/16)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

अल्लाह तआ़ला ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वाअ़दा फ़रमाया है जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे और (उनसे) ऐसे पाकीज़ा

मकानात का भी (वाअ़दा फ़रमाया) जो जन्नत के ख़ास मक़ाम पर सदाबहार बाग़ात में हैं और (फिर) अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और खुशनूदी (इन सब नेअ़मतों से) बढ़कर है यही ज़बर दस्त कामयाबी है।
(सूरह–तौबा–9/72)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये जन्नतें तैयार कर रखी हैं जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरह–तौबा–9/89)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की है उनकी कामयाबी के साथ निजात देगा न उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी और न ही वो ग़मगीन होंगे। (सूरह–ज़ुमर–39/61)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तो जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमायेगा यही तो सरीह कामयाबी है। (सूरह–जासिया–45/30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ये सब नेअ़मतें इसलिये जमाअ़ की) ताकि वो मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को जन्नतों में दाख़िल फ़रमाये जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं वो उनमें हमेशा रहेंगे और (मज़ीद ये कि) वो उनकी लग़ज़िशों को भी उनसे दूर कर दे (जैसे उसने उनकी ख़तायें मुआ़फ़ की हैं) और ये अल्लाह तआ़ला के नज़दीक (मोमिनों की) बड़ी कामयाबी है। (सूरह–फ़तह–48/05)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वो तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और तुम्हें जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और उ़म्दाह रिहायश गाहों में (ठहरायेगा) जो हमेशा रहने वाले बाग़ात में होंगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है।
(सूरह–सफ़–61/12)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं यही बड़ी कामयाबी है। (सूरह–बुरुज–85/11)

पस माअ़लूम हुआ कि दुनियावी कसीर नेअ़मतें और मालो दौलत और कोई बड़ा उहदा व मन्सब पर फ़ाइज़ होना हक़ीक़ी कामयाबी नहीं है बल्कि हक़ीक़ी कामयाबी अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी और आख़िरत की कामयाबी है और ये नेक आअ़माल और तक़्वा व परहेज़ गारी और इख़्लास से हासिल होती है और हर इन्सान को हमेशा ये याद रखना चाहिये कि फ़ख़्र और तकब्बुर से इन्सान को कभी इ़ज़्ज़त हासिल नहीं होती बल्कि लोग उसे ज़िल्लत आमेज़ व नफ़रत भरी नज़र से देखते हैं और तकब्बुर का बदला अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब और दोज़ख़ का अ़ज़ाब है

बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं कि जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अच्छी सेहत व ताक़त और कुव्वत से नवाज़ा है तो वो अपनी ताक़त व कुव्वत पर इतराते और तकब्बुर करते जबकि वो एक छोटी सी बीमारी में चारपाई पकड़ लेते और उनकी सारी ताक़त व कुव्वत धरी रह जाती है इन्सान कितना भी ताक़त वर क्यों न हो उसकी ताक़त

व कुव्वत को भी ज़वाल आता है और फिर वो ज़ाइल हो जाती है शदीद गर्मी की तेज़ धूप में जो थोड़ी देर चल न सके और शदीद सर्दी में जो बग़ैर कपड़ों के खुले मैदान में रात गुज़ार न सके तो फिर ऐसी ताक़त व कुव्वत की क्या हैसियत और ऐसी ताक़त व कुव्वत पर इतराना फ़ख़्र व तकब्बुर करना हिमाकत और कम अ़क़्ली की दलील है और अगर अल्लाह तआ़ला चाहे तो उसे ऐसी बीमारी दे दे कि वो अपने जिस्म पर बैठी मख्खी भी न उड़ा सके और हर फ़ानी व ज़ाइल होने वाली चीज़ पर इतराने व तकब्बुर करने वाला बेअ़क़्ल व अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ है जो खुद ही अपने हाथों हलाक होना चाहता है और खुद को तकब्बुर के बाइस आफ़त, वबाल और दोज़ख़ की आग में ढकेल रहा है।

इन्सान की तख़लीक़ कमज़ोर चीज़ मिट्टी और हक़ीर पानी से हुई

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो अल्लाह ही है कि जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत में पैदा फ़रमाया फिर उसने कमज़ोरी के बाअ़द कुव्वत पैदा की (और) फिर उसने कुव्वत के बाअ़द कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया और वो जो चाहता है पैदा फ़रमां देता है और वो खूब जानने वाला बड़ी कुदरत वाला है। (सूरह-रुम-30/54)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वही है जिसने खूबी व हुस्न बख़्शा हर उस चीज़ को जिसे उसने पैदा फ़रमाया और उसने इन्सानी तख़लीक़ की इब्तिदा मिट्टी से की फिर उसकी नस्ल को हक़ीर पानी के निचोड़ (याअ़नी नुत्फ़ा) से चलाया फिर उस-

(के आअ़ज़ा) को दुरस्त किया और उसमें रुहे (हयात) फूँकी और तुम्हारे लिये (रिहमे मादर ही में पहले) कान और फिर आँखें और (फिर) दिल व दिमाग़ बनाये तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।
(सूरह–सज्दा–32/07, 08)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
ये उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान हो जो ज़मीन में फैले हुये हो और ये भी उसकी निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े पैदा किये ताकि तुम उन की तरफ़ से सुकून पाओ और उसने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी बेशक इस (निज़ामे तख़लीक़) में उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं। (सूरह–रुम–30/20, 21)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
बेशक इन्सान पर ज़माने का एक ऐसा वक़्त भी गुज़र चुका है कि वो कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था बेशक हमने इन्सान को मख़लूत नुत्फ़े से पैदा किया जिसे हम (तवल्लुद तक एक मरहले से दूसरे मरहले की तरफ़) पलटते व जांचते रहते हैं पस हमने उसे (तरतीब से) सुनने वाला फिर देखने वाला बनाया बेशक हमने उसे (हक़ व बातिल में तमीज़ करने के लिये शऊ़र और बसीरत की) राह भी दिखादी अब ख़्वाह वो शुक्र गुज़ार हो जाये या ना शुक्र गुज़ार रहे।
(सूरह–दहर/इन्सान–76/01 ता 03)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
वही है जिसने तुम्हारी पैदाइश मिट्टी से की फिर एक

नुत्फ़ा से फिर फिर रिहमे मादर में मुअ़ल्लक़ वुजूद से फिर वही तुम्हें बच्चा बनाकर निकालता है फिर (वो तुम्हें नश्व व नमा देता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँच जाओ फिर (तुम्हें उ़म्र की मुहलत देता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से कोई (बुढ़ापे से पहले ही) वफ़ात पा जाता है और (ये सब कुछ इस लिये किया जाता है) ताकि तुम (अपनी अपनी) मुक़र्ररा मिआ़द तक पहुँच जाओ और इसलिये कि तुम समझ सको वही है जो ज़िन्दगी देता और मौत देता है फिर जब वो किसी काम का फ़ैसला फ़रमाता है तो सिर्फ़ उसे फ़रमां देता है कि हो जा पस वो हो जाता है। (सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/67)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हलाक हो (वो बद बख़्त) इन्सान कैसा ना शुक्रा है कि अल्लाह तआ़ला ने उस किस चीज़ से पैदा फ़रमाया है नुत्फ़ा में से उसको पैदा फ़रमाया फिर साथ ही (जिन्स के लिहाज़ से) तअ़य्युन फ़रमां दिया फिर उसके लिये राह आसान फ़रमांदी फिर उसे मौत दी फिर उसे क़ब्र में (दफ़न) कर दिया फिर जब वो चाहेगा उसे (दोबारा ज़िन्दा करके) खड़ा करेगा यक़ीनन उसने वो (हक़) पूरा न किया जिसका उसे (अल्लाह तआ़ला ने) हुक्म दिया था पस इन्सान को चाहिये कि अपनी ग़िज़ा की तरफ़ देखे (और ग़ौर करे)। (सूरह–अबस–80/17 ता 24)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

क्या हमने तुम्हें हक़ीर पानी से पैदा नहीं किया फिर उसको महफ़ूज़ जगह (रिहमे मादर) में रखा (वक़्त के) एक मुअ़य्यन अंदाज़े तक (और) फिर हमने (नुत्फ़ा से तवल्लुद तक तमाम मराहले के लिये) वक़्त के अंदाज़े

मुक़र्रर किये पस हम क्या ही खूब अंदाज़े मुक़र्रर करने वाले हैं। (सूरह–मुरसलात–77/20 ता 23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हमने तुम्हारी तख़लीक़ (की इब्तिदा) मिट्टी से की फिर मनी के एक क़तरे से (याअ़नी नुत्फ़ा से) फिर (रिहमे मादर के अन्दर जोंक की सूरत में) एक मुअ़ल्लक़ वुजूद से फिर एक (ऐसे) लोथड़े से जो दाँतों से चबाया हुआ लगता है (फिर) कोई कामिल होता है व कोई नाक़िस ऐसा हम इसलिये करते हैं ताकि (हम) तुम पर (अपनी कुदरत व हिकमत) को अच्छी तरह ज़ाहिर कर दें और हम जिसे चाहते हैं रिहमों में मुक़र्ररा मुद्दत तक ठहरा देते हैं फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर (तुम्हारी पर'वरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँच जाओ और तुममें से बाअ़ज़ वो हैं जो जल्द वफ़ात पा जाते हैं और बाअ़ज़ वो हैं जो बदतरीन ऊ़म्र (बुढ़ापे की आख़िरी हद) को पहुँचते हैं ताकि वो सब कुछ जान लेने के बाअ़द ऐसा हो जाये वो कुछ भी न जाने। (सूरह–हज–22/05)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

अल्लाह तआ़ला वही है जिसने तम्हें मिट्टी के गारे से पैदा फ़रमाया है फिर उसने (तुम्हारी मौत की) मिअ़ाद मुक़र्रर फ़रमांदी और एक मुक़र्ररा मुद्दत और भी है (याानी क़यामत) जो उसी के पास है फिर भी तुम शक करते हो। (सूरह–अनआ़म–6/02)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक हमने इन्सान की तख़लीक़ मिट्टी के खुलासे से फ़रमायी फिर हमने उसे नुत्फ़ा की सूरत में एक महफ़ूज़

मक़ाम (रिहमे मादर) में रखा फिर हमने उस नुत्फ़े को जमा हुआ खून बनाया फिर हमने उस जमे हुये खून को एक ऐसा लोथड़ा बनाया जो दाँतों से चबाया हुआ लगता है फिर हमने उस लोथड़े से हड्डियों का ढाँचा बना दिया फिर हमने उन हड्डियों पर गोस्त व पुट्ठे चढ़ाये (और) फिर हमने उसे तख़्लीक़ की दूसरी सूरत में (बदल कर) नश्व व नमा दी फिर (उस) अल्लाह ने (उसे) बढ़ा (कर मज़बूत वुजूद बना) दिया जो सबसे बेहतर पैदा करने वाला है (और) फिर बेशक तुम इस (ज़िन्दगी) के बाअ़द ज़रुर मरने वाले हो फिर बेशक तुम क़यमत के दिन (ज़िन्दा करके) उठाये जाओगे। (सूरह–मु'मिनून–23/12 ता 16)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम्हारे लिये (मरते वक़्त) तबाही है फिर (क़ब्र में भी) तबाही है फिर तुम्हारे लिये (रोज़े क़यामत) हलाकत है फिर (दोज़ख़ की) हलाकत है क्या इन्सान ये ख़याल करता है कि उसे बेकार (बग़ैर हिसाब व किताब के) छोड़ दिया जायेगा क्या वो (अपनी इब्तिदा में) मनी का एक क़तरा न था जो (औ़रत के रिहम में) टपका दिया जाता है फिर वो (रिहम में जाल की तरह जमा हुआ) एक मुअ़ल्लक़ वुजूद बन गया फिर उसने पैदा फ़रमाया फिर उसने (उन्हें) दुरस्त किया फिर ये कि उसने नुत्फ़े के ज़रिये दो क़िस्में पैदा कीं मर्द और औ़रत तो क्या वो इस बात पर क़ादिर नहीं है कि वो मुर्दों को फिर से ज़िन्दा करदे। (सूरह–क़ियामाह–75/34 ता 40)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

पस इन्सान को ग़ौर करना चाहिये कि वो किस चीज़ से पैदा किया गया वो कुव्वत से उछलने वाले पानी में

से पैदा किया गया जो पीठ और कूल्हे की हड्डियों के दरमियान से होकर बाहर निकलता है बेशक वो उसको फिर वापस लाने पर भी क़ादिर है जिस दिन सब राज़ ज़ाहिर कर दिये जायेंगे फिर इन्सान के पास न (खुद) कोई कुव्वत होगी और न कोई (उसका) मददगार होगा (सूरह–तारिक़–86/05 ता 10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से (इस हालत में) बाहर निकाला कि तुम कुछ भी नहीं जानते थे और उसने तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल बनाये ताकि तुम शुक्र बजा लाओ (सूरह–नहल–16/78)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जो सादिक़ और मसदूक़ हैं ने फ़रमाया तुम में से हर एक की बुनियादे पैदाइश उसकी माँ के पेट में (नुत्फ़े की आमेज़िश की सूरत में) चालीस दिन तक रहती है फिर चालीस दिनों तक गाढ़े और जामिद (जमे हुये) खून की सूरत में रहती है उस के बाअ़द चालीस दिनों तक गोस्त के लोथड़े की शक्ल इख़्तियार कर लेती है फिर अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को चार बातों का हुक्म देकर भेजता है तो वो फ़रिश्ता उसका अ़मल व किरदार, उसकी मौत व उसका रिज़्क़ और उसका नेक बख़्त या बद बख़्त होना लिखता है फिर उसके बाद उसमें रुह फूंकी जाती है फिर इन्सान ज़िन्दगी भर अह्ले जहन्नम के काम करता रहता है फिर उसके और जहन्नम के दरमियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है तो लिखी हुई तक़दीर उसके आगे आ जाती है तो वो अह्ले जन्नत के अ़मल करके

जन्नत में दाख़िल हो जाता है इसी तरह से कोई शख़्स ज़िन्दगी भर अह्ले जन्नत के अ़मल करता है जब उस के व जन्नत के दरमियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता तो लिखी हुई तक़्दीर उसके आगे आ जाती है तो वो अह्ले दोज़ख़ के अ़मल करके वो दोज़ख़ में पहुँच जाता है। (बुख़ारी–सहीह–3/511–ह०-3332)
(मुस्लिम–सहीह–5/112–ह०-6723)
(अबू दाऊद–सुनन–6/576–ह०-4708)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर पैदा होने वाला बच्चा अपनी नाफ़ में उस मिट्टी से कुछ लेकर पैदा होता है जिस मिट्टी से उसको पैदा किया जाता है जब वो अपनी आख़िरी ‌उ़म्र में पहुँचता है तो उसे उसी मिट्टी की तरफ़ लौटाया जाता है जिस मिट्टी से वो पैदा किया गया था ताकि वो उसमें दफ़्न किया जाये और मैं यानी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अबू बक्र व ‌उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) तीनो एक ही मिट्टी से पैदा किये गये और उसी में दफ़्न किये जायेंगे।
(कंज़ुल ‌उ़म्माल–8/295–ह०-42766, 42767)
(देलमी–फिरदौसुल अख़बार–2/305–ह०-2775,)
(देलमी–फिरदौसुल अख़बार–4/325–ह०-6486)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की तख़्लीक़ से चार हज़ार साल पहले अल्लाह तआ़ला ने मुझे और अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) को एक ही नूर से

पैदा फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) को पैदा फ़रमाया तो अल्लाह तआ़ला ने उस नूर को उनकी कमर में रखा और वो एक ही रहा यहाँ तक कि वो हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब की कमर में जुदा हो गया कि नबूवत मुझमें याअ़नी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) में थी और ख़िलाफ़त अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में थी।
(देलमी–फिरदौसुल अख़बार–2/305–ह०-2776)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ज़मीन की) उसी (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटायेंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मर्तबा (फिर) निकालेंगे। (सूरह–ताहा–20/55)

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को कमज़ोर और बेजान चीज़ यानी मिट्टी से पैदा किया और नस्ली ऐतबार से इन्सान की पैदाइश हक़ीर पानी से की और फिर उस को अ़क़्ल व शऊर और एहसासात व जज़बात और इदराकात की अ़जीम नेअ़मतों से नवाज़ा और बेशुमार दुनियावी उमूर में तसर्रुफ़ करने की कुदरत अ़ता की पस जो शख़्स अपनी पैदाइश की इब्तिदा और मौत के बाअ़द दरपेश आने वाले अपने हालात व अन्जाम पर ग़ौरो फ़िक्र करे तो काफ़ी हद तक वो तकब्बुर व खुद पसन्दी से खुद को महफ़ूज़ रख सकता है पस जो लोग मुताकब्बिर और खुद पसन्द हैं उन्हें मज़कूरा कुरान की आयात व अहादीस से इबरत हासिल करना चाहिये कि जब इन्सान पर उसकी हक़ीक़त वाज़ेह और आशकार हो गई तो वो किस चीज़ पर तकब्बुर करता है इन्सान अपनी माँ के रिहम में नुत्फ़े से जमा हुआ खून फिर एक लोथड़ा बना और फिर अल्लाह तआ़ला ने उसकी

हड्डियों का ढांचा बनाया फिर उस पर गोस्त चढ़ाया फिर उसके कान व आँखें और दिल व दीगर आअ़्ज़ा बनाये तो इन्सान को चाहिये कि वो अपनी इब्तिदा पर ग़ौर करे कि वो किस चीज़ से बनाया गया और उसकी हक़ीक़त क्या है और मरने के बाअ़्द वो बेजान और मुर्दार व बदबूदार हो जायेगा और वो जिस मिट्टी से बना उसी मिट्टी में मिल जायेगा तो क्या किसी इन्सान का तकब्बुर करना क्या उसे ज़ैब देता है पस अल्लाह तअ़ाला ने इन्सान की तख़लीक़ की उसको उसकी माँ के रिहम में वक़्त मुक़र्ररा तक महफ़ूज़ रखा और उसे ज़िन्दगी दी और उसे कुव्वत व ताक़त दी और दुनिया में उसे रिज़्क़ और बेशुमार नेअ़्मतें अ़ता फ़रमाईं और उसे सुनने वाला देखने वाला और बोलने वाला बनाया तो जिस अल्लाह तअ़ाला ने ये सब कुछ किया तो वो कैसा ना शुक्रा इन्सान है जो उसी अल्लाह से उसकी सिफ़त तकब्बुर के मुअ़ामले में उससे झगड़ा करता है और अपनी हलाकत का सबब खुद ही बनता है

नुत्फ़ा मनी के क़तरे को कहते हैं जो मर्द की पुश्त और अ़ौरत के सीने की पसली के दरमियान में होता है और मर्द व अ़ौरत के मख़लूत पानी यानी नुत्फ़े से इन्सान की इब्तिदा हुई फिर अ़ौरत के हैज़ के खून से इन्सानी बुजूद बना और मनी व खून ये दोनों ही चीज़ें ग़िज़ा से बनी और ग़िज़ा गोस्त व ज़मीन की पैदावार गल्ला व सब्ज़ियों से हासिल होती है और ज़मीन की पैदावार व गोस्त ज़मीन की मिट्टी से हासिल होता है तो मनी व खून मिट्टी से हासिल होता है पस इसलिये इन्सान को मिट्टी से पैदा किया गया और सब इन्सान हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं और उन्हीं की नस्ल से हम सब पैदा हुये लिहाज़ा उनकी औलाद

याअ़नी हम सब इन्सान मिट्टी से पैदा किये गये और मर्द का पानी सफ़ेद गाढ़ा और औ़रत का पानी पतला और ज़र्द होता है तो जिसका पानी ग़ालिब या तशकील में सबक़त ले जाये तो बच्चा उसी के मुशाबा होता है।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मर्द का पानी सफ़ेद गाढ़ा और औ़रत का पानी पतला और ज़र्द होता है इन दोनों में से जिसके हिस्से को ग़लबा मिल जाये या जो (तशकील) में सबक़त ले जाये तो उसी से बच्चे की मुशाबहत होती है। (मुस्लिम–सहीह–1/411–ह०-710) (इब्ने माजा–सुनन–1/213–ह०-601)

इन्सान का उसकी इब्तिदा से इख़्तिताम तक और मौत के बाअ़द उसके अच्छे बुरे अन्जाम तक तमाम मरहले और उसकी हक़ीक़त पर मुत्तलाअ़ होने और उसकी माअ़रिफ़त हासिल होने के बावुजूद अगर कोई शख़्स तकब्बुर करता है तो गोया वो अल्लाह तआ़ाला के ग़ज़ब और जहन्नम की दहकती हुई आग और सख़्त तरीन अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ और बेपर'वाह है और वो ग़फ़लत के अंधेरों में गुम है जिसे आख़िरत पर कामिल यक़ीन ही नहीं और उसका ईमान निहायत कमज़ोर है इसलिये वो तकब्बुर कर रहा है और जन्नत की बजाए दोज़ख़ का इन्तिख़ाब कर रहा है और वो दोज़ख़ में अल्लाह तआ़ाला की नाराज़गी के साथ दाख़िल होना चाह रहा है इन्सानी वुजूद के अ़लावा कायनात में अल्लाह तआ़ाला की ज़ात व सिफ़ात और तौहीद व किब्रयाई की बेमिस्ल व बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं अगर इन्सान थोड़ा सा भी उन पर ग़ौर करे तो उसे उसकी माअ़रिफत हासिल

हो जायेगी तो फिर खुद के वुजूद की हक़ीक़त उस पर आशकार व नुमायां हो जायेगी तब वो खुद को हक़ारत की नज़र से देखेगा तो फिर इस बात का इमकान है कि वो तकब्बुर और खुद पसन्दी से खुद को महफ़ूज़ रखने में कामयाब हो जाये।

अक्सर लोग अपनी लाइल्मी के सबब इस बात पर ग़ौर नहीं करते कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को किस हक़ीर चीज़ से पैदा फ़रमाया वो हक़ीर चीज़ पानी की बूंद है तो जिसकी अस्ल हक़ीर चीज़ हो तो उसकी क्या औक़ात और क्या हैसियत कि वो मुताकब्बिर और खुद पसन्द हो जाये अल्लाह तआ़ला ने इन्सान पर बेशुमार इनआ़मात और नेअ़मतें अ़ता की और एहसानात किये कि इन्सान को उसकी माँ के रिहम में कुछ अ़रसा नुत्फ़े की शक्ल में रखा कुछ अ़रसा जमे हुये खून की शक्ल में रखा कुछ अ़रसा गोस्त के टुकड़े की सूरत में रखा फिर उसके हाथ, पांव, नाक, कान, आँखें, और दीगर आअ़ज़ा बनाये हत्ता कि उसे इन्सानी सूरत का जामा पहनाया फिर उसके लिये माँ के पेट से पैदा होने का रास्ता आसान फ़रमाया फिर बचपन में उसकी परवरिश की उसको रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया और उसकी दुनियावी ज़रुरियात की तकमील की फिर उसे दुनियावी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी होने के बाअ़द मौत दी ताकि मोमिन होने की सूरत में अबदी ज़िन्दगी और दायमी नेअ़मतों तक पहुँच सके और जन्नत में उसे बेशुमार नेअ़मतों व लज़्ज़तों और आसाइशों से लबरेज़ दायमी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाये पस जो शख़्स जब इन तमाम चीज़ों पर कसरत से ग़ौर करे तो वो कभी अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी व नाशुक्री और तकब्बुर नहीं करेगा फिर भी अगर कोई ना फ़रमानी, नाशुक्री और तकब्बुर करे

तो उस शख़्स पर इन्तिहाई तअ़ाज्जुब है कि वो ऐसा क्यों कर रहा है और इन्सान की मौत भी उसके लिये नेअ़मत है क्योंकि मौत की वजह से उसकी जज़ा का दर‘वाज़ा खुलता है और मोमिन होने की सूरत में उसे उसके नेक आअ़माल के बदले बेशुमार इनाअ़मात और मरातिब और जन्नत अ़ता की जायेगी पस इन्सान को चाहिये कि मज़कूरा बातों पर ग़ौर व फ़िक्र करे ताकि वो अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त की तरफ़ रुजूअ़ करे व तकब्बुर से इजतिनाब करे और अपनी इस्लाह करे ताकि वो अपनी आ़कि़बत उ़म्दाह और बेहतर बना सके

इन्सान के ज़ाहिर व बातिन और उसके हर उ़ज़्ब और हर जुज़ में अल्लाह तअ़ाला की इतनी निशानियाँ मौजूद हैं कि जिनका शुमार करना नामुम्किन है और न ही उनकी शरह बयान की जा सकती है अगर कोई शख़्स अपनी तख़लीक़ के मरहले व अपने जिस्म की बनावट में ग़ौरो फ़िक्र करे तो उस पर ये वाज़ेह हो जायेगा कि हैरत अंगेज़ तख़लीक़ अल्लाह तअ़ाला के सिवा कोई भी नहीं कर सकता और वो अकेला ही कि उसकी इ़बादत व इताअ़त की जाये और किब्र और सारी बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला को ही ज़ेब देती है किसी बन्दे को नहीं

कुरान मजीद की कई आयात में इन्सान की तहक़ीर की तरफ़ इशारा किया गया है कि इन्सान हक़ीर चीज़ याअ़नी मनी से पैदा किया गया जो नजासत के मख़रज से निकलती है मनी अगर इन्सान के जिस्म पर लग जाये तो जिस्म नापाक हो जाता है और अगर कपड़ों पर लग जाये तो कपड़ा नापाक हो जाता है पस जब इन्सान ऐसी हक़ीर चीज़ से पैदा किया गया है तो वो अपनी किस चीज़ पर इतराता और तकब्बुर करता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान का नास हो वो क्यों तकबबुर करता है वो तो एक लाग़री है (याअ़नी कमज़ोर, नाताक़त है) इन्सान का नास हो वो क्यों तकब्बुर करता है जबकि वो तो एक मुर्दार होगा जो गुज़रने वाले को अज़्ज़ियत व तकलीफ़ पहुँचायेगा और इन्सान मिट्टी से पैदा हुआ और मिट्टी में मिल जायेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–2/251–ह०-7783)

तमाम ताअ़रीफ़ें और सारी किब्रयाई सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये सज़ावार है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और आसमानों और ज़मीन में सारी किब्रयाई (बड़ाई) उसी के लिये है और वो ही बड़ा ग़ालिब बड़ी हिकमत वाला हैं। (सूरह–जासिया–45/37)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी बुलन्दी वाला और बड़ाई वाला है। (सूरह–निसा–4/34)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वो अल्लाह ही है कि जिसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं (वो हक़ीक़ी) बादशाह है हर ऐ़ब से पाक है हर नुक़्स से सालिम (व सलमती देने वाला) है अमन व अमान देने वाला है मुहाफ़िज़ व निगेहबान है ग़लबा व इ़ज़्ज़त वाला है ज़बरदस्त अ़ज़मत वाला है सल्तनत व किब्रयाई वाला है अल्लाह तआ़ला हर उस चीज़ से पाक है जिसे वो उसका शरीक ठहराते हैं वो अल्लाह ही है (जो हर

चीज़ का) ठीक अंदाज़े के मुताबिक़ पैदा फ़रमाने वाला है (अ़दम से वुजूद में लाने वाला है) सूरत गरी करने वाला उसी के लिये सारे अच्छे नाम हैं (और) उसी की तस्बीह करती है हर वो चीज़ जो आसमानों में है और ज़मीन में हैं और वो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला, बड़ी हिकमत वाला है। (सूरह–हश्र–59/23, 24)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तमाम आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनमें है (सबकी) बादशाही अल्लाह ही के लिये है और वो हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है। (सूरह–मायदा–6/120)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और फ़रमांदें कि सब ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिसने न तो (अपने लिये) कोई बेटा बनाया और न ही कोई (उसकी) बादशाहत में शरीक बनाया है और न वो कमज़ोर है कि उसे किसी हिमायती या मददगार की ज़रुरत हो (ऐ हबीब) आप उसकी किब्रयाई और बड़ाई खूब बयान करो जिस तरह बड़ाई बयान करनी चाहिये। (सूरह–बनी इसराईल–17/111)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा अगर तुम और वो सब लोग जो ज़मीन में हैं कुफ़्र करने लगें तो बेशक (उन सब से) अल्लाह तआ़ला यक़ीनन बेनियाज़ लायक़े हम्दो सना है। (सूरह–इब्राही–14/08)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक हमने उन लोगों को (भी)

जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई हुक्म दिया है और तुम्हें (भी) कि अल्लाह तआ़ला से डरते रहा करो और अगर तुम नाफ़रमानी करोगे तो बेशक (सब कुछ) उस अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है हम्दो सना और हर ताअ़रीफ़ का मुस्तहिक़ है। (सूरह–निसा–4/131)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ लोगो तुम सब अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है सज़ावारे हम्द व सना है अगर वो चाहे तो तुम्हें नाबूद करदे और नई मख़लूक़ ले आये और ये अल्लाह तआ़ला पर कुछ मुश्किल नहीं है और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी (जान) का बोझ नहीं उठायेगी। (सूरह–फ़ातिर–35/15 ता 18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

उसी का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह तआ़ला ही बे नियाज़ और सज़ावारे हम्द है। (सूरह–हज–22/64)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सब ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जो तमाम जहानों की पर‘वरिश फ़रमाने वाला है निहायत मेहरबान, बहुत रहम फ़रमाने वाला है रोज़े जज़ा का मालिक है।
(सूरह–फातिहा–01/01 ता 03)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सातों आसमान और ज़मीन और वो सारे मौजूदात जो उनमें हैं (वो सब) अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करते रहते हैं और (जुमला कायनात में) कोई भी चीज़ ऐसी

नहीं जो उसकी हम्द के साथ तस्बीह न करती हो मगर तुम उनकी तस्बीह (की कैफ़ियत) को समझ नहीं सकते बेशक वो बड़ा बुर्दबार बड़ा बख़्शने वाला है।
(सूरह–बनी इसराईल–17/44)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
हर वो चीज़ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है (सब) अल्लाह तअ़ाला की तस्बीह करती हैं उसी की सारी बादशाहत है और उसी के लिये सारी ताअ़रीफ़ है और वो हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।
(सूरह–तग़ाबुन–64/01)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
सब ताअ़रीफ़ें अल्लाह तअ़ाला ही के लिये हैं जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है (सब) उसी का है और आख़िरत में भी (सब) ताअ़रीफ़ें उसी के लिये हैं और वो बड़ी हिकमत वाला ख़बरदार है।
(सूरह–सबा–34/01)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जो आसमानों और ज़मीन (और जो कुछ उसमें है सबका) पैदा करने वाला है फ़रिश्तों को जो दो दो और तीन तीन और चार चार परों वाले हैं (उनको) क़ासिद बनाने वाला है और तख़्लीक़ में जिस क़दर चाहता है इज़ाफ़ा फ़रमाता रहता है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।
(सूरह–फ़ातिर–35/01)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
पस अल्लाह तअ़ाला ही के लिये सब ताअ़रीफ़ें हैं जो

आसमानों का रब है और ज़मीन का मालिक है सब जहानों का पर‘वर दिगार है और आसमानों व ज़मीन की सारी किब्रयाई (बड़ाई) उसी के लिये है और वो ही बड़ा ग़ालिब बड़ी हिकमत वाला है।
(सूरह–जासिया–45/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और वही अल्लाह है उसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं दुनिया व आख़िरत में सारी ताअ़रीफ़ें उसी के लिये हैं और (हक़ीक़ी) हुक्म हर जगह उसी का चलता है और तुम उसी की तरफ़ वापस लौटाये जाओगे।
(सूरह–क़सस–28/70)

पस माअ़लूम हुआ कि सारी किब्रयाई (बड़ाई) और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये ही सज़ावार हैं किसी और के लिये नहीं फिर अगर कोई शख़्स लोगों में अपनी बड़ाई बयान करे ताकि लोग उसकी ताअ़रीफ़ और ताअ़ज़ीम व तकरीम करें और लोग उससे सलाम करने में पहल करें और जब वो आये तो लोग उसकी ताअ़ज़ीम के लिये खड़े हो जायें तो ऐसा शख़्स तकब्बुर और खुद पसन्दी के मर्ज़ में मुब्तिला है और वो कम अ़क्ल और बहुत बड़ा बेवकूफ़ है जो अल्लाह तआ़ला की अ़ता के बग़ैर ही लोगों से वो चीज़ तलब कर रहा जो लोगों के पास है ही नहीं सिवाऐ अल्लाह के जबकि वो खुद अल्लाह तआ़ला का मोहताज है बल्कि तमाम कायनात अल्लाह तआ़ला की मुहताज है और अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है और अल्लाह तआ़ला जिसको जो चीज़ जितनी चाहता है अ़ता फ़रमाता है जब इन्सान अपने बुजूद की इब्तिदाई हक़ीक़त पर ग़ौर करता तो वो जान लेता है कि उसकी हैसियत व औक़ात क्या है

मुताकब्बिर शख़्स जब किसी से मुलाक़ात करता है तो वो चाहता है कि लोग मेरे सामने अ़ाजिज़ी व इन्किसारी का इज़हार करें और मेरे साथ ताअ़ज़ीमो तकरीम और निहायत अदब के साथ पेश आयें ताकि लोगों के सामने मेरा मक़ामो मर्तबा ज़ाहिर हो और मालदार मुताकब्बिर अपने बराबर में अपने से कमतर या किसी ग़रीब का बैठना पसन्द नहीं करता क्योंकि वो अपने से कमतर, ग़रीबों को अपने मुक़ाबिल हक़ीर समझता है और खुद को मुअ़ज़्ज़ज़ समझता है और वो चाहता है कि उसके पास मौजूद हर चीज़ लोगों से अच्छी और उ़म्दाह और मंहगी हो ख़्वाह उसका लिबास हो मकान हो या मोटर गाड़ी वग़ैराह हो ताकि इन असबाब की वजह उसकी इ़ज़्ज़त में मज़ीद इज़ाफ़ा हो और वो ये भी चाहता है कि लोग उसकी हर सहीह व ग़लत बातों को तसलीम करें और उसके हुक्म की ताअ़मील करें और ये सब तकब्बुर की अ़लामत है हालांकि वो खुद हक़ बात को कुबूल नहीं करता लेकिन वो चाहता है कि लोग मेरी नाहक़ बात को भी कुबूल करें ये सब फ़ख़्र व तकब्बुर की अ़लामात हैं तकब्बुर कभी इन्सान की हरकात और सकनात के ज़रिये ज़ाहिर होता है और कभी मुख़्तलिफ़ अहवाल व अफ़अ़ाल और अक़वाल से ज़ाहिर होता है

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स ये पसन्द करता हो कि लोग उसके लिये खड़े हो जायें तो उसे चाहिये कि वो अपना ठिकाना दोज़ख़ में बनाले।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/484–ह०-2755)

(अबू दाऊद–सुनन–6887/–ह०-5229)

(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/251–ह०-8160)

(कंजुल उ़म्माल–2/252–ह०-7791)

आख़िरत पर ईमान न रखने वाले मुताकब्बिर

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

तुम सबका माअ़बूद एक ही माअ़बूद है पस जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वो सरकश और मुताकब्बिर हैं। (सूरह–नहल–16/22)

तकब्बुर की बदतरीन ख़सलत की वजह से इन्सान हक़ बात को कुबूल नहीं करता और मुताकब्बिर शख़्स आख़िरत के मुअ़ामले में बेयक़ीनी और बेपर‘वाह होता है और दुनिया पर यक़ीन व मताये दुनिया से इंतिहाई मुहब्बत व रग़वत रखता है और वो दुनियावी उमूर में तवक्कुल के साथ पूरी कोशिश और मुख़्तलिफ़ तदाबीर से काम लेता लेकिन अपनी आख़िरत के मुअ़ामले में ग़ाफ़िल रहता है अल्लाह तअ़ाला मुताकब्बिर शख़्स को दुनिया में भी ज़लील व रुसवा करता और आख़िरत में भी ज़लील व रुसवा करेगा और वो दर्दनाक अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किया जायेगा मुताकब्बिर शख़्स लाख कोशिश करले उसे दुनिया में इ़ज़्ज़त नहीं मिलती क्योंकि दुनिया में इ़ज़्ज़त अल्लाह तअ़ाला के अ़ता करने से ही हासिल होती है और अल्लाह तअ़ाला ने ये वाअ़दा फ़रमाया है कि मैं मुताकब्बिरीन को सख़्त अ़ज़ाब दूँगा और दोज़ख़ में दाख़िल करुँगा चुनांचा अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है–

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

पस तुम दोज़ख़ के दर‘वाज़ों से दाख़िल हो जाओ तुम इसमें हमेशा रहने वाले हो सो तकब्बुर करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है। (सूरह–नह्ल–16/29)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और ये उसका बदला है कि तुम इतराया करते थे तो तुम दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ तुम उसमें हमेशा (हमेशा) रहने वाले हो सो तकब्बुर करने वालों का ठिकाना कितना बुरा है।
(सूरह-मु'मिन/ग़ाफ़िर-40/75,76)

मुताकब्बिर शख़्स खुद को बड़ा और मुअ़ज़्ज़ज़ समझता है मगर कोई उसकी दिल से इ़ज़्ज़त नहीं करता बल्कि हर कोई उससे बुग्ज़ रखता और नफ़रत करता है जब किसी मुताकब्बिर शख़्स पर कोई मुसीबत या परेशानी आती तो लोग उसकी मुसीबत पर खुश होते हैं और तकब्बुर अक्सर लड़ाई झगड़े का बाइस होता है क्योंकि तकब्बुर से इन्सान के अन्दर गुस्सा व हसद पैदा होता है और तकब्बुर एक ऐसी बुरी और मज़मूम सिफ़त है जो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसकी नाराज़गी का बाइस बनती है फिर अल्लाह तआ़ला मख़लूक़ के दिलों में मुताकब्बिर शख़्स के लिये नाराज़ी डाल देता और मख़लूक भी उससे नफ़रत करती है और उसे ज़िल्लत आमेज़ और हक़ारत की नज़र से देखती है

मुताकब्बिर इन्सान न तो अल्लाह तआ़ला को पसन्द है और न ही बन्दों को पसन्द है और इन्सान किसी भी चीज़ पर तकब्बुर करने का हक़ ही नहीं रखता ख़्वाह वो माल व जायदाद हो या हुस्नो जमाल हो या ऊँचा उहदा हो या वो इ़ल्मी लियाक़त के आअ़ला मन्सब पर फ़ाइज़ ही क्यों न हो और जो शख़्स तकब्बुर करता है तो गोया वो खुद ही अपनी हलाकत का सबब बनता है जबकि तवाज़ोअ़ इन्सान की ऐसी सिफ़ते हमीदा है जो उसे दुनिया व आख़िरत में रिफ़अ़त और बुलन्दी देती

है और तवाज़ोअ़ अल्लाह तआ़ला की कुर्बत पाने का बेहतरीन ज़रिया है जबकि तकब्बुर एक ऐसी ख़तरनाक बीमारी है जो मुताकब्बिर को अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और दोज़ख़ के दर्दनाक अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ बना देती है और इन्सान का तकब्बुर उसके लिये आफ़त और वबाले जान होगा और मुताकब्बिर शख़्स को दुनिया व आख़िरत में ज़िल्लत और रुसवाई के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा

तमाम ताअ़रीफ़ें व किब्र और बजुर्गी और बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये मख़सूस व सज़ावार है और उसी की शान को ये ज़ैबा है जब बन्दा खुद को हक़ीर जाने तो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक वो इ़ज़्ज़त वाला होता और जब कोई खुद को बड़ा और अच्छा समझता है तो वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हक़ीर व ज़लील होता है और किसी इन्सान को नहीं माअ़लूम कि उसके गुनाह मुआ़फ़ हुये या नहीं और उसके नेक आअ़माल बारगाहे खुदा वन्दी में मक़बूल हुये या नहीं और किसी को नहीं माअ़लूम कि मौत की सख़्तियों से वो महफ़ूज़ रहेगा या नहीं और किसी को नहीं माअ़लूम क़ब्र में उसके साथ क्या होने वाला है और किसी को भी नहीं माअ़लूम कि रोज़े क़यामत उसका क्या फ़ैसला होने वाला है कि वो दोज़ख़ में जायेगा या वो जन्नत में जायेगा या उसे सवाब मिलेगा या अ़ज़ाब तो जब कुछ भी नहीं माअ़लूम तो फिर तकब्बुर करना और खुद को लोगों से अफ़ज़ल समझना और दूसरों को कमतर और हक़ीर समझना क्या ये अव्वल दर्जे की जाहलियत और बेवकूफ़ी व पागल पन और कम अ़क्ली की दलील नहीं है जबकि अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा किसी नेअ़मत और ताअ़त व इ़बादत पर किसी इन्सान के कमाल व

इख़्तियार को दख़ल ही नहीं जिस पर वो तकब्बुर करे तकब्बुर अल्लाह तआला के नज़दीक इन्तिहाई मबगूज़, नापसन्दीदा और गुनाहे अ़ज़ीम है और ये ऐसा बातिनी अ़मल है जो अल्लाह तआ़ला को भी ना पसन्द और बन्दों को भी ना पसन्द है और इसकी सज़ा दुनिया में भी ज़िल्लत व हक़ारत की शक्ल में इन्सान को मिलती है और आख़िरत में भी मुख़्तलिफ़ सख़्त तरीन अ़ज़ाब की शक्ल में मिलेगी।

इन्सान का अपना वुजूद और उसके दुनियावी व दीनी जुमला नेअ़मते व उसके तमाम अच्छे मुआ़मलात सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला फ़ज़्लो करम से हैं और बुरे मुआ़मलात शैतान व उसके नफ़्स की तरफ़ से हैं जब बन्दा कोई नेकी करे या उसे कोई नेअ़मत मयस्सर आये तो उसे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करे और वो उस पर अल्लाह तआ़ला की हम्द के साथ अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और जब शर व बुराई देखे तो अपने नफ़्स व शैतान की तरफ़ मन्सूब करे और वो उस पर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और किसी अम्र व फ़ेअ़ल में ये समझना कि मेरी अ़क़्ल व तदबीर और क़ाबलियत व सलाहियत का कमाल है और उस पर फ़ख़्र और तकब्बुर करना या खुद पसन्दी में मुब्तिला होना तो ये बाइसे हलाकत और आफ़त और वबाले जान है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किब्रयाई अल्लाह तआ़ला की चादर है और इ़ज़्ज़त उसकी इज़ार और कमीस उसकी रहमत तो जो शख़्स इ़ज़्ज़त बनाये, बग़ैर उसके जो अल्लाह तआ़ला ने उसको इ़ज़्ज़त दी हुई है

तो उसको ये कहा जायेगा कि चख तू अ़जाब को और जो शख़्स लोगों पर रहम करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस पर रहम करेगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से उसकी किब्रयाई (बड़ाई) की चादर छीनने की कोशिश करेगा जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के शायाने शान है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ये बात मुनासिब नहीं कि मैं उसको जन्नत में दाख़िल करूँ याअ़नी वो दोज़ख़ में जायेगा। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/251–ह०-8159)

कुरान में ग़ौरो फ़िक्र व उससे नसीहत हासिल करने वाले तकब्बुर नहीं करते

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
पस हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें उन (आयतों) के ज़रिये नसीहत की जाती है तो वो सज्दा करते हुये गिर जाते हैं और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और वो तकब्बुर नहीं करते। (सूरह–सज्दा–32/15)

दीनी ऐतबार से आज मुसलमानों के हालात बद से बद तर हो चुके हैं लोगों में कुरान व दीनी उ़लूम पढ़ने व सीखने की रग़बत न रही और आख़िरत के मुआ़मले में ग़फ़लत और बेपरवाही अपनी इंतिहां को पहुँच चुकी है यहाँ तक कि कुरान का पढ़ना व सीखना औ़रतों के मख़्सूस व महदूद कर दिया गया और मर्दों की क़लील ताअ़दाद ऐसी रह गई जो कुरान की ताअ़लीम हासिल करते हैं और उन चन्द लोगों में कि जिन्होंने कुरान की ताअ़लीम हासिल की है उनमें अक्सर कुरान को तरजुमे के ज़रिये कुरान की आयात पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और न ही उससे नसीहत हासिल करते हैं जबकि दीनी

उलूम का सीखना हर मुसलमान मर्द औ़रत पर फ़र्ज़ है मगर शैतान व नफ़्सानी ख़्वाहिशात उनके ऊपर इतनी ग़ालिब आ चुकी है कि वो दुनिया को हक़ीक़ी ज़िन्दगी तसव्वुर करते हैं और उसी की तैयारी में और उसको बेहतर बनाने में दिन रात मेहनत व मशक़्क़त उठाते हैं और उसके लिये बहुत कोशिश व तदाबीर करते रहते हैं काश अगर लोग दीनी उ़लूम व कुरान की ताअ़लीम हासिल करते और उनके अहकामात पर ग़ौर व फ़िक्र करते और उससे नसीहत कुबूल करके उस पर अ़मल करते तो आज मुसलमानों की हालत बदतर न होती।

अक्सर मुसलमानों का शर व गुनाहों में मुब्तिला रहना और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इताअ़त के बजाए नाफ़रमानी करना इसकी सबसे बड़ी वजह ये है कि मुसलमान के पास दीनी उ़लूम का न होना है और दूसरी बड़ी वजह उ़ल्माओं के ज़रिये ज़रुरियाते ज़िन्दगी से मुताअ़ल्लिक़ दीनी उ़लूम मुसलमानों तक न पहुँचाना भी शामिल है आजकल जलसों व मजलिसों में चन्द रटे रटाये उस महीने की मुनासिबत से मौज़ूआ़त व दीगर उ़ल्माओं की ऐ़ब जोई और उनकी बुराई पर मुश्तमिल जज़्बाती तक़रीरें की जाती हैं और वो इ़ल्म व नसीहत अ़वाम तक नहीं पहुँचती जो उनके लिये निहायत ज़रुरी है ताकि वो हर उस काम से इजतिनाब करते जिसको अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ने मनाअ़ फ़रमाया और हर वो काम बजा लाते जिनका उन्हें ताकीदी हुक्म दिया गया याअ़नी तमाम अवामिर व नवाही में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त करते और अल्लाह तआ़ला की हम्द व उसके ज़िक्र व उसके शुक्र से अपनी ज़बानों को तर रखते और अल्लाह तआ़ला और उसके

रसूल की इताअ़त की तरफ़ रुजूअ़ करते और जज़्बाती ग़ैर नाफ़ेअ़ और लोगों को खुश करने व खुद की वाह वाही और ताअ़रीफ़ की ग़रज़ से की गई तक़रीर किसी को कुछ नफ़अ़ नहीं देती और न ही किसी को नसीहत और न ही आख़िरत की फ़िक्र पैदा करती है हाँ मौलवी साहब के नज़राने की मिक़दार को ज़रुर बढ़ा देती है जबकि उ़ल्माओं को चाहिये कि वो उ़लूम मुसलमानों को पहुँचाये जो उनके लिये नसीहत आमेज़ हों व लोगों को अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसके मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सख़्त तरीन अ़ज़ाब से लोगों को डरायें ताकि लोगों के दिलों में ख़ौफ़े इलाही पैदा हो और लोगों को मौत की सख़्तियों और क़ब्र के सख़्त अ़जाब़ और क़यामत की वहशतनाक हौलनाकियों व निहायत दर्दनाक अ़ज़ाब से डरायें और दोज़ख़ के बयानात से लोगों के दिलों में दोज़ख़ की दहकती हुई आग के शोअ़लों का ख़ौफ़ पैदा करें ताकि वो शर और बुराई का रास्ता छोड़कर नेकी के रास्ते पर गामज़न हो जायें

जैसा कि देखने में आता है कि बाअ़ज़ लोग ऐसे भी हैं कि वो हज़ारों गुनाह करके भी अपने गुनाहों पर कभी नादिम भी नहीं होते और मज़ीद उन गुनाहों में इज़ाफ़ा करते चले जाते हैं क्योंकि उनके दिलों में न तो अल्लाह का ख़ौफ़ है और न ही अपनी आख़िरत के अन्जाम का डर बल्कि वो तो अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में इतने बे फ़िक्र और बे पर‘वाह हैं कि मानों उन्हें कभी मौत ही नहीं आयेगी तकब्बुर, खुद पसन्दी और रियाकारी ये ऐसी बातिनी बुराई और गुनाह हैं कि जो दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी हैं मगर अक्सर लोग इनसे परहेज़ नहीं करते बल्कि ये बातिनी बुराइयाँ दिन बा दिन बहुत तेज़ी के साथ बढ़ती चली जा रही हैं इससे निजात का

सिर्फ़ एक ही तरीक़ा है कि मुसलमान का कुरानो सुन्नत पर ग़ौर व फ़िक्र करना और उनसे नसीहत व इ़बरत हासिल करके उस पर अ़मल करना है

माल, जायदाद, औलाद, अ़क़्ल, हुस्नो जमाल, इ़ल्म बड़ा उहदा, जाह व मन्सब वग़ैराह में खुद को दूसरों से बड़ा और दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझना बड़ा गुनाह है क्योंकि ये सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतें हैं और बन्दों को सिर्फ़ आ़रज़ी तौर पर आज़माइश व इस्तेअ़माल के लिये अ़ता की हैं और वो जब चाहे तब वापस लेने पर भी क़ादिर है वरना कुछ वक़्त के बाअ़द मौत यक़ीनन इन सब चीज़ों को बन्दे से छीन लेगी और उसे मिट्टी में मिला देगी तो फिर बन्दा किस बात पर तकब्बुर करता है अगर बन्दा हर वक़्त ये बात ज़हन नशीन रखे कि कायनात की हर शैः का ख़ालिक़ और मालिक सिर्फ़ और सिर्फ़ पर'वर दिगार है इन्सान के पास जो कुछ भी मयस्सर है यहाँ तक कि उसके जिस्म और उसकी जान का भी मालिक वही है तो इन्सान के बातिन से तकब्बुर व खुद पसन्दी निकल जायेगी और तवाज़ोअ़ पैदा होने का इमकान है

जब कोई शख़्स नेक अ़मल पर तकब्बुर करता है या खुद पसन्दी का शिकार हो जाता है तो क्या उस अ़मल की कुबूलियत की उसे इत्तेलाअ़ मिल जाती है जिस पर वो मुताकब्बिर या खुद पसन्द हो जाता है हालांकि जब कोई शख़्स नेक अ़मल करता है तो उसे नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मिलती वरना कोई चाहकर भी नेक अ़मल नहीं कर सकता बाअ़ज़ ऐसे होते हैं कि वो लोगों के सामने खुद को तवाज़ोअ़ की सिफ़त से मौसूफ़ पेश करते हैं मगर उनके दिल में

ये ख़्याल मौजें मारता है कि वो औरों से बढ़कर हैं तो ये तकब्बुर शदीद तर है तकब्बुर व खुद पसन्दी कभी दिल में होती है कभी ज़ाहिर होती है तकब्बुर व खुद पसन्दी एक ऐसी ख़तरनाक बीमारी है कि अक्सर लोग इसमें मुब्तिला होकर भी खुद को मुताकब्बिर और खुद पसन्द नहीं समझते बल्कि जिसके अन्दर जितना ज़्यादा ये मर्ज़ होगा वो उतनी ही इसकी नफ़ी करते हैं और वो इससे बेफ़िक्र रहते हैं जैसे कि मौत का यक़ीन होने के बाद भी लोग अपनी आख़िरत के लिये कोई तैयारी नहीं करते और सफ़रे आख़िरत के लिये कोई तोशा व सरमाया जमाअ़ नहीं करते और न ही अपनी मौत को याद करते हैं मौत को याद न करना दिल की सख़्ती और ग़फ़लतों की बुनियाद है।

जब बन्दा अपने आअ़माल व अफ़आ़ल और अक़वाल को अच्छा ख़्याल करे और तकब्बुर व खुद पसन्दी का एहसास न कर पाये तो उसे फ़िक्र करने की ज़रुरत ही क्या है जबकि वो दूसरों में तकब्बुर की ख़सलत को फ़ौरन जान लेता है लेकिन खुद में तकब्बुर और खुद पसन्दी की अ़लामत को नहीं जान पाता इसकी वजह ये है कि वो खुद का मुहासिबा नहीं करता बस लोगों के ऐ़ब और बुराइयों और गुनाहों को देखता है अगर वो खुद की बुराइयाँ और ऐ़ब देखने लगे तो वो दूसरे के ऐ़बों और बुराइयों से ज़्यादा खुद के ऐ़बों और बुराइयों को जान लेगा मगर इन्सान हमेशा दूसरे लोगों के ऐ़बों और बुराइयों का मुतलाशी रहता है इसलिये उसे अपनी बुराइयाँ नज़र नहीं आतीं अल्लाह तआ़ला हम सब पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाये और तमाम मुसलमानों को तकब्बुर व खुद पसन्दी से महफ़ूज़ रखे और कसरत से नेक आअ़माल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये।

कज़्ज़ाब व सियाह कार मुताकब्बिर के लिये सख़्त अ़ज़ाब की बिशारत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
हर कज़्ज़ाब (और) बड़े सियाह कार के लिये हलाकत है जो अल्लाह तआ़ला की (उन) आयतों को सुनता है जो उस पर पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती हैं फिर तकब्बुर करते हुये इसरार करता है कि गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं तो आप उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की बिशारत दे दें और जब उसे हमारी कुरआनी आयात में से किसी चीज़ का इल्म हो जाता है तो उसे मज़ाक़ बना लेता है तो ऐसे ही लोगों के लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है उन के (अ़रसा-ए-हयात के) बाद दोज़ख़ है और जो (माले दुनिया) उन्होंने कमा रखा है वो उनके कुछ काम नहीं आयेगा। (सूरह-जासिया-45/07 ता 10)

-: मुताकब्बिरीन आग के सन्दूक में :-

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक मुताकब्बिरीन रोज़े क़यामत आग के सन्दूकों में बन्द करके मुन्तक़िल किये जायेंगे। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-6/256-ह०-8186)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि बेशक मुताकब्बिर लोग क़यामत के दिन आग के ताबूतों में बन्द करके आग के निचले तबक़े में दाख़िल किये जायेंगे।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-6/256-ह०-8187)

-: तकब्बुर न करने का ताकीदी हुक्म :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग खाओ पिओ और लिबास पहनो और सद्क़ा करते रहो मगर फ़िज़ूल ख़र्ची और तकब्बुर न करो।
(इब्ने माजा-सुनन-3/166-ह०-3605)
(नसाई-सुनन-2/165-ह०-2563)
(मुस्नद अहमद-3/564-ह०-6695)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खाओ, पिओ, पहनो और सद्क़ा करो लेकिन इसराफ़ (फ़िज़ूल खर्ची) और फ़ख़्र व तकब्बुर न करो। (बुख़ारी-सहीह-5/493)

➡ हज़रत इ़याज़ बिन हिमार रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर वही की है कि मैं तुम लोगों को हुक्म दूँ फिर आपने फ़रमाया तुम लोग तवाज़ोअ़ व इन्किसारी इख़्तियार करो और कोई शख़्स किसी दूसरे पर फ़ख़्र न करे और न ही किसी पर जुल्म करे।
(मुस्लिम-सहीह-5/365-ह०-7210)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तकब्बुर से बचो क्योंकि बन्दा तकब्बुर करता रहता है हत्ता कि अल्लाह

तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे को मुताकब्बिरीन में शुमार करलो। (कंजुल ऊ़म्माल–2/246–ह०-7729)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग तकब्बुर से बचना क्योंकि इब्लीस (शैतान) को तकब्बुर ने ही (आदम अ़लैहिस्सलाम) को सज्दा करने से रोका था और हिर्स (लालच, ख़्वाहिश) से बचना क्योंकि हिर्स ने आदम (अ़लैहिस्सलाम) को (ममनूअ़) दरख़्त का फल खाने पर मजबूर किया था और हसद से बचना क्योंकि आदम (अ़लैहिस्सलाम) के दो बेटों में से एक ने अपने भाई को हसद की वजह से ही क़त्ल किया था तकब्बुर व हिर्स और हसद हर बुराई की जड़ हैं।
(कंजुल ऊ़म्माल–2/247–ह०-7734)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास एक देहाती आदमी आया जिसने बड़ा क़ीमती जुब्बा पहना हुआ था जिस पर दीबाज व रेशम के बटन लगे थे उसे देखकर आपने गुस्से से खड़े होकर उसके जुब्बे को मुख़्तल्फ़ि हिस्सों को पकड़कर जमाअ़ किया और फिर फ़रमाया कि मैं तुम्हारे जिस्म पर बेवकूफ़ों का लिबास देख रहा हूँ फिर आपने फ़रमाया कि हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो उन्होंने अपने दोंनों बेटों से फ़रमाया मैं तुम्हें एक वसीयत करता हूँ जिसमें तुम्हें दो बातों का हुक्म देता हूँ और दो बातों से रोकता हूँ शिर्क और तकब्बुर की मुमानियत करता हूँ और तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूँ कि ''लाइलाहा

इल्लल्लाहु'' का इक़रार करते रहना क्योंकि अगर सातों आसमानों और ज़मीन को एक तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाये और लाइलाहा इल्लल्लाहु को दूसरे पलड़े में ''लाइलाहा इल्लल्लाहु'' वाला पलड़ा झुक जायेगा और अगर सातों आसमानों और तमाम ज़मीन एक मुब्हम हल्क़ा याअ़नी गोल अंगूठी की मानिन्द होती और उस पर ''लाइलाहा इल्लल्लाहु'' के अल्फ़ाज़ रखे जायें तो वो उसे तोड़ देगी या टुकड़े टुकड़े कर देगी और दूसरी बात ये कि ''सुब्हानल्लाहि वबिहम्दिही'' का विर्द करते रहना ये हर चीज़ की दुआ़ है और इसके ज़रिये हर मख़्लूक़ को रिज़्क़ मिलता है।
(मुस्नद अहमद–3/694–ह०-7101)

किसी का मज़ाक़ उड़ाना या उसे हक़ीर जानना गुनाह है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या आपके रब की रहमते (नबूव्वत) को ये तक़सीम करते हैं हमने ही उनके दरमियान दुनियावी ज़िन्दगी की रोज़ी उनमें तक़सीम की है और हम ही ने उनमें से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर (वसाइल व दौलत में) दरजात की फ़ौक़ियत दी है (क्या हम ये इसलिये करते हैं) कि उनमें से बाअ़ज़ (जो अमीर हैं) बाअ़ज़ (ग़रीबों) का मज़ाक़ उड़ायें और आपके रब की रहमत उस (दौलत) से बेहतर है जिसे वो जमाअ़ करते (व तकब्बुर करते) हैं। (सूरह–ज़ुख़रुफ़–43/32)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो कोई क़ौम किसी भी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये मुम्किन है वो लोग उन (मज़ाक़ उड़ाने वालों) से

बेहतर हों और न औ़रतें ही उन दूसरी औ़रतों का मज़ाक़ उड़ायें) मुम्किन है वो औ़रतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली औ़रतों) से बेहतर हों और न आपस में ताअ़ना ज़नी व इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान लाने के बाअ़द उसे फ़ासिक़ और बद किरदार कहना बहुत बुरा नाम है और जिसने तौबा न की सो वही लोग ज़ालिम हैं। (सूरह–हुजुरात–49/11)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी की तबाही के लिये सिर्फ़ इतनी बुराई ही काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने।
(इब्ने माजा–सुनन–3/376–ह०-4213)

अल्लाह के नज़दीक इ़ज़्ज़त वाला वो है जो परहेज़गार है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़तह मक्का के दिन खुत्बा दिया और फ़रमाया कि ऐ लोगो बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुमसे ज़माना जाहलियत के बोझ को उतार दिया है और तुम्हारे बाप दादा की बड़ाई और तकब्बुर को ख़त्म कर दिया है अब लोगों की दो क़िस्में हैं एक नेक परहेज़गार जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इ़ज़्ज़त वाले हैं व दूसरे फ़ाजिर बदबख़्त हैं जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़लील हैं तमाम लोग आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहिस्सलाम

को मिट्टी से पैदा किया था अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ‘‘ऐ लोगो हमने तुमको एक मर्द और एक औ़रत से पैदा फ़रमाया और हमने तुम्हें (मुख़्तलिफ़) क़ौमों और क़बीलों में (तक़सीम) किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको बेशक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुममें से सबसे ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला वो है जो सबसे ज़्यादा परहेज़ गार हो बेशक अल्लाह ताला खूब जानने वाला खूब ख़बर रखने वाला है’’। (सूरह–हुजूरात–49/13) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/815–ह०-3270)

इस्लाम के अ़लावा जो इ़ज़्ज़त तलाश करे उसे ज़िल्लत मिलेगी

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि ऐ लोगो तुम सब लोगों में से ज़लील तरीन लोग थे और सब लोगों में से हक़ीर तरीन लोग थे और क़लील तरीन लोग थे अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें इस्लाम की बदौलत इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई लिहाज़ा तुम जब भी इस्लाम के अ़लावा (किसी और शैः से) इ़ज़्ज़त तलाश करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें ज़िल्लत से दो चार कर देगा (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/258–ह०-8196)

–: बुरा है वो बन्दा जो तकब्बुर करे :–

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बुरा है वो बन्दा जिस ने तकब्बुर किया और उस बड़ी बुलन्द ज़ात को भूल गया बुरा है वो बन्दा जिसने जुल्म व ज़्यादती की और वो ग़ालिब व आअ़ला ज़ात को भूल गया और बुरा है

वो बन्दा जो क़ब्रों व अपने बोसीदा होने को भूल गया और खेल कूद में मशग़ूल रहा और बुरा है वो बन्दा जिसने तकब्बुर किया और सरकशी की और वो अपने आगाज़ व अन्जाम को भूल गया और बुरा है वो बन्दा जो दीन के बदले दुनिया तलब करता है और बुरा है वो बन्दा जो शहबात के ज़रिये दीन को ख़राब करता है और बुरा है वो बन्दा जिसे तमाअ़ व हिर्स खींच ले जाती है और बुरा है वो बन्दा कि ख़्वाहिश उसे गुमराह कर देती है और बुरा है वो बन्दा कि जिसे दुनिया की रग़बत ज़लील कर देती है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/266–ह०-2448)
(मिश्कात–3/145–ह०-5115)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/255–ह०-8181)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि अल्लाह तआ़ला का बदतरीन बन्दा कौन है आपसे अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें तो आपने फ़रमाया हर बद मिज़ाज और मुताकब्बिर।
(मुस्नद अहमद–10/827–ह०-23850)

अल्लाह तआ़ला ही हक़ीक़ी बादशाह है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि मैंने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना कि आप मिम्बर पर थे और आपने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला आसमानों को लपेट लेगा और उन्हें अपने दाहिने हाथ में लेगा और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी मुट्ठी बंद करली फिर खोली फिर बन्द की फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मैं ही बादशाह हूँ मैं ही जब्बार हूँ कहाँ हैं दूसरे जाबिर कहाँ हैं दूसरे तकब्बुर करने वाले जो अपने आप को जब्बार समझते थे फिर ज़मीनों को लपेट लेगा और उन्हें दूसरे हाथ में पकड़ेगा और फ़रमायेगा मैं ही बादशाह हूँ कहाँ हैं जाबिर कहाँ हैं तकब्बुर करने वाले और ये फ़रमां कर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) झुकते थे दायीं और बांयी तरफ़ यहाँ तक कि मैंने देखा कि वो मिम्बर नीचे से हिलता था।
(अबू दाऊद–सुनन–4/591–ह०-4732)
(इब्ने माजा–सुनन–1/101–ह०-198, 4275)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने आपको बड़ा समझे और अपनी चाल में इतराये तो जब वो अल्लाह तआ़ला के हुजूर पेश किया जायेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे सख़्त नाराज़ होगा।
(कंजुल ऊ़म्माल–2/251–ह०-7784)

तकब्बुर करने वाला कुत्ते व खिंजीर से ज़्यादा ज़लील है

➡ हज़रत ऊ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द करेगा अगरचा वो अपने–

नफ़्स व ज़ात में कमज़ोर होगा लेकिन लोगों की नज़रों में वो बड़ा होगा और जो तकब्बुर करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे पस्त कर देगा और वो लोगों की नज़रों में हक़ीर होगा अगरचा वो अपनी ज़ात में बड़ा हो हत्ता कि वो उनके नज़दीक कुत्ते और खिंजीर से भी ज़्यादा ज़लील होगा। (कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5737, 5738) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/247–ह०-8139, 8140)

–: तकब्बुर करने वालों का अन्जाम :–

➡हज़रत काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत तमाम मग़रुर व मुताकब्बिर लोग मुर्दों की सूरत में ज़र्रों की मिस्ल पैदल चलाकर जमाअ़ किये जायेंगे व उनके पास हर तरफ़ से ज़िल्लत आ जायेगी और वो लोग आगों की आग में चलाये जायेंगे और उन्हें दोज़ख़ियों की पीप और पसीना पिलाया जायेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/256–ह०-8184, 8185)

अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वालों से नफ़रत करता है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला नफ़रत करता है एक वो ताजिर जो क़स्में खाता है दूसरा वो बख़ील कि जो एहसान जताता है व तीसरा वो फक़ीर जो मुताकब्बिर है। (मुस्नद अहमद–10/185–ह०-21863)

तकब्बुर रसूलुल्लाह से दूरी का बाइस

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम में से मेरे नज़दीक और बहुत प्यारे और बहुत क़रीब बैठने वाले वो लोग हैं जिनके अख़लाक़ अच्छे हैं और तुममें से रोज़े क़यामत मेरे ज़्यादा दुश्मन और दूर तर बैठने वाले बड़े बातूनी और बढ़ाई मारने वाले बकवास करने वाले बद अख़लाक़ मुताकब्बिर हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1074–ह०-2018)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/603–ह०-485)
(मुस्नद अहमद–7/322–ह०-17884)

अल्लाह तआ़ला सर उठाने वाले को नीचा दिखाता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबाह अल्लाह तआ़ला पर ये हक़ है कि दुनिया में जो सर उठाता है तो अल्लाह तआ़ला उसे नीचा दिखाता है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/646–ह०-4803

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर बन्दे के सर में एक दर्जा बुलन्दी व पस्ती एक फ़रिश्ते के हाथ में होती है जब वो तवाज़ोअ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे

बुलन्द करता है और वो फ़रिश्ता कहता है कि अल्लाह तआ़ला तुझे बुलन्द करे और जब वो तकब्बुर के सबब सर उठाता है तो अल्लाह तआ़ला उसे पस्त करता है और फ़रिश्ता कहता है कि अल्लाह तआ़ला तुझे पस्त करे। (कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5743, 5744)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला ने खुद पर ये लाज़िम कर लिया है कि दुनिया में वो किसी चीज़ को बुलन्द करता है तो उसे नीचे भी लाता है। (बुख़ारी–सहीह–6/84–ह०-6501)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302–ह०-10510, 10511)
(इब्ने अबी शैबा–10/458–ह०-35462)

➡ हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोग जिस चीज़ को भी बुलन्द करते हैं अल्लाह तआ़ला उसे पस्त करते हैं। (कंजुल उ़म्माल–2/248–ह०-7762)

–: इज़हारे नेअ़मत में तकब्बुर न हो :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तकब्बुर व इसराफ़ (फ़िज़ूल ख़र्ची) से बचते हुये खाओ पिओ और सद्क़ा करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर अपनी नेअ़मतों का असर देखना पसन्द फ़रमाता है।
(मुस्नद अहमद–2/603–ह०-672)

आअ़माल पर तकब्बुर न करो कोई भी आअ़माल के सबब जन्नत में न जायेगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई एक भी ऐसा नहीं है जिसको उसका अ़मल निजात दे सके लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आप भी अपने अ़मल के साथ निजात नहीं पा सकते आपने फ़रमाया कि मैं भी निजात नहीं पा सकता मगर ये कि अल्लाह तआ़ाला अपनी रहमत के साथ मुझे ढाँप लेगा।
(मुस्लिम–सहीह–6/372-ह०-7113)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/130-ह०-4625)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ाला की रहमत तुम्हारे आअ़माल की निस्बत ज़्यादा यक़ीनी होना चाहिये इसलिये कि कोई निजात पाने वाला हरगिज़ निजात नहीं पायेगा लेकिन अल्लाह तआ़ाला की रहमत के साथ और हरगिज़ कोई हलाक नहीं होगा मगर अपने अ़मल के साथ।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/129-ह०-4621)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोगों को तीन दफ़्तरों पर पेश किया जायेगा एक दफ़्तर (रजिस्टर) जिसमें नेकियाँ होंगी और एक दफ़्तर जिसमें नेअ़मतें होंगी और एक दफ़्तर कि जिसमें गुनाह होंगे पस नेअ़मतों वाले दफ़्तर को नेकियों वाले दफ़्तर

के मुक़ाबिल लाया जायेगा चुनांचा नेकियाँ नेअ़मतों के बदले फ़ारिग़ हो जायेंगी और सिर्फ़ गुनाह और ख़तायें बाक़ी रह जायेंगी कि जो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर होंगी फिर अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे उसे अ़ज़ाब दे और जिसको चाहे उसे मुआ़फ़ कर दे।
(इब्ने अबी शैबा–10/518-ह०-35688)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी शख़्स का अ़मल उसे हरगिज़ जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आपका अ़मल भी नहीं तो आपने फ़रमाया नहीं मेरा अ़मल भी नहीं मगर ये कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपने फ़ज़्लो करम से नवाज़ेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/439–ह०-5673)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत बनी आदम के तीन रजिस्टर लाये जायेंगे एक रजिस्टर में उनके नेक अ़मल और एक रजिस्टर में उनके गुनाह व एक रजिस्टर में अल्लाह तआ़ला की नेअ़मते होंगी जो कि उन्हें दुनिया में अ़ता की गईं थीं फिर नेअ़मतों के रजिस्टर में से सबसे छोटी नेअ़मत से अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि अपने ऐवज़ (बदले) में नेक अ़मल लेलो तो वो नेअ़मत तमाम नेक आअ़माल को घेर लेगी और फिर वो नेअ़मत कहेगी तेरी इज़्ज़त की क़सम कि मैंने अभी पूरा हक़ नहीं लिया तो फिर उनके गुनाह बाक़ी रह जायेंगे और उनके तमाम नेक आअ़माल ख़त्म हो

जायेंगे फिर जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे पर अपने फ़ज़्लो करम का इरादा फ़रमायेगा तो कहेगा मेरे बन्दे मैंने तेरी नेकियों में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया है और तेरे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये और अपनी नेअ़मतें तुझे अ़ता कर दीं। (तफ़्सीर मज़हरी–9/-486)
(हिल्यातुल औलिया–5/-195)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं अगर तुम रहती दुनिया तक ज़िन्दा रहो व नेक अ़मल करते रहो फिर भी तुम अपने अ़मल की बदौलत जन्नत के मुस्तहिक़ नहीं हो सकते बल्कि ये तो उसी का रहम व करम होगा कि जिसकी वजह से तुम पर रहम किया जायेगा और उसके रहम की वजह से तुममें से अ़द्ल पसंद लोग जन्नत में जायेंगे।
(हिल्यातुल औलिया–1/84-240)

तकब्बुर, ख़्यानत और क़र्ज़ से बरी होकर मरने वाला जन्नती

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स तकब्बुर व ख़्यानत और क़र्ज़ से बरी होकर मरा तो वो जन्नत में दाख़िल हुआ। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/187–ह०-1572)

ये चन्द बातें जिसमें हों वो तकब्बुर से बरी है

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अपना सामान खुद उठाया व जिसने अपनी बकरी का दूध दूह लिया और अपने कपड़े पर पैबन्द लगा लिया व अपना जूता खुद गाँठ लिया और अपने गुलाम के साथ खाना खाया और गधे की सवारी की तो वो तकब्बुर से बरी और महफ़ूज़ हो गया इंशा अल्लाह उसके दिल में गुरुर व तकब्बुर नहीं रहेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1066–ह०-2001)
(कंजुल उ़म्माल–2/252–ह०-7793, 7794, 7796, 7797)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/357–ह०-8188, 8189, 8201)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/143–ह०-6161)

–: सद्क़ा तकब्बुर से दूरी का बाइस :–

➡ हज़रत अम्र बिन औफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुसलमान का सद्क़ा उसकी उ़म्र में ज़्यादती का बाइस है और बुरी मौत से बचाता है और अल्लाह तआ़ला इसकी वजह से फ़ख़्र व तकब्बुर को दूर फ़रमाता है।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–3/214–ह०-4609)

सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी होता है।
(मिश्कात–3/20–ह०-4666)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/367–ह०-8785)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पहले सलाम करने वाला अल्लाह तआ़ाला के ज़्यादा क़रीब होता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/454–ह०-2694)
(अबू दाऊद–सुनन–6/870–ह०-5197)

मुसलमानों में से बाअ़ज़ की बद आअ़माल करने की पेशीन गोई

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है मेरी उम्मत में से एक गिरोह तकब्बुर व सरकशी और खेलकूद में रात गुज़ारेंगे जब सुबह होगी तो उनकी शक्लें बन्दरों और ख़िंजीरों की शक्लों में बदल चुकी होंगी क्योंकि वो लोग हराम चीज़ों को और गाने वालीयों को हलाल समझेंगे और शराब पियेंगे और सूद खायेंगे और रेशम पहनेंगे इसकी वजह से वो बन्दर और ख़िंजीर बन जायेंगे।
(मुस्नद अहमद–10/614–ह०-23176)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़न क़रीब मेरी उम्मत को बीमारियाँ लगेंगी सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल वो बीमारियाँ क्या हैं तो आपने फ़रमाया सरकशी, तकब्बुर बुग्ज़ व इ़नाद और दुनिया में मुक़ाबला, गुस्सा व बुख़्ल बग़ावत फिर क़त्ल। (मुअ़जम औसत–7/80–ह०-6016)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि काश मुझे माअ़लूम हो जाता कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत कैसे रहेगी जब उसके मर्द मुताकब्बिराना चाल चलेंगे व औ़रतें फ़ख़्र करेंगी और जब ये दो हिस्सों में तक़सीम हो जायेगी एक गिरोह अल्लाह की राह में अपना सीना पेश करेगा और मेरी उम्मत का एक गिरोह ग़ैरुल्लाह के लिये काम करेगा। (कंजुल उ़म्माल–7/424–ह०-38466)

–: ताअ़मीरात वबाल है :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर ताअ़मीर (मकानात वग़ैराह) अपने मालिक के लिये वबाल का बाइस है सिवाए उसके जिसके बग़ैर चारा न हो। (याअ़नी जो लोग तकब्बुर और दिखावा करने के सबब ग़ैर ज़रुरी मकानात की ताअ़मीर करते हैं उनके लिये ताअ़मीरात वबाल है) (अबू दाऊद–सुनन–4/892–ह०-5237)

फ़ख़्र के तौर पर मस्जिदों को आरास्ता करने की मुमानियत

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये भी क़यामत की निशानी है कि क़यामत के क़रीब लोग मस्जिदों पर एक दूसरे पर फ़ख़्र करेंगे एक रिवायत में है क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि लोग मस्जिदों पर फ़ख़्र न करने लगें (यानी लोग तकब्बुर की नीयत

से एक दूसरे से बढ़कर उ़म्दाह उ़म्दाह मस्जिदें ताअ़मीर करेंगे व उन्हें खूब आरास्ता करेंगे और उनका मक़सद रिज़ाए इलाही न होगा)। (नसाई–सुनन–1/236–ह०-692) (इब्ने माजा–सुनन–1/261–ह०-739)
(अबू दाऊद–सुनन–1/377–ह०-449)
(इब्ने अबी शैबा–1/573–ह०-3163)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे बाअ़द अपनी मस्जिदों को बुलन्द और बाला ताअ़मीर करोगे और उन्हें इस तरह सजाओगे कि जिस तरह यहूद व नसारा अपने इ़बादत खानों को आरास्ता करते हैं। (इब्ने माजा–सुनन–1/261–ह०-740)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–2/422–ह०-5131)
(इब्ने अबी शैबा–1/574–ह०-3165, 3170)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे मस्जिदों की इमारतों को बुलन्द करने और उन्हें आरास्ता करने का हुक्म नहीं दिया गया।
(अबू दाऊद–सुनन–1/376–ह०-448)
(इब्ने अबी शैबा–1/574–ह०-3164)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–2/422–ह०-5127)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जब लोग अपनी मसाजिद को आरास्ता करेंगे तो उनके आअ़माल फ़ासिद (ख़राब) हो जायेंगे।
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–2/423–ह०-5134)

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस क़ौम का अ़मल ख़राब हो जाये फिर वो मस्जिदों को आरास्ता, मुज़य्यन करना शुरु कर देती है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/261–ह०-741)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी की छत खजूर की ऐसी शाखों की थी कि जिनके पत्ते साफ़ कर दिये गये थे और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जब मस्जिदे नबवी की ताअ़मीर का हुक्म दिया तो फ़रमाया कि लोगों को बारिश से महफ़ूज़ रखने का बन्दो बस्त करो लेकिन उसे सुर्ख़ या ज़र्द करने से इजतिनाब करो ऐसा न हो कि रंगों के इस्तेअ़माल से लोग फ़ित्ने में मुब्तिला हो जायें हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि आइन्दा लोग मसिजदें बनाने में बतौर फ़ख़्र और मुबाहात मुक़ाबला बाज़ी करेंगे मगर उन्हें इ़बादत से आबाद बहुत कम लोग करेंगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया कि लोग मस्जिदों को नक़्श व निगार से ज़रुर आरास्ता करेंगें जैसे यहूद व नसारा ने अपनी इ़बादत गाहों को आबाद किया था। (बुख़ारी–सहीह–1/335)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान फ़रमाते हैं कि हमें रोशन दानों और ताक़ों के बग़ैर मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया गया है।
(इब्ने अबी शैबा–1/574–ह०-3170)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी

है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मस्जिदें बनाओ और उन्हें रोशन दानों और ताक़ों से पाक रखो।
(इब्ने अबी शैबा–1/575–ह०-3171)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं ताक़ों वाली मस्जिदें बनाने से हमें मनाअ़ किया गया है।
(इब्ने अबी शैबा–1/575–ह०-3172)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि जब तुम मसाहिफ़ याअ़नी कुरान मजीद पर ज़ेवरात लगाओ और अपनी मस्जिदों को आरास्ता करो तो फिर तुम पर बर्बादी नाज़िल होगी।
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–2/423–ह०-5132)
(इब्ने अबी शैबा–1/574–ह०-3166)

–: मस्जिदों में कोई मोमिन न होगा :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बाजमाअ़त नमाज़ भी पढ़ेंगे लेकिन उनमें से एक भी मोमिन न होगा। (इमाम हाकिम (रहमतुल्लाहि–तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि ये हदीस अपनी सनद के ऐतबार से सहीह है)
(इमाम हाकिम–अल मुस्तदरक–4/489-ह०–8365)
(इमाम दैलमी–अल फ़िरदौस–3/254–ह०–8680)
(इब्ने अबी शैबा–6/163-ह०–30355,7/505-37586)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) एक तवील हदीस में रिवायत करते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के आसार में से ये भी है कि मस्जिदें सजाई जायेंगी और दिल वीरान होंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/221-ह०–10,556)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/127-ह०–4861)

तकब्बुर हर इन्सान के लिये बुरा और नुक़सान देह है

➡ हज़रत सलमा बिन अकवाअ़ ने कहा कि उन्हें उनके वालिद ने हदीस सुनाई कि एक शख़्स ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास बांयें हाथ से खाया तो आपने फ़रमाया अपने दायें हाथ से खाओ उसने कहा मैं ताक़त नहीं रखता पस आप ने फ़रमाया कि तू इसकी ताक़त न रखे उस शख़्स को तकब्बुर के सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका था रावी बयान करते हैं कि फिर वो शख़्स अपने दांयें हाथ को कभी मुँह तक न उठा सका। (मुस्लिम–सहीह–4/143–ह०-5268)
(मिश्कात–3/454–ह०-5904)

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क़्ल मंद वो है जो अपने नफ़्स को इ़बादत में लगाये और वो मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे और बेवकूफ़ वो शख़्स है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर‘वी करे और अल्लाह तआ़ला की रहमत पर तकब्बुर करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/273-ह०–2459)

–: खुद पसन्दी की मज़म्म्त :–

तकब्बुर और खुद पसन्दी में फ़र्क़ ये है कि अपने आप को अच्छा समझना खुद पसन्दी कहलाता है और अपने आप को अच्छा समझने के साथ साथ दूसरों को अपने से कमतर व हक़ीर समझना तकब्बुर कहलाता है और ये दोनों मज़मूम सिफ़त हैं और दोंनों हराम हैं

खुद पसन्दी की हक़ीक़त ये है कि बन्दा इस बात का इज़हार करे कि उसे नेअ़मतों का मिलना व उसे नेक अ़मल की तौफ़ीक़ का मिलना ये सब अल्लाह तआ़ला के अ़लावा किसी और चीज़ मसलन नफ़्स या मख़्लूक़ या उसकी अ़कल व तदाबीर से हासिल हुई है और वो शख़्स खुद को दूसरों से बेहतर ख़्याल करे तो ये खुद पसन्दी की अ़लामत है खुद पसन्दी एक बातिनी शदीद बीमारी है जो बन्दे की हलाकत का सबब बनती है।

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया खुद पसन्दी अगर किसी मर्द की सूरत में होती तो वो मर्द इंतिहाई बद सूरत होता।
(मुस्नद–अल फ़िरदौस–2/199–ह०-5026)
(कंज़ुल ऊ़म्माल–2/242–ह०-7669)

सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) जुहद व तक़्वे के बावुजूद ये तमन्ना किया करते थे कि काश वो मिट्टी या भूसा या परिन्दे होते ताकि उन पर कोई हिसाब व किताब न होता और तक़्वे के बावुजूद उनके

दिलों में अल्लाह तआ़ाला का इंतिहाई ख़ौफ़ रहता था कि कहीं किसी अम्र में अल्लाह तआ़ाला उनकी गिरफ़्त न करले और उन पर अपना सख़्त अ़ज़ाब मुसल्लत करदे और उनके दिल अल्लाह तआ़ाला व आख़िरत के सख़्त तरीन अ़ज़ाब से लरज़ते थे मगर आज अक्सर मुसलमानों का हाल इसके बरअ़क्स है बेशुमार गुनाहों के मुरतकिब होने के बावुजूद खुद को दूसरों से बेहतर तसव्वुर करते और अल्लाह तआ़ाला के ग़ज़ब और उस के अ़ज़ाब और अपनी आख़िरत के अन्जाम से ऐसे बे फ़िक्र और बेपर‘वाह हैं कि जैसे वो आख़िरत के तमाम मरहले उ़बूर करके जन्नत में दाख़िल हो चुके हों।

किसी अ़मल या नेअ़मत पर या दुनियावी मालो मताअ़ और जाह व मन्सब के सबब जब किसी के दिल में तकब्बुर या खुद पसन्दी दाख़िल हो तो उसे चाहिये कि वो ग़ौर करे कि उसके पास मौजूद हर नेअ़मत अ़ताई व अल्लाह तआ़ाला की इनायत है और वो न ही कुछ लेकर पैदा हुआ था और न कुछ लेकर जायेगा और दुनियावी हर चीज़ को ज़वाल और फ़ना होना है और जब वो इस पर ग़ौर करेगा तो उसके दिल से तकब्बुर व खुद पसन्दी निकल जायेगी और फिर उसके बातिन में तवाज़ोअ़ दाख़िल होने का इमकान है।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जब इन्सान अपनी जिस्मानी खूब सूरती की वजह से खुदपसन्दी में मुब्तिला हो तो उसे चाहिये कि वो अपनी बातिनी नजासत व ग़लाज़त पर भी ग़ौर करे वो अपने आगाज़ व अन्जाम के बारे में भी सोचे और जब इन्सान अपनी ताक़त व कुव्वत पर नाज़ करे और इतराये तो वो ग़ौर करे कि ताक़त व कुव्वत को

हर हाल में ज़वाल आना है और वो ज़ाइल हो जायेगी और एक दिन वो फ़ना हो जायेगी फिर वो मिट्टी में मिल जायेगा और इन्सान जब अपनी अ़क़्ल व ज़िहानत की वजह से खुद पसन्दी का शिकार हो जाये तो सोचे कि किसी बीमारी या हादसे के सबब ये नेअ़मत उससे जा सकती और इन्सान जब अपने माल पर इतराये तो सोचे कि जो माल आज उसका है वो कल किसी और का होगा और किसी हादसे, मुसीबत या किसी बीमारी की वजह से उसका माल ज़ाए और ज़ाइल हो सकता है और फिर वो खाली हाथ मलता ही रह जायेगा और अल्लाह तआ़ला जब किसी को चाहे मालदार बनादे व जब चाहे उसे मोहताज व मिस्कीन बनादे इसलिये उस माल पर क़तई भरोसा न करे क्योंकि माल का आना जाना तो लगा रहता है।

खुद को नेक सालेह कहने की मुमानियत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो तुम्हें खूब जानता है जब उसने तुम्हारी ज़िन्दगी की इब्तिदा और नश्व व नमा ज़मीन (याअ़नी मिट्टी) से की थी और जबकि तुम अपनी माँओं के पेट में हमल की सूरत में थे पस तुम अपने आपको बड़ा पाक व साफ़ मत बताया करो (क्योंकि) वो खूब जानता है कि परहेज़ गार कौन है। (सूरह–नज्म–53/32)

अक्सर लोग अपनी किसी अच्छी सिफ़त या अपने नेक आअ़माल का तज़किरा लोगों के सामने करते हैं ताकि लोग उन्हें नेक सालेह मोमिन तसव्वुर करें और उनकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करें और वो खुद भी अपने नेक आअ़माल के सबब खुद को दूसरों से बहुत अच्छा

और बेहतर और मुत्तक़ी व परहेज़गार समझते हैं और इस तरह वो रियाकारी और खुद पसन्दी के गुनाह के मुरतकिब हो जाते हैं और सख़्त अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो जाते हैं अक्सर ये देखा जाता है कि लोग अपनी नमाज़ों, रोज़ों, और हज व ज़कात सद्क़ात वग़ैराह का फ़ख़्र के साथ तज़किरा करते हैं और खुद ही अपनी ताअ़रीफ़ करते हैं जबकि उनसे सरज़द होने वाले नेक आअ़माल की हक़ीक़त और उनकी कुबूलियत के बारे में वो खुद नहीं जानते और उन आअ़माल को अपने नफ़्स की तरफ़ मन्सूब करते हैं जबकि अस्ल हक़ीक़त ये है कि हर नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से होती है हालांकि अल्लाह तआ़ला कायनात की हर शैः की हक़ीक़त और उसके ज़ाहिर व बातिन को खूब अच्छी तरह जानने वाला आ़लिमुल ग़ैब है वो जानता है कि किसके अ़मल मक़बूल हुये और किसके मरदूद, बातिल और अकारत हो गये और रब तआ़ला हर इन्सान के ज़ाहिर व बातिन को उससे बेहतर और उससे बहुत ज़्यादा जानने वाला है और वो जानता है कि कौन बेहतर है और कौन बदतर है, कौन मुत्तक़ी है और कौन सरकश है, कौन नेकोकार है और कौन बदकार है वो ज़मीनो आसमानों की हर चीज़ को खूब जानने वाला मालिके कायनात है हर शैः का वो इहाता किये हुये है और हर शैः उसके क़ब्ज़े कुदरत में है।

अपनी किसी अच्छी सिफ़त व ख़सलत या अपने किसी अ़मल या किसी नेअ़मत पर खुद पसन्द हो जाना बहुत बड़ी हिमाकत है और किसी इन्सान का अपने किसी नेक अ़मल पर अपनी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करना या ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ का तालिब रहना रियाकारी व खुद पसन्दी की अ़लामत है जो कि मज़मूम और गुनाह है।

➡एक शख़्स ने अपनी बेटी का नाम बर्राह रखा (नेकी करने वाली, नेक सालिहा) तो हज़रत ज़ैनब बिन्ते अबू सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने उससे कहा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये नाम रखने से मनाअ़ फ़रमाया है और बताया कि मेरा नाम भी पहले बर्राह रखा गया था तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम लोग अपनी पारसाई और नेक सालेह होना बयान न किया करो कि नेक सालेह कहलवाओ अल्लाह तआ़ला खूब जानता है कि तुममें से नेक सालेह कौन है फिर (घर वालों ने) कहा कि फिर हम इसका नाम क्या रखें तो आपने फ़रमाया इसका नाम ज़ैनब रख दो।
(मुस्लिम–सहीह–4/279–ह०-5609)
(अबू दाऊद–सुनन–4/726–ह०-4953)

अल्लाह तआ़ला तमाम इन्सानो की पैदाइश से पहले और उनकी मौत के बाअ़द व उनके जन्नत व दोज़ख़ में जाने तक के तमाम अहवाल से खूब वाक़िफ़ है और वो हर नफ़्स को जानता है कि उसने पहले क्या अ़मल किये और अब क्या अ़मल कर रहा है और आइन्दा कैसे अ़मल करेगा याअ़नी अल्लाह तआ़ला हर इन्सान के माज़ी हाल और मुस्तक़बिल के तमाम हालात को खूब जानने वाला है इसलिये अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी ये नहीं कह सकता कि वो नेक सालेह है या नहीं इसलिये बन्दे को चाहिये कि वो अपनी नेकियों पर न इतराये और न तकब्बुर करे और न खुद पसन्दी में मुब्तिला हो और न ही वो रिया और फ़ख़्र से ये कहे कि मैं फुलां से ज्यादा मुख़लिस और मुत्तक़ी हूँ क्योंकि हर इन्सान के अच्छे या बुरे अन्जाम को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही जानता है कि किसका अन्जाम कैसा होगा।

इ़ल्म, अ़मल, मालो दौलत, सेहत हुस्नो जमाल ज़िहानत और जाह व मन्सब वग़ैराह इन सब चीज़ों को अपनी तरफ़ निस्बत करना और अपना कमाल समझना और ये भूल जाना कि ये सब कुछ रब तआ़ला की इनायत है और उस पर फ़ख़्र व तकब्बुर करना या खुद पसन्द हो जाना उसके लिये आफ़त और वबाले जान है खुद को दूसरों से अफ़ज़ल समझना और खुद ये कहना कि कि मैं नेक सालेह हूँ तो ये खुद पसन्दी की अ़लामत है और किसी को ये हक़ ही नहीं कि वो खुद ही अपनी और अपने अ़मल की ताअ़रीफ़ करे।

किसी भी मुआ़मलात में खुद को दूसरों से बेहतर ख़्याल करना और खुद पर फ़ख़्र व नाज़ करना और दूसरों से अपनी ताअ़रीफ़ सुनने को पसन्द करना खुद पसन्दी है जो ममनूअ़ व मज़मूम और अल्लाह तआ़ला की नराज़गी का बाइस है खुद पसन्दी के सबब इन्सान से सरज़द हाने वाले गुनाहों को खुद पसन्द शख़्स भूल जाता है फिर वो उन गुनाहों के लिये तौबा इस्तिग़फ़ार नहीं करता और अपने गुनाहों के बोझ का बढ़ाता ही चला जाता है जो उसकी हलाकत का सबब बनते हैं।

अक्सर लोग अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मत मसलन ताक़त व कुव्वत, इ़ल्म व अ़क़्ल और माल व दौलत, इताअ़त व इ़बादत और जाह व मन्सब वग़ैराह पर इतराते और तकब्बुर व खुद पसन्दी का शिकार हो जाते और वो ये ख़्याल करते हैं कि जो मेरे पास है वो औरों के पास नहीं है मेरी खूबसूरती दूसरों के मुक़ाबले में बेहतर है मेरा लिबास दूसरों से अच्छा है और मेरा मकान दूसरों के मकानात से ज़्यादा अच्छा है और मेरी मालदारी दूसरों से बहुत ज़्यादा है मेरी अ़क़्ल दूसरों से

ज़्यादा तेज़ है मेरे इ़ल्म का कोई मुक़ाबला नहीं है और जो नेअ़मतें मेरे पास हैं वो दूसरों से बहुत ज़्यादा हैं और मैं दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा नमाज़ी व रोज़ेदार हूँ और मैंने कई बार हज व उ़मराह किया है और मैंने कसरत से नेक अ़मल किये हैं इन बातों में वो दूसरों से खुद को बेहतर समझता है और वो खूब इतराता व फ़ख़्र करता है जबकि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल और तौफ़ीक़ के बग़ैर कोई शख़्स एक छोटी से छोटी नेकी करने पर भी क़ासिर है जबकि उस पर वाजिब था कि वो अपने आअ़माल और अपनी नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व उसकी रहमत तसव्वुर करता और कसरत से उसका हम्द के साथ शुक्र अदा करता मगर वो तकब्बुर और खुद पसन्दी के सबब ना शुक्रा और ना फ़रमान बन जाता है और वो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसके अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है।

पस हमें चाहिये कि तकब्बुर व खुद पसन्दी से खुद को महफ़ूज़ रखने के लिये हर मुम्किन कोशिश करते रहें और अपने तमाम नेअ़मतों और इ़बादात और नेक आअ़माल को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ही मन्सूब करें और अल्लाह तआ़ला की अ़ता व उसका फ़ज़्लो करम तसव्वुर करें और उसकी माअ़रिफ़त हासिल करें तभी तकब्बुर और खुद पसन्दी से इन्सान के महफ़ूज़ रहने का इमकान है और जब किसी नेअ़मत या अ़मल का ज़िक्र करें तो ये कहें कि ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से है इसमें मेरा ज़ाती कोई भी कमाल नहीं है और तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये ही हैं मैं तो गुनाहगार, ख़ाकसार बन्दा हूँ और अपनी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ से बचने की हर मुम्किन कोशिश करें और दूसरों के मुक़ाबले में अपने आप को कमतर

और हक़ीर तसव्वुर करें तो इस तरह हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर व खुद पसन्दी दूर हो जायेगी और इससे बचने में हम कामयाब हो जायेंगे।

उ़ज्ब (खुद पसन्दी) अल्लाह तआ़ला को ना पसन्द है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक अल्लाह तआ़ला ने बहुत से मक़ामात पर तुम्हारी मदद फ़रमाई है और (खुसूसन) हुनैन के दिन भी जब तुम (अपनी अफ़रादी ताअ़दाद की) कसरत पर इतरा गये थे और खुद पसन्द हो गये थे फिर वो (कसरत) तुम्हें कुछ भी फ़ायदा न दे सकी और ज़मीन वसीअ़ (कुशादा) होने के बावुजूद भी तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ दिखाकर भाग खड़े हुये फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर व ईमान वालों पर अपनी तस्कीन (रहमत) नाज़िल फ़रमाई और उसने (फ़रिश्तों के ऐसे) लश्कर उतारे जिन्हें तुम देख न सके और उसने उन लोगों को अ़ज़ाब दिया जो कुफ़्र कर रहे थे और यही काफ़िरों की सज़ा है। (सूरह-तौबा-9/25, 26)

फ़तह मक्का के बाअ़द जंगे हुनैन हुई "हुनैन" मक्का और तॉयफ़ के दरमियान एक जगह का नाम है फ़तह मक्का के बाअ़द आ़म तौर पर तमाम अ़रब के लोग इस्लाम ले आये थे क्योंकि उनमें से अक्सर लोग वो थे जो इस्लाम की हक़्क़ानियत का पूरा पूरा यक़ीन रखते थे मगर कुरैश के डर से वो इस्लाम में दाख़िल होने में देरी कर रहे थे और क़रीब दस हज़ार मुहाजिरीन और अन्सार वग़ैराह का लश्कर जो मदीना मुनव्वरा से आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ आया था

और दो हज़ार के क़रीब नौ मुस्लिम वो थे जो फ़तह मक्का में मुसलामान हुये थे तो इस तरह मुसलमानों की ताअ़दाद कसीर हो गई थी और हुनैन के कुफ़्फ़ारों की ताअ़दाद क़लील थी तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मुसलमानों की इतनी कसीर ताअ़दाद को साथ लेकर हुनैन के कुफ़्फ़ारों से जंग करने के लिये निकले मुसलमानों की इतनी कसीर ताअ़दाद को देखकर बाअ़ज़ सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने कहा कि आज भला हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है और हम कुफ़्फ़ारों पर ज़रुर ग़ालिब आ जायेंगे क्योंकि आज हमारी ताअ़दाद बहुत ही ज़्यादा है मगर उनका अपनी कसीर ताअ़दाद पर इतराना व नाज़ करना और खुद पसन्द हो जाना अल्लाह तआ़ला को पसन्द नहीं आया चुनांचा फ़ख़्रो नाज़ और खुद पसन्दी का अन्जाम ये हुआ कि जब जंग शुरु हुई तो मसलहते इलाही कि कुफ़्फ़ार मुसलमानों पर ग़ालिब आ गये और कुफ़्फ़ारों ने ऐसा हमला किया कि मुसलमानों के पाँव उखड़ गये और मैदाने जंग से पीठ फेर कर भागने लगे और फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हुक्म से दोबारा जंग शुरु हुई और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की मदद फ़रमाई तब मुसलमानों ने फ़तह हासिल की और कामयाब हुये।
(बुख़ारी–सहीह–3/282–ह०-2930)
(मुस्लिम–सहीह–3/618–ह०-4617)

उन कुफ़्फ़ारों में से बाअ़ज़ ने इस्लाम कुबूल कर लिया और मुसलमान हो गये तो इससे माअ़लूम हुआ बग़ैर अल्लाह तआ़ला की अ़ता और मदद के कोई कुछ नहीं कर सकता और ये भी माअ़लूम हुआ कि खुद पसन्दी करने वालों से अल्लाह तआ़ला सख़्त नाराज़ हो जाता

है और अपनी मदद व नुसरत और रहमत उठा लेता है इसलिये जब हम किसी काम का इरादा करें तो ये न कहें कि हम फुलां काम ज़रुर करेंगे या ये कि फुलां पर हम ज़रुर ग़ालिब आ जायेंगे बल्कि यूँ कहें कि इंशा अल्लाह अगर मेरा रब चाहेगा तो हम फुलां काम ज़रुर करेंगे या फुलां पर हम ज़रुर ग़ालिब आ जायेंगे और हमें ये भी माअ़लूम हुआ कि हर मुसलमान का हक़ीक़ी भरोसा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला की मदद व उसके फ़ज़्लो करम पर होना चाहिये और ये भी माअ़लूम हुआ कि खुद पसन्दी अल्लाह तआ़ाला को ना पसन्द है ग़ज़वा-ए हुनैन के वाक्आ़त को अल्लाह तआ़ाला ने कुरान मजीद की सूरह तौबा में बयान फ़रमाया।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और किसी चीज़ की निस्बत ये हरगिज़ न कहा करें कि मैं उस काम को कल करुँगा मगर ये कि अगर अल्लाह चाहे (याअ़नी इंशा अल्लाह कहा करें) और अपने रब का ज़िक्र किया करें (सूरह-कह्फ़-18/23, 24)

बाअ़ज़ लोग ऐसे भी हैं जो थोड़े वक़्त से नमाज़ का एहतिमाम करने लगे तो वो बे नमाज़ियों को हक़ारत की नज़र से देखना शुरु कर देते हैं और वो खुद को दूसरों से बेहतर व नेक सालेह तसव्वुर करते हैं फिर वो लोगों में नमाज़ की तर्ग़ीब व तल्क़ीन और उनकी इस्लाह करने के बजाए अपनी नमाज़ों की चर्चा और बे-नमाज़ियों की बुराइयाँ करना शुरु कर देते हैं बाअ़ज़ लोग दीनी उ़लूम को दूसरों तक पहुँचाने के बजाए उन्हें शर्मसार करते हैं और खुद तकब्बुर व खुद पसन्दी में मुब्तिला रहते हैं हालांकि हर मुसलमान की बख़्शिश व निजात के लिये अल्लाह की रहमत काफ़ी और ज़रुरी है

खुद पसन्दी आअ़माल को बातिल और बर्बाद कर देती है

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला के बन्दों में से कोई बन्दा आसमान और ज़मीन वालों के अ़मल के बराबर नेक अ़मल करे और तक़्वा लेकर अल्लाह तआ़ाला की बारगाह में हाज़िर हो और उसमें ये तीन बुराइयाँ हों 1- खुद पसन्दी 2- मुसलमानों को ईज़ा देना 3-अल्लाह तआ़ाला की रहमत से मायूस होना तो उसके सब आअमाल का वज़न एक ज़र्रे के बराबर भी न होगा। (मुस्नद–अल फ़िरदौस–02/207–ह०-5102)

➡ हज़रत हसन बिन हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिमस्सलाम से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुद पसन्दी सत्तर (70) साल के आअ़माल को बर्बाद कर देती है। (कंजुल उ़म्माल–2/242–ह०-7669)

जिसने किसी नेक काम की वजह से अपनी ताअ़रीफ़ की तो उसने शुक्र खो दिया और उसका अ़मल बातिल हो गया। (कंजुल उ़म्माल–2/242–ह०-7677)

–: खुद पसन्दी बाइसे हलाकत है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें बाइसे

हलाकत हैं ऐसी ख़्वाहिश जिसकी इत्तेबाअ़ की जाये व ऐसा बुख़्ल कि जिसकी इताअ़त की जाये और इन्सान की खुद पसन्दी और ये उन सब से ज़्यादा हलाक कर ने वाली है। (मिश्कात–3/147–ह०-5122)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/400–ह०-7252)
(सिलसिला अहादीसे सहीहा–2/96–ह०-1355)

➡ हज़रत याह्या बिन मुआ़ज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि तुम खुद पसन्दी से बचो क्योंकि ये खुद पसन्दी करने वाले को हलाक कर देती है और खुद पसन्दी नेकियों को इस तरह खा जाती है कि जैसे आग लकड़ियों को खा जाती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/399–ह०-7248)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन चीज़ें हलाक करने वाली हैं 1- नफ़्स की इताअ़त 2- ख़्वाहिश की इत्तेबाअ़ 3- और तकब्बुर व खुद पसंदी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/451-ह०–745)

–: गुनाह खुद पसन्दी से बेहतर है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर मोमिन अपने अ़मल पर उ़ज्ब (खुद पसन्दी) न करता तो वो गुनाह से महफ़ूज़ रहता हत्ता कि उसे किसी चीज़ की पर'वाह न रहती और उसके लिये गुनाह उ़ज्ब (खुद पसन्दी) से बेहतर है। (कंजुल उ़म्माल–2/243–ह०-7673)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुमसे गुनाह सरज़द न होते तो मुझे तुम पर इससे ज़्यादा बड़ी चीज़ का ख़ौफ़ होता और वो खुद पसन्दी है पस तुम खुद पसन्दी से बचना तुम खुद पसन्दी से बचना आपने दो बार फ़रमाया। (कंज़ुल उ़म्माल–2/243–ह०-7671, 7676) (सिलसिला अहादीसे सहीहा–2/107–ह०-1382)

खुद पसन्दी मज़मूम और गुनाह है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि तौफ़ीक़ बेहतरीन क़ाइद (रहनुमा) है व हुस्ने अख़लाक़ बेहतरीन दोस्त और अ़क्ल बेहतरीन साथी और अदब बेहतरीन मीरास है और खुद पसन्दी से ज़्यादा शदीद कोई वहशत नहीं (याअ़नी खुद पसन्दी डरावनी, ख़ौफ़ नाक चीज़ है) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/136–ह०-4661)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि से पूछा गया वो कौन सा गुनाह है जो मुआ़फ़ नहीं किया जायेगा तो आपने फ़रमाया कि तकब्बुर व खुद पसन्दी। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/399–ह०-7248)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पुकार कर कुरान पढ़ने वाला ऐसा है जैसे आशकार सद्क़ा देने वाला और आहिस्ता कुरान पढ़ने वाला ऐसा है कि जैसे छुपाकर सद्क़ा देने वाला। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/562–ह०-2919)

अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के नज़दीक पोशीदा

अ़मल आशकारा अ़मल से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है इसलिये आहिस्ता कुरान पढ़ना अफ़ज़ल है पुकार कर कुरान पढ़ने से और पोशीदा सद्क़ा देना अफ़ज़ल है आशकारा सद्क़े से और अह्ले इ़ल्म फ़रमाते हैं इसकी एक वजह ये भी है कि पोशीदा सद़क़ा देने व आहिस्ता कुरान पढ़ने से बन्दा रियाकरी और (उ़ज्ब) खुद पसन्दी से महफ़ूज़ रहता है और उस पर रियाकरी और खुद पसन्दी का ख़ौफ़ नहीं रहता।

तवाज़ोअ़, आ़जिज़ी व इन्किसारी अल्लाह तआ़ला को पसन्द है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अपने रब का अपने दिल में ज़िक्र किया करो आ़जिज़ी और ख़ौफ़ के साथ और ज़ोर की आवाज़ की निस्बत कम आवाज़ के साथ पुकार कर भी सुबहो शाम (यादे इलाही जारी रखो) और ग़ाफ़िलों में से न हो जाना। (सूरह-आअ़राफ़-7/205)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

आपके रब ने हुक्म फ़रमां दिया है कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करो और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया करो अगर तुम्हारे सामने दोनों में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उन्हें उफ़ भी न कहना न ही उन्हें झिड़कना और उन दोनों के साथ बड़े अदब से बात किया करो और उन दोनों के लिये नरम दिली से इ़ज्ज़ व इन्किसारी के बाजू झुकाये रखो और (अल्लाह के हुज़ूर) अ़र्ज़ करते रहो ऐ मेरे रब इन दोनों पर रहम फ़रमां जैसा कि इन्होंने बचपन में मुझे (रहमत व शफ़क़त से) पाला था (और) तुम्हारा

रब उन बातों से खूब आगाह है जो तुम्हारे दिलों में है अगर तुम नेक सीरत हो जाओ तो बेशक वो (अल्लाह अपनी तरफ़) रुजूअ़ करने वालों को बड़ा बख़्शने वाला है। (सूरह–बनी इसराईल–17/23 ता 25)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या उन्होंने उन (सायादार) चीज़ों की तरफ़ नहीं देखा जो अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाई हैं कि उनके साये अल्लाह तआ़ला को सज्दा करते हुये दांयीं बायीं तरफ़ झुकते फिरते रहते हैं और वो ताअ़त व आ़जिज़ी का इज़हार करते हैं और जो कुछ आसमानों में है व जो कुछ ज़मीन में है जुमला जानदार और फ़रिश्ते (सब) अल्लाह तआ़ला को (ही) सज्दा करते हैं और वो (ज़रा भी) गुरुर व तकब्बुर नहीं करते। (सूरह–नह्ल–16/48)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो तुम्हारा माअ़बूद एक ही माअ़बूद है पस तुम उसी के फ़रमां बरदार बन जाओ और (ऐ हबीब) आ़जिज़ी करने वालों को खुश ख़बरी सुनादें। (सूरह–हज–22/34)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बेशक हमने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ लिया फिर भी उन्होंने अपने रब के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार नहीं की और न वो (उसके हुज़ूर) गिड़गिड़ाये।
(सूरह–मु‘मिनून–23/76)

तकब्बुर और खुद पसन्दी एक ख़तरनाक और निहायत मज़मूम शदीद बीमारी है और इसका इलाज तवाज़ोअ़, आ़जिज़ी व इन्किसारी है जो शख़्स तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी इ़ज़्ज़त में मज़ीद–

इज़ाफ़ा फ़रमाता है तवाज़ोअ़ के लिये सबसे पहले हमें चाहिये कि अपनी हक़ीक़त व अपने अन्जाम पर ग़ौरो फ़िक्र करें तो मुम्किन है कि हमारे बातिन में तवाज़ोअ़ की सिफ़त पैदा हो जायेगी जब हम किसी से मुलाक़ात करें ख़्वाह वो ग़रीब मिस्कीन ही क्यों न हो तो उसके सामने अ़ाजिज़ी का मुज़ाहरा करें और खुद को उससे कमतर गुमान करें और हमेशा अपने से कमतर लोगों को खुद पर फ़ज़ीलत दें और हमेशा लोगों को सलाम करने में पहल करने को अपना माअ़मूल बनालें और अपनी नेकियों को शुमार न करें बल्कि अपने गुनाहों को शुमार करें क्योंकि ना माअ़लूम मेरी नेकियाँ कुबूल हुईं या नहीं और अपनी नेअ़मतों को अपना कमाल न समझें बल्कि अल्लाह तअ़ाला का अ़तिया और उसका फ़ज़्ल व करम तसव्वुर करें और अल्लाह तअ़ाला का कसरत से शुक्र अदा करें ताकि तवाज़ोअ़ पैदा हो।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि तवाज़ोअ़ इन्सान की बुजुर्गी और फ़ज़ीलत को फैलाती और उसके तकब्बुर को घटाती है और बेशक जो लोगों के साथ तवाज़ोअ़ से पेश आता है तो उसकी इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा होता है और तवाज़ोअ़ तकब्बुर को पस्त करता है और जो तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह तअ़ाला उसका मर्तबा बुलन्द करता है तवाज़ोअ़ बुलन्दी की सीढ़ी और तकब्बुर हलाकत की बुनियाद है इसलिये हमेशा तकब्बुर का मुक़ाबला तवाज़ोअ़ से करो और जो शख़्स खुद को बड़ा समझता है तो वो अपने आपको हक़ीर कर लेता है और जो शख़्स अल्लाह तअ़ाला के सिवा किसी दूसरे के भरोसे मग़रुर हो जाता है तो वो ज़िल्लत उठाता है और जो शख़्स अपने नेक आअ़माल पर मग़रुर हो जाता है वो अपने आअ़माल को बातिल

कर लेता है और जो शख़्स तकब्बुर अपनाता है तो वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हक़ीर लिख दिया जाता है तकब्बुर इब्लीस का ज़ेवर है तकब्बुर और हसद शैतान के जाल और फंदे हैं और सबसे बुरा शख़्स वो है जो अपने आप को अच्छा ख़्याल करता है और माअ़लूम नहीं कि इब्ने आदम क्यों इतराता और फ़ख़्र करता है जबकि उसकी हक़ीक़त तो ये है कि वो पहले मनी का नुत्फ़ा था और आख़िर मुर्दार होगा और न वो खुद को रोज़ी दे सकता है और न ही वो अपनी मौत को टाल सकता है और किसी की ताअ़रीफ़ में मुबालग़ा करना उसे मग़रुर बना देता है और तवाज़ोअ़ व इन्किसारी हमेशा बुलन्दी और ख़ैरो बरकत का बाइस होती है।

तवाज़ोअ़ इन्सान को बुलन्द और तकब्बुर पस्त करता है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो इसलिये कि अल्लाह तआ़ला तवाज़ोअ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और तकब्बुर करने वाले को ना पसन्द फ़रमाता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे तो अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द करता है और जो तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे पस्त और बेइज़्ज़त करता है।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/70–ह०-5734, 5735)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/248–ह०-8144, 8146)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये एक दर्जे का तवाज़ोअ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसका एक दर्जा बुलन्द करता है यहाँ तक कि उसे आअ़ला इल्लीईन में शामिल कर देता है और जो कोई अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबले में एक दर्जे का तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे एक दर्जा नीचे कर देता है यहाँ तक कि उसे अस्फ़लिस साफ़िलीन (सबसे निचले दर्जे) में शामिल कर देता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/368–ह०-4176)
(मुस्नद अहमद–5/229–ह०-11747)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/605–ह०-1104)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–6/600–ह०-5678)
(कंज़ुल ड़म्माल–2/69–ह०-5721)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तवाज़ोअ़ इन्सान का मर्तबा बढ़ाती है लिहाज़ा तुम तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो अल्लाह तआ़ला तुम्हें बुलन्द कर देगा व मुआ़फ़ करना इन्सान की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा करता है लिहाज़ा मुआ़फ़ किया करो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इ़ज़्ज़त देगा व सद्क़ा माल की ज़्यादती का बाइस है लिहाज़ा तुम सद्क़ा किया करो अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम फ़रमायेगा।
(कंज़ुल ड़म्माल–2/69–ह०-5719)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द करेगा जो मेयाना र'वी इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे मालदार कर देगा और

जो अल्लाह तआ़ाला को याद करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे अपना महबूब बना लेगा।
(कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5736)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दा जब तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसे सातवें आसमान तक बुलन्द करता है।
(कंजुल उ़म्माल–2/69–ह०-5720)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/246–ह०-8137, 8138)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआ़ाला के लिये तवाज़ोअ़ करे तो अल्लाह तआ़ाला उसे बुलन्द करता है और जो तकब्बुर करता तो अल्लाह तआ़ाला उसे घटाता है और बड़ाई व किब्रयाई अल्लाह तआ़ाला की चादर है सो जो अल्लाह तआ़ाला से उलझेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे पस्त कर देगा।
(कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5742)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने मेरी ख़ातिर मेरे लिये नरमी की और मेरी ही ख़ातिर तवाज़ोअ़ की व मेरी ज़मीन में तकब्बुर न किया तो मैं उसके मक़ाम को इतना बुलन्द करूँगा यहाँ तक कि मैं उसे इल्लीईन तक पहुँचा दूँगा।
(कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5741)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द फ़रमायेगा अगरचा वो अपने नफ़्स और ज़ात में कमज़ोर ही क्यों न हो लेकिन वो लोगों की नज़रों में बड़ा होगा हालांकि वो खुद को अपनी नज़रों में छोटा ख़्याल करता हो जबकि वो लोगों की नज़रों में अ़ज़ीम होता है और जो तकब्बुर करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे घटायेगा और उसे पस्त करेगा और वो लोगों की नज़रों में हक़ीर होगा अगरचा वो अपनी ज़ात में बड़ा ही क्यों न हो हालांकि तकब्बुर करने वाला अपने आप को बड़ा तसव्वुर करता है यहाँ तक कि वो लोगों के नज़दीक कुत्ते व खिंजीर से भी ज़्यादा ज़लील व हक़ीर होता है। (मिश्कात–3/146–ह०-5119)
(कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5737, 5738)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/247–ह०-8139, 8140)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सदक़ा करने से माल में कमी नहीं होती और जो शख़्स मुआ़फ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी इ़ज़्ज़त बढ़ा देता है और जो शख़्स आ़जिज़ी व तवाज़ोअ़ करता तो अल्लाह तआ़ला उसको बुलन्द करता है।
(मुस्लिम–सहीह–5/60–ह०-6592)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1079–ह०-2029)
(मुस्नद अहमद–4/27–ह०-7205, 8996)
(मिश्कात–1/618–ह०-1889)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/246–ह०-8134)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने मुसलमान भाई के लिये आ़जिज़ी करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको बुलन्द करता है और जो तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको गिराता है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/735–ह०-7711)

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मिम्बर पर फ़रमाया ऐ लोगो अ़जिज़ी करो क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना जो अल्लाह तआ़ला से आ़जिज़ी करता है तो अल्लाह तआ़ला उसको पसन्द फ़रमाता है और जो तकब्बुर करता है तो अल्लाह उसे गिराता है और जो अपने आप को बड़ा समझता है वो लोगों की निगाह में बुरा होता है और अल्लाह तआ़ला उसको रुसवा करता है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–6/292–ह०-8307)

तवाज़ोअ़ करने वालों का रोज़े क़यामत मक़ामो मर्तबा

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो दुनिया में (तकब्बुर की बिना पर) अपना सर उठायेगा तो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसे गिरायेगा और जो शख़्स दुनिया में अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा तो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उस शख़्स की तरफ़ एक फ़रिश्ता भेजेगा जो उसे मजमाअ़ से उठायेगा और

कहेगा कि ऐ नेक बन्दे अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है कि तू उन बन्दों में से है कि जिन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मग़ीन होंगे।
(कंजुल उ़म्माल–2/71–ह०-5746)

➡हज़रत मुअ़ाज़ बिन अनस रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने अल्लाह तअ़ाला के लिये तवाज़ोअ़ करते हुये (शानदार) लिबास छोड़ दिया जबकि वो उस पर कुदरत रखता हो तो अल्लाह तअ़ाला रोज़े क़यामत उसे लोगों के रुबरु बुलायेगा और उसे ये इख़्तियार देगा कि वो ईमान के उ़म्दाह जोड़ों में से जो चाहेगा उसे पहनायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/293–ह०-2481)
(मुस्नद अहमद–6/469–ह०-15716, 15704)
(कंजुल उ़म्माल–2/70–ह०-5733)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अल्लाह तअ़ाला की ख़ातिर ज़ैब व ज़ीनत तर्क करदी व अच्छे कपड़े अल्लाह तअ़ाला के लिये तवाज़ोअ़ की वजह से और उसकी रिज़ा जोई के लिये छोड़ दिये तो उसको बतौर इनअ़ाम अल्लाह तअ़ाला उसे याकूत के सन्दूक में से जन्नत का रेशमी लिबास पहनायेगा और उसको इ़ज़्ज़त व करामत को जोड़ा पहनायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–4/633–ह०-4778)
(मिश्कात–2/662–ह०-4348)
(कंजुल उ़म्माल–2/72–ह०-5749)

-: तवाज़ोअ़ करने का ताकीदी हुक्म :-

➡ हज़रत इयाज़ बिन हिमार रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने खुत्बा दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला ने मुझ पर वही की और मुझे हुक्म दिया है कि तुम सब तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो हत्ता कि कोई शख़्स दूसरे पर फ़ख़्र न करे और न कोई शख़्स किसी दूसरे पर जुल्म व ज़्यादती करे।
(मुस्लिम-सहीह-5/365-ह०-7210)
(अबू दाऊद-सुनन-4/693-ह०-4895)
(इब्ने माजा-सुनन-3/368-ह०-4179, 4214)
(मिश्कात-3/86-ह०-4898)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-6/245-ह०-8133)
(कंज़ुल उ़म्माल-2/69-ह०-5722)

तमाम अहादीसे नबवी अल्लाह तअ़ाला की जानिब से वही का हिस्सा और इल्हामी अहकाम व उ़लूम हैं जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी उम्मत को पहुँचाये हैं चुनांचा अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ''और वो (रसूल) अपनी ख़्वाहिश से कलाम नहीं करते बल्कि उनका कलाम सब वही होता है'' (सूरह-नज्म-53/2, 3)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो इसलिये कि अल्लाह तअ़ाला तवाज़ोअ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और तकब्बुर करने वाले को ना पसन्द करता है। (कंज़ुल उ़म्माल-2/70-ह०-5734)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो और तुम मसाकीन के साथ बैठा करो तो तुम अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बड़े लोगों में हो जाओगे और तुम्हारे बातिन से तकब्बुर निकल जायेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–2/69–ह०-5725)

–: मेहमानों के साथ तवाज़ोअ़ :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मैं फ़ाक़े से हूँ तो आपने अपनी अज़वाजे मुताह्हरात से पूछा कि क्या घर में कुछ खाने को है तो उन्होंने जवाब में कहा कि पानी के सिवा घर में कुछ भी नहीं है तब एक अन्सारी सहाबी उठे और वो कहने लगे कि या रसूलल्लाह इस मेहमान को मैं अपने घर ले जाऊँगा और खाना खिलाऊँगा फिर वो अन्सारी सहाबी उस मेहमान को अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा क्या तेरे पास खाने को कुछ है वो कहने लगीं कि सिवा मेरे और मेरे बच्चों के खाने के अ़लावा कुछ भी नहीं है तो अन्सारी सहाबी ने कहा कि इन बच्चों को किसी चीज़ से बहलाकर सुलादो और जब मेहमान अन्दर दाख़िल हो तो चराग़ बुझा देना और उस पर ये ज़ाहिर करना कि हम भी खाना खा रहे हैं फिर मेहमान के साथ घर वाले भी बैठ गये और खाना सिर्फ़ मेहमान ने ही खाया फिर जब सुबह हुई और वो दोंनों मियाँ व बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो आपने फ़रमाया

कि तुमने आज रात अपने मेहमान के साथ जो सुलूक किया है उस पर अल्लाह तआ़ाला इस पर बहुत खुश हुआ फिर ये आयत उतरी 'और अपनी जानों पर उन्हें तरजीह देते हैं अगरचा उन्हें शदीद हाजत ही हो'।
(सूरह–हश्र–59/9)
(मुस्लिम–सहीह–4/179–ह०-5359,5360)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/347–ह०-761)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान हो तो उसे चाहिये अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे व खूब ख़िदमत करे और मेहमानी तीन दिन तक है फिर उसके बाअ़द सद्क़ा है और मेहमान के लिये हलाल नहीं कि अपने मेज़बान के पास डेरा डाल ले कि उसके लिये मशक़्क़त और बोझ बन जाये।
(अबू दाऊद–सुनन–4/912–ह०-3748)
(बुख़ारी–सहीह–5/592–ह०-6019, 6135)
(बुख़ारी–सहीह–6/71–ह०-6476)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/799–ह०-7296)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/349–ह०-764)

मुसलमान का झूटा पीने की फ़ज़ीलत

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तवाज़ोअ़ का एक तरीक़ा ये है कि आदमी अपने मुसलमान भाई का झूटा पानी पिये और जिसने अपने भाई का झूटा पिया तो उसके सत्तर दरजात बुलन्द होंगे और उसकी सत्तर बुराइयाँ मिटा दी

जायेंगी व उसके लिये सत्तर नेकियाँ लिख दी जायेंगी। (कंज़ुल उ़म्माल–2/72–ह०-5748)

जो लोग अपनी नेकियों को अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी तौफ़ीक़ तसव्वुर नहीं करते और अपने अन्दर तवाज़ोअ़ पैदा नहीं करते बल्कि तकब्बुर करते हैं तो ऐसे लोगों को उनकी नेकियों से कुछ भी नफ़ाअ़ हासिल न होगा और न ही कोई अज्र मिलेगा और जो लोग अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर खुद का कमाल समझते और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करते बल्कि तकब्बुर करते हैं तो क़यामत के दिन उनकी नेअ़मतें उनके लिये आफ़त और बाइसे हलाकत होंगी और ग़रीब से अमीर का तवाज़ोअ़ ज़्यादा अच्छा है जब वो माल वग़ैराह पर तकब्बुर न करे बल्कि वो उन नेअ़मतों को अ़ताए इलाही तसव्वुर करे और उस पर वो शुक्र गुज़ार भी रहे और अपनी तमाम नेअ़मतों को अमानते इलाही तसव्वुर करे।

–: रसूलुल्लाह का तवाज़ोअ़ :–

हर मुसलमान को चाहिये कि वो किसी भी चीज़ पर फ़ख़्र व तकब्बुर न करे बल्कि अपने अन्दर सिफ़ते तवाज़ोअ़ व इन्किसारी पैदा करे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तवाज़ोअ़ का तरीक़ा अपने अ़मल में लाये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खुद ही जानवरों को चारा डालते और बकरी का दूध निकालते थे, अपनी नालैन को खुद सी लेते थे, कपड़ों में पैबन्द लगाते थे, ख़ादिम और मजबूर व मोहताज की मदद फ़रमाते और बाज़ार से सौदा लाते थे छोटा हो या बड़ा अमीर हो या ग़रीब

सबको सलाम करने में पहल फ़रमाते और ज़मीन पर बैठकर खाना तनावुल फ़रमाते थे और आप फ़रमाते थे कि मैं बन्दा हूँ और मैं उसी तरह खाता हूँ जिस तरह बन्दा खाता है तवाज़ोअ़ से दुनियावी ज़िन्दगी निहायत ही शींरी व खुश हाल बन जाती है और जो अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे तो उसकी आख़िरत भी बेहतर और खुश गवार हो जायेगी

क़ाज़ी अ़याज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) लोगों से उल्फ़त फ़रमाते थे और किसी से नफ़रत नहीं किया करते थे और आप हर क़ौम के बा अख़लाक़ फ़र्द की तकरीम करते थे और बद अख़लाक़ लोगों से एहतिराज़ (किनारा कशी, परहेज़, अ़लैहदगी) इख़्तियार किया करते थे और न ये कि उनसे मुँह फेर लें और उनसे बद अख़लाक़ी से पेश आयें बल्कि उन्हें अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाते थे और जो भी शख़्स आपसे अपनी हाजत का सुवाल करता तो आप उसको देकर भेजते थे और आप उससे नरमी से बात करते और आप हमेशा खुश रु, खुश खुल्क़, और नरम दिल रहते थे और कोई भी कभी भी आपसे मायूस न हुआ

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने सहाबा से खुश कलामी फ़रमाते और उनसे मिलकर बैठते व उनसे बातें करते थे और उनके बच्चों से प्यार करते व अपनी गोद मुबारक में बिठाते और आज़ाद मर्द, गुलाम, बांदी और ग़रीब लोगों की दाअ़वत कुबूल फ़रमाते और माअ़जूर का उज्र कुबूल फ़रमाते और जो कोई आपका हाथ मुबारक पकड़ लेता तो आप उससे उस वक़्त तक अपना हाथ नहीं छुड़ाते

जब तक वो खुद न छोड़ देता और कभी ये नहीं देखा गया कि आपने अपने हम नशीनों के आगे पैर करके बैठे हों और आप अपने सहाबा से पहले सलाम करते और खुद ही पहले उनसे मुसाफ़ाह करते थे और आप अपने सहाबा को अच्छे नामों से मुख़ातिब फ़रमाते थे और आप लोगों से तबस्सुम फ़रमाते थे।
(क़ाज़ी अ़याज़–अशशिफ़ा–114, 115)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) बयान करते हैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पुराने कपड़े पहन कर तवाज़ोअ़ इख़्तियार करके खुशूअ़ व खुजूअ़ और तदर्रुअ़ करते हुये बारिश तलब करने के लिये निकले और आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी जैसे ईद में पढ़ते हैं।
(इब्ने माजा–सुनन–1/433–ह०-1266)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/349–ह०-558)
(अबू दाऊद–सुनन–1/817–ह०-1165)
(नसाई–सुनन–3/362–ह०-1509)
(मिश्कात–1/496–ह०-1505)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–2/530–ह०-1405)

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने टेक लगाकर खाना वग़ैराह नहीं खाया और आप ये फ़रमाया करते थे कि मैं ऐसे खाऊँगा जैसे (अ़ाम) बन्दा खाता और मैं ऐसे बैठूँगा जैसे बन्दा बैठता है।
(मिश्कात–3/411–ह०-5836)

➡हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी

है कि मदीना मुनव्वरा की एक लौंडी हुज़ूर (सल्लल्लाहु (तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का हाथ पकड़ती फिर आप अपना हाथ उसके हाथ से नहीं निकालते हत्ता कि वो आपको जहाँ चाहती वहाँ ले जाती अपने काम के लिये। (बुख़ारी–सहीह–5/614–ह०-6072)
(इब्ने माजा–सुनन–3/368–ह०-4177)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–3/409–ह०-3969)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के सामने जब कोई शख़्स आता तो आप उससे मुसाफ़ाह करते व अपना हाथ उसके हाथ से नहीं निकालते हत्ता कि वही अपना हाथ निकालता और आप उसकी तरफ़ से अपना मुँह नहीं फेरते यहाँ तक कि वही अपना मुँह फेरता और आपको अपने हम नशीनों के सामने कभी पैर फैलाये हुये किसी ने नहीं देखा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/298–ह०-2490)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मरीज़ की मिज़ाज पुर्सी करते और जनाज़े में शिर्कत करते थे, गुलाम की दाअ़वत कुबूल करते थे, खच्चर की सवारी करते थे, पीछे बैठकर भी ख़ैबर वाले दिन खच्चर पर सवार थे, ज़मीन पर बैठते थे, ज़मीन पर बैठकर खाना खाते थे, बकरी को खुद बाँधते थे, एक आदमी शहर के किनारे से आता और आपको बुलाकर ले जाता और आप जौ की रोटी खाते थे, अपने फटे हुये कपड़े खुद सी लेते थे और अपने फटे हुये जूते खुद गाँठ लेते थे और घर के काम काज ऐसे करते थे जैसे तुम में से कोई आदमी अपने घर में

काम करता है और आप फ़रमाते थे कि जो शख़्स ये सारे काम करता रहता है तो उसमें तकब्बुर नाम की कोई चीज़ नहीं रहती।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/257–ह०-8190,91,92,93,94,95)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) न तबअ़न, न तकल्लुफ़न फुहश गुफ़्तार थे और न ही बाज़ार में ऊँची आवाज़ से बात किया करते थे और न बुराई का जवाब बुराई से देते थे बल्कि मुआ़फ़ और दर गुज़र फ़रमाते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1073-ह०–2016)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने कपड़े खुद साफ़ कर लेते थे और बकरी का दूध दूह लेते थे और अपने काम खुद किया करते थे। (तिर्मिज़ी–शमाइल–273-ह०–325)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–ह०–4873)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपनी जूती खुद ही मरम्मत कर लिया करते थे और अपने कपड़े सी लेते थे और घर के काम करते थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–ह०–2489)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा बयान करती है एक शख़्स ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो उस वक़्त मैं भी आपके साथ थी आपने

फ़रमाया ये अपने क़बीले का बुरा आदमी है फिर उसे अन्दर आने की इजाज़त दी फिर जब वो बैठ गया तो आपने उससे बहुत ही नरमी से बात की जब वो चला गया तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह जब आपने उसे देखा था तो आपने उसके बारे में ऐसा ऐसा फ़रमाया था लेकिन जब आप उससे मिले तो उससे निहायत ही नरमी और हुस्ने खुल्क़ के साथ पेश आये तो आपने फ़रमाया ऐ आयशा तुमने मुझे बदगो कब देखा है नीज़ फ़रमाया कि क़यामत के दिन सब लोगों में सबसे बद तरीन शख़्स वो होगा जिसके शर व बुराई और बद गुफ़्तारी की वजह से लोग उससे मेल मिलाप छोड़ दें।
(बुख़ारी–सहीह–5/597-6032)
(मुस्लिम–सहीह–1/2003-ह०–2591)
(अबू दाऊद–सुनन–4/639-ह०–4791)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1070-ह०–1996)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से बयान फ़रमाते हैं कि मैं रहमते दो आ़लम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ चल रहा था और आप पर मोटे किनारे वाली नजरानी चादर मुबारक थी कि रास्ते में आपको एक देहाती मिला कि उसने आपको आपकी चादर के साथ बहुत शिद्दत व सख़्ती के साथ खींचा जिससे आपकी गर्दन मुबारक पर चादर की किनारी का निशान पड़ गया और ये किनारी का निशान उस देहाती का सख़्ती से चादर को खींचने की वजह से पड़ा फिर उस देहाती ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के माल में से जो तुम्हारे पास है उसमें से मुझको कुछ देने के लिये हुक्म करो सो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उसकी तरफ़ देखा और

हंस पड़े फिर आपने उस देहाती को कुछ देने का हुक्म फ़रमाया। (मुस्लिम–सहीह–3/72-ह०–2429)
(बुख़ारी–सहीह–5/623-ह०–6088)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने कभी किसी खाने की बुराई नहीं की और न ही उस में ऐ़ब निकाला अगर आपको कोई चीज़ पसन्द होती तो आप उसको खा लेते वरना उसे छोड़ देते।
(बुख़ारी–सहीह–3/655-ह०–3563)
(मुस्लिम–सहीह–4/191-ह०–5383)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा न अपनी किसी ज़ोजा को न किसी ख़ादिम व गुलाम को और जब आप अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद कर रहे हों और जब आपको कोई नुकसान या तकलीफ़ पहुँचाई गई तो आपने कभी इन्तिक़ाम नहीं लिया। (मुस्लिम–सहीह–4/472-ह०–6050)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक मजजून (कोढ़ी) का हाथ को पकड़ा और अपने साथ खाने के प्याले में डाल दिया और फ़रमाया अल्लाह पर एतमाद और तवक्कुल करते हुये खाओ और हम भी तुम्हारे साथ खाते हैं।
(अबू दाऊद–सुनन–4/72-ह०–3925)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं

कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब बच्चों के पास से गुज़रते तो उन्हें सलाम करते थे। (मुस्लिम–सहीह–5/340-ह०–5663)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का तवाज़ोअ़ करना बावुजूद इसके कि आप जलीलुल क़द्र मन्सब और रफ़ीउ़ल मरतबत हैं पस सब लोगों में आप सबसे ज़्यादा मुतावाज़ेअ़ (तवाज़ोअ़ करने वाले) थे व तकब्बुर आपसे माअ़दूम (फ़ना किया गया, नापैद) था और अल्लाह तआ़ला ने आपको इख़्तियार दिया कि आप नबी बादशाह होना पसन्द करेंगे या नबी बन्दा तो आपने नबी बन्दा होना पसन्द फ़रमाया उस वक़्त आपसे हज़रत इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि आप की इसी तवाज़ोअ़ की बिना पर आपको अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन तमाम औलादे आदम की सरदारी मरहम्त फ़रमायेगा और आप ही वो पहले शख़्स होंगे जो शफ़ाअ़त करेंगे।
(क़ाज़ी अ़याज़–अशशिफ़ा–122)

–: तकब्बुर व खुद पसन्दी का इलाज :–

तकब्बुर व खुद पसन्दी का सबसे बेहतरीन उ़म्दाह और कारगर इलाज तवाज़ोअ़, आ़जिज़ी व इन्किसारी है और किसी शख़्स को ये हक़ नहीं कि वो किसी शख़्स को अपने से कमतर व हक़ीर और गुनाहगार तसव्वुर करे क्योंकि हो सकता है जिसको वो हक़ीर समझ रहा है वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बुलन्द मक़ाम वाला हो और जिसको वो गुनाहगार समझ रहा हो तो उससे कोई एक ऐसी नेकी सरज़द हो जाये कि उस नेकी के सबब अल्लाह तआ़ला उसकी बख़्शिश कर दे व उसके

तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमादे और उसे जन्नत का मुस्तहिक़ बना दे और अल्लाह तआ़ाला के सिवा ये तो कोई नहीं जानता कि किसका मक़ाम अल्लाह तआ़ाला के नज़दीक बड़ा और बुलन्द है या छोटा और पस्त है कौन इ़ज़्ज़त वाला है कौन ज़िल्लत वाला है और दुनिया में बहुत लोग ऐसे भी हुये हैं कि जो ज़ाहिरन गुनाहगार थे मगर उनकी कोई एक नेकी जो अल्लाह तआ़ाला को इतनी पसन्द आयी कि अल्लाह तआ़ाला ने उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाया और उन्हें अपने महबूब तरीन और मक़बूल बन्दों में शामिल किया इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में अपने आपको सबसे ज़्यादा कमतर, हक़ीर और गुनाहगार तसव्वुर करें तााकि हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर व खुद पसन्दी दूर हो जाये और गुनाहों से बच जायें और निजात पा जायें।

इसके अ़लावा तकब्बुर का इलाज ये है कि तकब्बुर की मज़म्मत और इसकी सख़्त वईदों और तकब्बुर के बाइस मिलने वाले सख़्त अ़ज़ाब को हमेशा अपने ज़हन में रखें और अपने बातिन में इसको तलाश करते रहें और तकब्बुर व खुद पसन्दी से बचने की हर मुम्किन कोशिश करते रहें और अपने आअ़माल और अफ़आ़ल व अक़वाल और हर हरकात व सकनात पर ग़ौर करते रहें कि कहीं उनमें तकब्बुर व खुद पसन्दी दाख़िल तो नहीं हो गई अगर ऐसा हो तो उसे दूर करें और अपने पर'वर दिगार से तौबा व इस्तिग़फ़ार करें और इससे महफ़ूज़ रहने के लिये कसरत के साथ दुआ़ करें ताकि अल्लाह तआ़ाला इस आफ़त और बला से महफ़ूज़ रखे और अपने वुजूद अपने आगाज़ व अपने अन्जाम पर कसरत से ग़ौर करते रहें और खुद को किसी शैः का मालिक तसव्वुर न करे और कसरत से अपनी मौत को

याद करते रहें और अपनी मौत को निहायत नज़दीक ख़याल करें और मौत की सख़्ती और क़ब्र का अ़ज़ाब और क़यामत की हौलनाकियाँ व हिसाबो किताब और दहशत नाक अहवाल और दोज़ख़ की दहकती हुई आग और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का ख़ौफ़ अपने बातिन से किसी वक़्त किसी हाल में भी निकलने न दें और अपनी आख़िरत के अन्जाम से खौफ़ ज़दा रहें व उस पर ग़ौरो फ़िक्र करते रहें और अल्लाह तआ़ला व उस के रसूल की इताअ़त से रुगरदानी न करें अल्लाह की याद व उसके ज़िक्र और उसकी इ़बादत में कसरत पैदा करें और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल से इंतिहाई मुहब्बत करें और दुनिया व मताये दुनिया से बेरग़बत हो जायें ताकि अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त व कुर्बत नसीब हो और गुनाहों से इजतिनाब करें।

हर मुसलमान को चाहिये कि वो अपनी किसी नेअ़मत या अ़मल पर मग़रुर या खुद पसन्द न हो बल्कि उस पर वाजिब है कि वो अपनी हर नेअ़मत व अपने नेक अ़मल पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र गुज़ार रहे और हर मुआ़मले में हमेशा सादगी पसन्द रहे जब कोई उसके किसी नेक अ़मल या उसकी किसी नेअ़मत पर उसकी ताअ़रीफ़ करे तो वो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला की हम्द के साथ अल्लाह का शुक्र अदा करे और बन्दा कोई नेक अ़मल करे तो उसके अ़मल में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी मक़सूद हो और हर वो काम तर्क करदें जो अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का बाइस हो और हर शख़्स इस बात पर भी ग़ौर करे कि वो एक पानी के क़तरे से बना फिर नापाक खून से माँ के पेट में पर'वरिश पायी और उस वक़्त वो गन्दगी से लबरेज़ था और उस वक़्त भी उसके नाक व कान, आँख, मुँह

और पेट वग़ैराह में गन्दगी भरी पड़ी है और बदबूदार गन्दगी अपने पेट में उठाये फिर रहा है और थोड़ी सी भी हवा (रीह) पखाने के रास्ते से निकलती है तो बदबू के सबब से आसपास बैठे लोगों को अपने मुँह पर हाथ रखने पर मजबूर कर देती है और खुद को शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है और जब दौराने उल्टी पेट से बाहर आने वाली हर शैः कितनी बदबूदार होती है और मरने के बाअ़द जिस्म गलना व सड़ना शुरु हो जाता है फिर क़ब्र में जिस्म के हर उज़्ब का हर हिस्सा कीड़े मकोड़ों की ग़िज़ा बनता है और उसकी तख़लीक़ जिस मिट्टी से हुई उसी मिट्टी में मिल जाता है यही हर इन्सान की हक़ीक़त है क्या इस हक़ीक़त के बाअ़द इन्सान के पास कोई ऐसी चीज़ है कि जिस पर वो मग़रुर व खुद पसन्द हो जाये अगर इन्सान के पास इन सब बातों पर ग़ौर करने के लिये वक़्त न हो तो वो कम अज़ कम बैतुल ख़ला में अपनी हालत पर ग़ौर कर लिया करे क्योंकि वहाँ तो उसे कोई काम नहीं होता पस ये तो अल्लाह तआ़ला का बन्दों पर अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम है कि उसने जिस्म की कसीर गन्दगी को पोशीदा रखा

तकब्बुर व खुद पसन्दी ऐसी छुपी हुई बातिनी और बुरी बीमारी है जो दिखाई नहीं देती जब तक कि उस पर ख़ास तवज्जो व ग़ौर न किया जाये और जब कोई शख़्स इसकी तलाश में लग जाता है तो फिर उसे किस क़ौल और किस अ़मल में तकब्बुर या खुद पसन्दी है दिखाई देने लगती है फिर अगर वो उसको दूर करने नीयत व कोशिश करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी मदद फ़रमाता और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से वो उसे दूर कर लेता है इन्सान को अपने उ़यूब और अपनी बुराइयाँ अपने अन्दर देखने व ग़ौर करने से ही

माअ़लूम होती हैं और जिनको इन्सान भूल गया वो भी तो उसके आअ़माल नामे में लिखी होती हैं कि जिनका आख़िरत में हिसाब और सवाब या अ़ज़ाब होगा ये तो अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्लो करम है कि उसने हमारी बुराइयों और गुनाह लोगों से छुपा रखे हैं वरना लोग हमसे इंतिहाई नफ़रत करते और हम ज़लील व शर्मसार होते लेकिन याद रखो कि जब क़यामत के दिन तमाम लोगों के सामने हमारे गुनाह खोले जायेंगे तो सोचो कि उस वक़्त हमारा क्या हाल होगा।

मज़कूरा बातों को ज़हन नशीन रखें ताकि तकब्बुर व खुद पसन्दी हमारे क़रीब भी न आये और हमेशा अपने से कमतर और ग़रीबों मुहताजों की सुहवत इख़्तियार करें और उनकी हाजत र‘वाई करें और अपने घर के और बाहर के वो सारे जाइज़ काम खुद करें कि जिनके करने में शर्म महसूस होती है और कोई छोटा हो या बड़ा अमीर हो या ग़रीब सबको सलाम करने में पहल करें और लोगों के साथ हुस्ने खुल्क़ और तवाज़ोअ़ से पेश आयें और जब तुम्हें कोई तुम्हारे ऐ़ब या बुराई पर मुत्तलाअ़ और आगाह करे तो उसका दिफ़ाअ़ न करें बल्कि उससे नसीहत पकड़ते हुये उन बुराइयों को दूर करने की हत्तल इमकान कोशिश व तदबीर करें क्योंकि इसमें हमारा ही फ़ायदा है ताकि हम अपनी इस्लाह कर सकें और जब कोई हमें अच्छा मश्वरा या नसीहत करे तो उसकी तरदीद न करें बल्कि उसे कुबूल करें और फिर उस पर ग़ौर व फ़िक्र करें और नफ़अ़ देने वाली बातों को तस्लीम करते हुये उस पर अ़मल करें और जब किसी की मय्यत की तजहीज़, तकफ़ीन व तदफ़ीन में शिर्कत करें तो वहाँ दुनियादारी की फ़िज़ूल बातों में अपने वक़्त को ज़ाए न करें बल्कि उस मय्यत पर ग़ौर

करते हुये से अपनी मौत और अपने अन्जाम को याद करें किसी भी मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व उसकी रहमत के बग़ैर हर शख़्स बेबस और आ़जिज़ है और उसकी कोई हैसियत व औक़ात नहीं जब बन्दा ये बात अपने ज़हन नशीन करले और हमेशा खुद को गुलाम और अल्लाह तआ़ला को अपना आक़ा व मौला तसव्वुर करे और अपनी ज़िन्दगी को गुलामों की तरह गुज़ारे आक़ा बनने की कोशिश न करे और हर वक़्त अपनी आख़िरत की फ़िक्र में मशगूल रहे और वो सब काम अच्छी नियत व इख़लास के साथ करे कि जिससे उसकी आक़िबत बेहतर हो जाये ख़्वाह वो दुनिया में किसी भी हाल में रहे और दूसरों के ए़बों का मुतलाशी न बने क्योंकि इससे उसे कुछ नफ़ाअ़ हासिल न होगा बल्कि खुद के ऐ़बों और बुराइयों पर ग़ौरो फ़िक्र करता रहे क्योंकि अगर वो खुद की फ़िक्र करेगा तो वो खुद की इस्लाह कर सकेगा ताकि उसकी दुनिया व आख़िरत दोंनों बेहतर हो जायें।

जो शख़्स इन मज़कूरा बातों को ज़हन नशीन कर लेगा तो इस बात का ज़्यादा इमकान है कि वो तकब्बुर व खुद पसन्दी और दीगर तमाम बुराइयों और गुनाहों से खुद को महफ़ूज़ रखने में कामयाब हो जायेगा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने हबीब के सद्क़े व तुफ़ैल हम सब मुसलमानों को तमाम बुराइयों और गुनाहों से महफ़ूज़ रहने और कसरत से नेक आअ़माल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमां। आमीन

★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ ह़क़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये- **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये-**आमीन**

नोट- जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223

डा० आज़म बेग क़ादरी
Mob-09897626182

ISBN 978-93-5914-275-3